RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 340
लखनऊ, शनिवार, 5 अक्टूबर, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

भाजपा की आर्थिक नीतियों पर किया प्रहार
राष्ट्रीय-10

मुठभेड़ में 30 नक्सली ढेर

पायनियर समाचार सेवा। नारायणपुर/दंतेवाड़ा

छत्तीसगढ़ में माओवादियों के खिलाफ सबसे बड़े अभियानों में से एक में, सुरक्षाकर्मियों ने शुक्रवार को बस्तर क्षेत्र में भीषण मुठभेड़ में 30 नक्सलियों को मार गिराया। पुलिस अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

बस्तर क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों ने बताया कि नारायणपुर-दंतेवाड़ा जिले की सीमा में अबूझमाड़ के थुलथुली गांव के जंगल में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने30 नक्सलियों को मार गिराया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि नारायणपुर और दंतेवाड़ा जिले की सीमा में स्थित अबूझमाड़ क्षेत्र में माओवादियों की उपस्थिति की सूचना मिलने पर बृहस्पतिवार को नारायणपुर और दंतेवाड़ा जिले से सुरक्षाबल के संयुक्त दल को गोवेल, नेंदूर और थुलथुली गांव की ओर रवाना किया गया था।सुरक्षाबल के दल में जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के जवान शामिल थे। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आज अपराह्न लगभग एक बजे नक्सलवादियों ने सुरक्षाबलों पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद सुरक्षाबल के जवानों ने भी जवाबी कार्रवाई की।

उन्होंने बताया कि सुरक्षाबलों ने घटनास्थल से एके 47 और एसएलआर समेत कई अन्य हथियार बरामद किए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ में सभी जवानों के सुरक्षित होने की जानकारी मिली है। क्षेत्र में नक्सलियों के खिलाफ अभियान जारी है। पुलिस महानिरीक्षक (बस्तर रेंज) सुंदरराज पी ने बताया कि नारायणपुर-दंतेवाड़ा अंतर-जिला सीमा पर अभुजमाड़ में थुलथुली और नींदुर गांवों के बीच जंगल में दोपहर करीब 1 बजे गोलीबारी हुई, जब सुरक्षाकर्मियों की एक संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली थी। उन्होंने कहा कि राज्य पुलिस के जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) के जवान ऑपरेशन में शामिल थे। उन्होंने कहा कि मुठभेड़ स्थल से एक एके-47 राइफल और एक एसएलआर (सेल्फ लोडिंग राइफल) सहित हथियारों का जखीरा भी बरामद किया गया है। पुलिस ने बताया कि इस साल अब तक दंतेवाड़ा और नारायणपुर समेत सात जिलों वाले बस्तर क्षेत्र में अलग-अलग मुठभेड़ों में सुरक्षा बलों ने 185 माओवादियों को मार गिराया है। 16 अप्रैल को कांकेर जिले में सुरक्षाकर्मियों के साथ मुठभेड़ में 29 नक्सली मारे गए थे, जिनमें कुछ उच्च पदस्थ कैडर भी शामिल थे।

राज्य में आखिरी बड़ी मुठभेड़ 3 सितंबर को हुई थी, जब दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों की सीमा पर छह महिलाओं समेत नौ माओवादी मारे गए थे। 16 अप्रैल को कांकेर जिले में सुरक्षाकर्मियों के साथ मुठभेड़ में कुछ उच्च पदस्थ कैडर समेत 29 नक्सली मारे गए थे। अगस्त में छत्तीसगढ़ के दौरे के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा था कि भारत मार्च 2026 तक वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) से मुक्त हो जाएगा और इस खतरे के खिलाफ अंतिम हमला करने के लिए एक मजबूत और निर्मम रणनीति की आवश्यकता है।

हरियाणा विस चुनावः दो करोड़ मतदाता आज डालेंगे वोट

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

हरियाणा में करीब एक माह तक चले चुनाव प्रचार के बाद अब शनिवार को प्रदेश के मतदाता अपना जनादेश देंगे। प्रदेश के दो करोड़, तीन लाख मतदाता चुनावी रण में उतरे 1031 प्रत्याशियों के भाग्य विधाता बनकर इनमें से 90 को विधानसभा के भीतर भेजने का काम करेंगे।शनिवार को प्रदेश के 90 विधानसभा हलकों में होने वाले मतदान की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। पोलिंग पार्टियां मतदान केंद्रों में पहुंच चुकी हैं। राज्य में सुबह सात बजे से मतदान प्रक्रिया शुरू होगी और शाम छह बजे तक जो लोग लाइनों में खड़े होंगे वह अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे।

हरियाणा विधानसभा की 90 सीटों पर 1031 प्रत्याशियों ने चुनावी ताल ठोकी है। इनमें 930 पुरुष व 101 महिलाएं शामिल हैं। हालांकि 462 प्रत्याशी निर्दलीय तौर पर चुनावी मैदान में हैं। वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में 67.74 फीसदी मतदान हुआ था। इस बार चुनाव आयोग ने पिछले चुनाव के मुकाबले 75 फीसदी मतदान का लक्ष्य रखा है। चुनाव आयोग की ओर से 20629 मतदान केंद्र बनाए गए हैं, जहां पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रहेगी। चुनावों के लिए रिजवर्ड (शेष पृष्ठ 9)

मिर्जापुर में सड़क हादसे में 10 मजदूरों की मौत

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ने शोक व्यक्त किया

पायनियर समाचार सेवा। मिर्जापुर

मिर्जापुर जिले में बृहस्पतिवार देर रात एक ट्रक और ट्रैक्टर-ट्रॉली की टक्कर में 10 मजदूरों की मौत हो गई और तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस सड़क दुर्घटना में लोगों की मौत को अत्यंत पीड़ादायक बताया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की देखरेख में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव मदद में जुटा है। उन्होंने हादसे के पीड़ितों के लिए अनुग्रह राशि की घोषणा भी की। इस बीच, भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने पीड़ित परिवारों से मिलकर उत्तर प्रदेशसरकार द्वारा घोषित सहायता राशि का चेक घायलों और मृतकों के परिजनों को सौंपा।

मिर्जापुर के पुलिस अधीक्षक अभिनंदन ने बताया कि दुर्घटना देर रात करीब एक बजे मिर्जापुर-वाराणसी सीमा पर कछवां और मिर्जामुराद के बीच जीटी रोड पर हुई। अभिनंदन ने बताया, ट्रैक्टर-ट्रॉली में 13 मजदूर थे जो भदोही जिले से निर्माण कार्य करके लौट रहे थे तभी उनके वाहन को एक ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी, जिससे चालक ने नियंत्रण खो दिया। सभी मजदूर भदोही जिले से ढलाई का काम करके वापस लौट रहे थे। अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) ओपी सिंह ने बताया कि दुर्घटना के बाद ट्रक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। एटा जिले से आ रहे ट्रक पर शीशे की शीट लदी हुई थी। ट्रक का चालक और सहायक फरार हो गए। सूचना प्राप्त होते ही मिर्जापुर के पुलिस अधीक्षक अभिनंदन और अन्य अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। एसपी ने बताया कि हादसे में ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार 13 लोगों में से 10 की मौत हो गई तथा तीन लोग घायल (शेष पृष्ठ 9)

मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख व गंभीर घायलों को 50-50 हजार की आर्थिक मदद

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिर्जापुर में हुए सड़क हादसे का संज्ञान लिया है। उन्होंने मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर जिला प्रशासन के अधिकारियों को उनके समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की है।मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन के अधिकारियों को मौके पर पहुंचकर राहत कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ ने ज़िला प्रशासन को मृतकों के परिजनों को दो -दो लाख और गंभीर रूप से घायल हुए लोगों को 50-50 हजार रुपए की सहायता राशि तत्काल प्रदान करने के निर्देश दिए।

महाराष्ट्र विस उपाध्यक्ष तीसरी मंजिल से कूदे जाल से बची जान

पायनियर समाचार सेवा। मुंबई

एक नाटकीय घटनाक्रम में धनगर समुदाय को अनुसूचित जनजाति सूची में शामिल करने की मांग के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे आदिवासी नेताओं, जिनमें विधानसभा उपाध्यक्ष नरहरि जिरवाल भी शामिल हैं, ने शुक्रवार को महाराष्ट्र राज्य सचिवालय मंत्रालय की तीसरी मंजिल से नीचे लगे सुरक्षा जाल पर छलांग लगा दी। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि मुख्यमंत्री से मिलने का समय न मिलने के कारण उन्होंने ऐसा किया। इस घटना में किसी के घायल होने की खबर नहीं है, लेकिन छह मंजिला मंत्रालय परिसर में तनाव (शेष पृष्ठ 9)

तृतीयं ;चंद्रघंटा

पिण्डज प्रवरारूढा
चण्डकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते मह्यम्
चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

नवरात्र में तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा की जाती है। मां युद्ध मुद्रा में सिंह पर विराजमान हैं. मां चंद्रघंटा के हाथों में त्रिशूल, धनुष, गदा और तलवार है। इनके माथे पर घंटे के आकार में अर्द्ध चंद्र विराजमान है, इसी वजह से ये चंद्रघंटा कहलाती हैं. मां राक्षसों का वध करने वाली हैं। इनकी अराधना से मनुष्यों के सभी पाप नष्ट होते हैं। इनके दस हाथों में अस्त्र-शस्त्र सजे हुए हैं. इनकी पूजा करने वाला व्यक्ति पराक्रमी और निर्भय हो जाता है।

पश्चिम एशिया में धधक रही आग में ईरान के खामेनेई ने घी डाला

एजेंसियाँ। तेहरान/ बेरूत

ईरान के सर्वोच्च नेता ने शुक्रवार को देश द्वारा इजरायल पर हाल ही में किए गए मिसाइल हमले की प्रशंसा की और कहा कि यदि आवश्यक हुआ तो वे इसे फिर से करने के लिए तैयार हैं। राज्य टीवी की रिपोर्ट में यह बात कही गई है। लगभग पाँच वर्षों में शुक्रवार की नमाज़ में नेता के रूप में अपनी पहली उपस्थिति में अयातुल्ला अली खामेनेई ने मिसाइल हमले को ईरान के सशस्त्र बलों द्वारा एक 'शानदार' काम कहा। दूसरी ओर, इजरायल ने रात भर में कई बड़े हवाई हमले किए, बेरूत के उपनगरों को निशाना बनाया और इजरायली बमबारी से भाग रहे हज़ारों लोगों के लिए लेबनान और सीरिया के बीच मुख्य सीमा पार करना बंद कर दिया। इजरायली सेना ने शुक्रवार को कहा कि एक दिन पहले बेरूत में किए गए हमले में हिजबुल्लाह के संचार प्रभाग के प्रमुख मोहम्मद राशिद स्काफी की मौत हो गई। सेना ने एक बयान में कहा कि स्काफी 'एक वरिष्ठ हिजबुल्लाह आतंकवादी था जो 2000 से संचार इकाई के लिए जिम्मेदार था' और हिजबुल्लाह के उच्च अधिकारियों के साथ 'निकटता से जुड़ा हुआ' था।मंगलवार को ईरान ने इजराइल पर कम से कम 180 मिसाइलें दागीं, जो इजराइल और ईरान तथा उसके सहयोगियों (शेष पृष्ठ 9)

वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए शांति जरूरीः मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को मध्य पूर्व में बढ़ते संघर्ष और चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध का परोक्ष रूप से उल्लेख करते हुए कहा कि ये दोनों क्षेत्र वैश्विक अर्थव्यवस्था और ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनकी यह टिप्पणी मध्य पूर्व में संघर्ष के और बढ़ने की आशंकाओं के बीच आई है। अगर (शेष पृष्ठ 9)

तिरुपति लड्डू विवाद

उच्चतम न्यायालय ने स्वतंत्र एसआईटी का गठन किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम उच्चतम न्यायालय ने तिरुपति लड्डू बनाने में पशु चर्बी के इस्तेमाल के आरोपों की जांच के लिए पांच सदर्स्ईय स्वतंत्र विशेष जांच दल (एसआईटी) का शुक्रवार को गठन करने के साथ ही स्पष्ट किया कि वह अदालत का राजनीतिक युद्ध के मैदान के रूप में इस्तेमाल किए जाने की अनुमति नहीं देगा।यह आदेश इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि शीर्ष अदालत द्वारा नियुक्त जांच दल उस एसआईटी का स्थान लेगा जिसका गठन आंध्र प्रदेश सरकार ने तिरुपति लड्डुओं को बनाने में पशु चर्बी के इस्तेमाल के आरोपों की जांच के लिए 26 सितंबर को किया था। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि एसआईटी में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और आंध्र प्रदेश पुलिस के दो-दो अधिकारियों के अलावा एफएसएसएआई (भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण) का एक वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल होगा। पीठ ने कहा, हम स्पष्ट करते हैं कि हम न्यायालय का राजनीतिक युद्ध के मैदान के रूप में इस्तेमाल नहीं होने देंगे लेकिन करोड़ों लोगों की भावनाओं को शांत करने के लिए हम चाहते हैं कि जांच एक स्वतंत्र एसआईटी द्वारा की जानी चाहिए जिसमें राज्य पुलिस एवं सीबीआई के प्रतिनिधि और एफएसएसएआई का एक प्रतिनिधि शामिल हों। पीठ ने निर्देश दिया कि यह उचित होगा कि जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के निदेशक की निगरानी में की जाए। उसने सुनवाई के दौरान कहा, हम नहीं चाहते कि यह राजनीतिक नाटक बन जाए। दुनिया भर में करोड़ों लोगों की भावनाएं इससे जुड़ी हैं। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने इस महीने की शुरुआत में आरोप लगाया था कि राज्य में वाई एस जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली पिछली सरकार के दौरान तिरुपति मंदिर के लड्डू तैयार करने में पशु चर्बी का इस्तेमाल किया (शेष पृष्ठ 9)

पुणे में कालेज छात्रा से सामूहिक दुष्कर्म

पुरुष मित्र को पेड़ में बांधकर पीटा, एक गिरफ्तार, दो संदिग्धों के स्केच जारी किए

टीएन रघुनाथ। मुंबई

बृहस्पतिवार देर रात पुणे के बाहरी इलाके में सुनसान बोपदेव घाट इलाके में एक 21 वर्षीय लड़की से उसके पुरुष मित्र को पेड़ से बांधकर तीन अज्ञात लोगों ने सामूहिक बलात्कार किया। पीड़ित लड़की गुजरात की रहने वाली है और उसका इलाज पुणे के सरकारी अस्पताल में चल रहा है। घटना रात करीब 11 बजे बोपदेव घाट के कम रोशनी वाले और सुनसान इलाके में हुई। पुलिस को घटना की जानकारी शुक्रवार सुबह करीब 5 बजे मिली।

इस घटना के बाद पुणे में लोगों में काफी रोष फैल गया और स्थानीय पुलिस ने घटना के सिलसिले में पुणे के कोंढवा इलाके के 36 वर्षीय निवासी को गिरफ्तार कर लिया और बाकी दो संदिग्धों की तलाश शुरू कर दी। पुणे पुलिस ने बाकी दो संदिग्धों की तलाश के लिए अपराध और जांच शाखाओं की 10 टीमें बनाई हैं। शुक्रवार शाम को पुलिस ने कथित सामूहिक बलात्कार में शामिल तीन संदिग्धों में से दो के स्केच जारी किए। ये स्केच पीड़ित लड़की द्वारा अस्पताल में पुलिस को दिए गए बयान के आधार पर बनाए गए थे।मीडियाकर्मियों से बात करते हुए पुणे के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त रंजन कुमार शर्मा ने कहा, प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, महिला

और उसका पुरुष मित्र बृहस्पतिवार देर रात बोपदेव घर इलाके में गए थे, जहां तीन अज्ञात व्यक्तियों ने कथित तौर पर उसके साथ बलात्कार किया। प्रारंभिक जांच से पता चला है कि तीन संदिग्ध - जिनमें से एक ने खुद को कार्यकर्ता बताया - एक कार में पीड़ित लड़की और उसके प्रेमी के पास पहुंचे और जोड़े से जानना चाहा कि वे उस 'निषिद्ध' क्षेत्र में क्या कर रहे थे। उन्होंने जोड़े की तस्वीरें लीं। गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देने के बाद, संदिग्धों में से एक ने लड़की को जबरन कार में बिठा लिया। उन्होंने उसके प्रेमी को एक पेड़ से बांध दिया और मामले के अंदर लड़की के साथ बारी-बारी से बलात्कार किया। घटनास्थल से भागने से पहले संदिग्धों ने पीड़ित लड़की के दोस्त पर भी हमला किया। घायल प्रेमी ने पीड़ित लड़की को इलाज के लिए ससून जनरल अस्पताल (शेष पृष्ठ 9)

ऐतिहासिक कश्मीरी गेट अब ट्रैफिक जाम के जंजाल में उलझा

लाइलाज ट्रैफिक जाम
पायनियर

राजेश कुमार। नई दिल्ली

सिविल लाइंस के नजदीक स्थित कश्मीरी गेट पर रोजाना भारी ट्रैफिक जाम रहता है। यहीं पर मुख्यमंत्री, उपराज्यपाल और कैबिनेट मंत्रियों के आवास स्थित हैं। यह चौबीसों घंटे ट्रैफिक जाम के लिए सबसे कुख्यात हिस्सों में से एक है। लाला हरदेव मार्ग कश्मीरी गेट मेट्रो स्टेशन और आईएसबीटी के सामने मुख्य सड़क है, जहां शाहदरा और दिलशाद गार्डन जैसे पूर्वी दिल्ली के इलाकों से आने वाले फ्लाईओवर मिलते हैं। कश्मीरी गेट को चांदनी चौक और दरियागंज से जोड़ने वाला नेताजी सुभाष मार्ग हमेशा अतिक्रमण और संकरी गलियों के कारण जाम रहता है। इस हिस्से पर एक और बड़ा जाम आईएसबीटी कश्मीरी गेट और चंदगी राम अखाड़ा जंक्शन के बीच आता है। हजारी कोर्ट को जोड़ने वाला नित्यानंद मार्ग यहां एक और अड़चन है। दिलचस्प बात यह है कि कश्मीरी गेट के आसपास की सड़कों पर वाहनों की संख्या कई गुना बढ़ गई है, लेकिन सड़कों और यातायात प्रबंधन की स्थिति वैसी ही बनी हुई है। 2018 में, दिल्ली यातायात पुलिस ने कश्मीरी गेट के आस-पास के क्षेत्र को भारी पैदल यात्रियों की आवाजाही और यातायात की भीड़ के कारण 'दुर्घटना-आशंकित' क्षेत्र के रूप में पहचाना था। उल्लेखनीय है कि 2018 के बाद से स्थिति और भी खराब हो गई है। अवैध पार्किंग, अनियंत्रित निजी वाहन, भारी अतिक्रमण और भारी यातायात के कारण अधिकारी यहाँ बेखबर नज़र आते हैं। दिल्ली सरकार के पूर्व परिवहन सचिव रजनी कांत वर्मा ने कहा कि कश्मीरी गेट पर भारी ट्रैफिक और (शेष पृष्ठ 9)

चौबीस घंटे जाम के लिए कुख्यात इलाकों में से एक है यह हिस्सा

आईएसबीटी कश्मीरी गेट पर ट्रैफिक जाम। फोटोः रंजन डिमरी

पुलिस कार्मिकों को मिलेगा ई-पेंशन प्रणाली का लाभ

● कहा, किसी भी संवर्ग का कार्मिक हो, समय से पदोन्नति मिले

● पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती परीक्षा का परिणाम इस माह के अंत तक जारी करने की तैयारी करें

सीएम योगी ने एडीजी स्तर के अफसरों के साथ की विशेष बैठक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पुलिस कार्मिकों को 'ई-पेंशन' से जोड़ने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हर पुलिस कार्मिक को समय पर पदोन्नति मिले, उनकी चरित्र पंजिका पर सही विवरण अंकित हो, उनकी योग्यता और प्रतिभा के अनुरूप पदस्थापना मिले और सेवानिवृत्ति के समय देयकों का भुगतान समय से हो, यह प्रत्येक दशा में सुनिश्चित किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने पुलिस कार्मिकों को आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराने और बेहतरीन प्रशिक्षण के लिए व्यवस्थाओं को और बेहतर करने के भी निर्देश दिए हैं।

शुक्रवार को अपर पुलिस महानिदेशक स्तर के सभी अधिकारियों के साथ विशेष बैठक में मुख्यमंत्री ने एक- एक कर सभी एडीजी से उनकी वर्तमान पदस्थापना अवधि में किये गए कार्यों, अपनाए गए नवाचारों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी ली। विशेष बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि पुलिस की सभी इकाइयों के बीच बेहतर संवाद और समन्वय होना चाहिए। लॉजिस्टिक इकाई हो, अभिसूचना इकाई हो अथवा, एसआईटी, क्राइम, पीआरवी 112 आदि, इकाइयां भले ही अलग-अलग हैं लेकिन सभी का लक्ष्य एक ही है, प्रदेश में बेहतर कानून व्यवस्था बनाये रखना। इसलिए सभी के बीच बेहतर तालमेल होना आवश्यक है। वरिष्ठ अधिकारी समय पर कार्यालय आएं। किसी भी कार्यालय में कोई फाइल तीन दिन से अधिक लंबित न हो। यदि किसी तरह की समस्या हो तो डीजीपी कार्यालय, गृह विभाग अथवा सीधे मुझसे समय लेकर मिल सकते हैं, लेकिन अनिर्णय की स्थिति न होनी चाहिए। फाइल लंबित नहीं रहनी चाहिए। बहुत सारी इकाइयों में फील्ड विजिट बढ़ाये जाने की आवश्यकता है। एडीजी स्तर के अधिकारी के जिलों में जाने से अच्छा अधीनस्थ पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जिलों में जाएं अपनी इकाई से जुड़े कामकाज की समीक्षा करें, जहां सुधार की आवश्यकता हो, उस अनुरूप काम किया जाए। पुलिस बल में लॉजिस्टिक्स का अभाव न हो। समय-समय पर इसकी समीक्षा करते रहें। हमारा पुलिस बल आधुनिक उपकरणों से लैस होनी चाहिए। अभी 40 अश्वों की आवश्यकता और है, कुंभ में इसकी आवश्यकता पड़ेगी। इनकी क्रय और प्रशिक्षण की प्रक्रिया यथाशीघ्र पूरी की जाए। प्रदेश में पहली बार होने जा रही कंडम वीपन्स के निस्तारण की प्रक्रिया को सावधानी से पूरा किया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बदलते समय के साथ साइबर क्राइम की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। हमें इसके लिए हर स्तर पर सतर्क होना होगा। साइबर फ्रॉड के संबंध में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। शिक्षक, उद्यमियों, व्यापारियों, चिकित्सकों सहित अलग-अलग वर्गों के साथ समय-समय पर गोष्ठियां की जाएं, लोगों को साइबर अपराध की घटनाओं से अवगत कराएं, सुरक्षा के तौर-तरीकों से अवगत कराएं।

सभी जिलों में साइबर क्राइम थाने स्थापित किये जा रहे हैं। इनके भवन निर्माण की कार्यवाही में अनावश्यक देर न की जाए। आवश्यकतानुसार मानव संसाधन की व्यवस्था करें। भारत सरकार द्वारा साइबर फॉरेंसिक लैब की स्थापना का प्रस्ताव है। इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही करें। हर जिले के हर थाने में साइबर हेल्प डेस्क क्रियाशील रखें। किसी भी तरह की शिकायत मिलने पर तत्काल रिस्पॉन्स होना चाहिए। फ़ॉरेंसिक इंस्टिट्यूट, लखनऊ को साधन-संपन्न बनाने के लिये सरकार हर आवश्यक सहयोग देगी। इसके निर्माण संबंधी अवशेष कार्यों को यथाशीघ्र पूरा कराएं। देश की आपराधिक न्याय प्रणाली में लागू तीनों नए कानून अब पूरी तरह अमल में आ चुके हैं। इस संबंध में विधिवत प्रशिक्षण जारी रखा जाए। हाल के दिनों में रेलवे ट्रैक पर सिलेंडर, रॉड आदि चीजें मिली हैं। इसी तरह ट्रेनों पर पत्थर फेंके जाने की घटनाएं भी हुई हैं। यह चिंताजनक है। इसके लिए जीआरपी, आरपीएफ, रेलवे प्रशासन और सिविल पुलिस को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। लोकल इंटेलिजेंस को और मजबूत किया जाना चाहिए। मृतक आश्रितों के प्रकरण में आश्रित की आयु को ध्यान में रखते हुए नियमों में बदलाव पर विचार किया जाना चाहिए। फिजिकल परीक्षण के नियम व्यावहारिक होने चाहिए। मृतक आश्रितों के प्रकरण का तय समय सीमा के भीतर निस्तारित होना सुनिश्चित करें।

विशेष परिस्थितियों में हमारी यूपी 112 ने बेहतरीन परिणाम दिए हैं। आज औसत रिस्पॉन्स टाइम घटकर 7.5 मिनट तक आ गया है। कुछ जिलों में तो 3-5 मिनट में रिस्पॉन्स मिल रहा है। यह संतोषप्रद है लेकिन तकनीक की सहायता से इसे और कम किया जाना चाहिए। पीआरवी 112 के वाहनों की लोकेशनिंग और ठीक किया जाना आवश्यक है। इसके लिए पुलिस कप्तान के साथ-साथ थानाध्यक्ष तक को जवाबदेह बनाना होगा। सक्रियता और बढ़ाये जाने की जरूरत है। ब्लैक स्पॉट को चिन्हित कर वहां वाहनों की तैनाती करें। वीमेन पॉवर लाइन 1090 को और उपयोगी बनाने का प्रयास हो। जिन जिलों से कम फोन कॉल आ रहे हैं, वहां इसके बारे में जागरूकता बढ़ाएं। मुकदमों के प्रभावी अभियोजन की दिशा में और बेहतर प्रयास अपेक्षित है। हर जिले का लक्ष्य तय करें, पूरी तैयारी करें और ससमय दोषियों को दंड मिलना सुनिश्चित करायें। समय-समय पर सभी जनपदों में विजिट कर स्थानीय स्थितियों का आंकलन भी किया जाना चाहिए।

शह और मात पर मुख्यमंत्री ने लिटिल चैम्प से खूब की बात

● सबसे कम उम्र के फीडे रेटेड खिलाड़ी कुशाग्र के साथ शतरंज खेल सीएम योगी ने बढ़ाया उत्साह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

खेल और खिलाड़ियों के प्रति मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का लगाव जग जाहिर है। और, जब बात खेल की नन्ही प्रतिभाओं की हो तो फिर कहना ही क्या। गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री में देश के सबसे कम उम्र के फीडे (विश्व शतरंज महासंघ) रेटेड खिलाड़ी, गोरखपुर निवासी कुशाग्र अग्रवाल के साथ शतरंज खेल कर उत्साहवर्धन किया। सीएम योगी ने इस लिटिल चैम्प से शतरंज के खेल में मोहरों की चाल और शह-मात पर खूब बात की। कुशाग्र अग्रवाल, शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आशीर्वाद लेने गोरखनाथ मंदिर पहुंचे थे। कुशाग्र अभी सिर्फ 5 साल 11 माह के हैं और यूकेजी में पढ़ते हैं। पर, उनकी उपलब्धि उम्र से काफी बड़ी है। 1428 रैपिड फीडे रेटिंग हासिल कर वह इस समय भारत में सबसे कम उम्र के फीडे-रेटेड खिलाड़ी हैं।

उन्होंने 4 साल की उम्र में शतरंज खेलना शुरू किया और अपनी प्रतिभा के दम पर एक साल में ही फीडे रेटिंग हासिल कर ली। शतरंज का शुरुआती प्रशिक्षण उन्हें अपनी बहन अविका से मिला जो खुद भी शतरंज की बेहतरीन खिलाड़ी हैं। कुशाग्र अब तक पटना, बेंगलुरु, पुणे में आयोजित लगभग अंतरराष्ट्रीय फीडे रेटेड प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर पुरस्कार जीत चुके हैं।

गोरखनाथ मंदिर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने न केवल कुशाग्र को उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया बल्कि उनके साथ शतरंज खेलकर खूब उत्साह भी बढ़ाया। उन्होंने कुशाग्र से शतरंज की चालों से जुड़ी बारीकियों पर भी चर्चा की। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि कुशाग्र अग्रवाल की प्रतिभा को और निखारने के लिए यूपी सरकार हर तरह की मदद करेगी। उन्होंने विश्वासएम जताया कि शतरंज का नन्हा अंतरराष्ट्रीय रेटेड खिलाड़ी आने वाले समय में गोरखपुर और प्रदेश का नाम देश-दुनिया में रोशन करेगा।

जीरो पावर्टी-यूपी अभियान के तहत एन्युमेरेटर के चयन की कार्यवाही 7 दिनों में हो पूरी: मुख्य सचिव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने कहा है कि जीरो पावर्टी-उत्तर प्रदेश अभियान के त्वरित कार्यान्वयन के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर अधिकतम 25 निर्धनतम परिवारों का चयन किया जाना है। निर्धनतम परिवारों के चिन्हीकरण की कार्यवाही एन्युमेरेटर द्वारा निष्पादित की जायेगी। इसके लिए उन्होंने प्रथम चरण में खंड विकास अधिकारिओं द्वारा एन्युमेरेटर (ग्राम पंचायत स्तरीय कर्मचारी व कैडर) का सत्यापित प्रोफाइल जीरो पावर्टी पोर्टल पर 7 दिवस के भीतर पंजीकृत कराने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि इसमें पंचायत सहायक, रोजगार सेवक, समूह सखी, अन्य सामुदायिक कैडर व बीसी सखी सखी शामिल होगें।

मुख्य सचिव शुक्रवार को वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से समस्त मण्डलायुक्तों व जिलाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर रहे थे।उन्होंने कहा कि निर्धनतम परिवारों की पहचान और उन्हें समयबद्ध चरण में गरीबी से निकालने का मुख्यमंत्री द्वारा संकल्प लिया गया है। चयनित परिवारों को खाद्य सुरक्षा, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं व आवास से संतृप्त किया जायेगा। इन परिवारों की नियमित आय के लिए रोजगार व स्वरोजगार के अवसर मुहैया कराये जायेंगे। जो व्यक्ति कार्य करने में अक्षम हैं, उन्हें संचालित पेंशन योजनाओं से संतृप्त किया जायेगा। इसमें सभी का सहयोग अपेक्षित है।

उन्होंने कहा कि सूचना की गुणवत्ता तथा संपूर्णता के लिए 5 सदस्यीय ग्राम स्तरीय समिति द्वारा इसे सत्यापित किया जायेगा। इस समिति में ग्राम प्रधान, भूतपूर्व ग्राम प्रधान, विद्यालय के वरिष्ठ प्रधानाध्यापक, दो सबसे पुराने स्वयं सहायता समूह के अध्यक्ष शामिल होंगे। प्रत्येक सदस्य निर्धनतम परिवार के लिए अलग-अलग अभिमत देंगे, जिसे अन्य सदस्य नहीं देख सकेंगे। सदस्य को स्थलीय सत्यापन के स्थान व समय पर ही सत्यापन के पश्चात अपना अभिमत मोबाइल पर देना होगा। मुख्य सचिव कैम्प में विशेषज्ञ-टीम द्वारा सूचनाओं की सत्यता का परीक्षण भी किया जायेगा। सूचना पर संदेह होने पर थर्ड पार्टी द्वारा स्थलीय परीक्षण किया जायेगा। अंतिम चयनित निर्धनतम परिवारों की सूची को ग्राम पंचायत सचिवालय के कई स्थानों पर 15 दिनों के लिए चस्पा किया जायेगा। उन्होंने कहा कि निर्धनता का आंकलन द्विस्तरीय होगा। पहला भूमिहीन, आजीविका का कोई विकल्प नहीं, अनिश्चित आय, दिहाड़ी/ कृषि मज़दूरी पर आश्रित, आर्थिक संसाधनों की कमी, परिवार में हमेशा खाने-पहनने की तंगी रहती है। द्वितीय स्तर एकल महिला (परित्यक्ता/ विधवा) सरकारी मदद से वंचित, परिवार का मुखिया/ कमाऊ सदस्य विकलांग, मुखिया/ कमाऊ सदस्य की उम्र 65 वर्ष या ज़्यादा है, मुखिया/ कमाऊ सदस्य प्रवासी मज़दूर है, परिवार का कोई सदस्य गंभीर बीमारी से ग्रसित है, परिवार आपदा प्रभावित स्थान पर निवास करता है, परिवार का आजीविका का साधन हस्तशिल्प/ शिल्पकारी है, कोई भी सदस्य किसी आजीविका कौशल में सक्षम नहीं है और स्वयं सहायता समूह के सदस्य भी नहीं है। टेक होम राशन यूनिट की समीक्षा के दौरान उन्होंने कहा कि सभी यूनिट क्रियाशील हो और टाइम से डिलीवरी और सभी वेण्डर्स का भुगतान समय से हो।

जेलों में भेदभाव पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का मायावती ने किया स्वागत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सुप्रीम कोर्ट द्वारा जेलों में जाति के आधार पर काम का बंटवारा करने और जाति आधारित भेदभाव बढ़ाने वाले जेल मैनुअलों को रद्द किये जाने का बसपा सुप्रीमो मायावती ने स्वागत किया है। मायावती ने जेलों में जातिगत भेदभाव पर रोक जरूरी बताया। सुप्रीम कोर्ट के व्यवस्था में बदलाव करने पर मायावती ने खुशी जाहिर की है।

शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स अकाउंट पर एक्स करते हुए बसपा सुप्रीमो मायावती ने लिखा कि देश की जेलों में भी क्रूर जातिवादी भेदभाव के तहत कैदियों से जातियों के आधार पर उनमें काम का बंटवारा कराने को अनुचित व असंवैधानिक करार देकर इस व्यवस्था में ज़रूरी बदलाव करने का माननीय सुप्रीम कोर्ट के फैसले का भरपूर स्वागत। उन्होंने आगे लिखा कि बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के जातिविहीन मानवतावादी व धर्मपिरपेक्ष संविधान वाले देश में इस प्रकार की जातिवादी व्यवस्था का जारी रहना यह साबित करता है कि सरकारों का रवैया संवैधानिक न होकर लगातार जातिवादी है। अत: मजलूमों के लिए अब सत्ता प्राप्त करना ज़रूरी।

गड्ढामुक्ति के नाम पर भाजपा सरकार में बड़े पैमाने पर हुआ भ्रष्टाचार: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार में गड्ढ़ा मुक्त के नाम पर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और लूट हुई है। इस सरकार में विकास कार्य ठप्प है। बजट के पैसे का बंदरबांट हो रहा है। सात साल से भाजपा सरकार सड़कों के गड्ढे नहीं भर पायी। हर साल गड्ढ़ा मुक्त करने के नाम पर हजारों करोड़ रूपये का बजट जारी होता है। फिर उसकी लूट हो जाती है। सड़के जसकी तस रह जाती है। सड़कों के गड्ढ़ों के कारण प्रदेश में हर दिन दुर्घटनाएं हो रही है। इस सरकार में अब तक कई लोग सड़कों के गड्ढ़ों के कारण मौत के मुंह में जा चुके हैं। अभी इसी बुधवार को गाजीपुर जिले में गड्ढ़े में जाने से असंतुलित हुई मोटर साइकिल से गिरने से महिला की मौत हो गई।

अखिलेश यादव ने कहा कि सरकार पूरी तरह नकारा साबित हुई है। आम जनता बेबस है। भाजपाई और ठेकेदार इसे अवसर मानकर जश्न मनाते है। गड्ढ़ामुक्त के नाम पर हजारों करोड़ का बजट जारी होता है। जो ऊपर से नीचे तक बंट जाता है। भाजपा ने उत्तर प्रदेश को भ्रष्टाचार का गढ़ बना दिया है।

उन्होंने कहा कि इस सरकार में हो रहे हर निर्माण कार्य में भारी लूट हो रही है। भाजपा की इस झूठ और लूट की सरकार में सड़कों के गड्ढे लोगों की निरन्तर जान ले रहे है। मुख्यमंत्री ने अब तक अपने पूरे कार्यकाल में सड़कों को गड्ढ़ा मुक्त करने के नाम पर न जाने कितनी बार तारीख दे चुके है लेकिन भ्रष्ट सरकार पर कोई असर नहीं पड़ा। जो बजट जारी होता है सब मिलकर डकार जाते हैं। मुख्यमंत्री के आदेश कागज पर सीमित और बेअसर है।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग के सदस्य का प्रदेश कार्यालय पर स्वागत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राष्ट्रीय लोकदल प्रदेश कार्यालय पर शुक्रवार को अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग के सदस्य नरेन्द्र खजूरी के प्रथम आगमन पर प्रदेश पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं द्वारा फूल माला व अंगवस्त्र पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर नरेंद्र खजूरी ने भारत रत्न चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग के सदस्य नरेंद्र खजूरी ने उपस्थित पार्टी जनों को संबोधित करते हुए कहा कि सर्वप्रथम मैं राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी जयन्त सिंह को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझ जैसे सामान्य कार्यकर्ता को यह जिम्मेदारी सौंपी है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के हित का कार्य करने एवं उनके साथ जहां भी अन्याय होगा वहां मैं पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ उनको न्याय दिलाने का कार्य करूंगा। रालोद प्रदेश अध्यक्ष रामाशीष राय ने कहा कि जिस तरह से चौधरी जयन्त सिंह ने एक सामान्य कार्यकर्ता को अनुसूचित जाति जनजाति का सदस्य बनाया है उससे सभी सामान्य कार्यकर्ताओं का मनोबल बढा है और उनमें नई ऊर्जा का संचार हुआ है।

इलाहाबाद विवि छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष केके राय समर्थकों सहित कांग्रेस में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा से प्रेरित होकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष, इलाहाबाद हाईकोर्ट के प्रतिष्ठित अधिवक्ता केके राय ने अपने समर्थकों के साथ प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर अजय राय ने उनके गले में तिरंगा पट्टिका पहनाकर तथा कांग्रेस सदस्यता कार्ड देकर उन्हें विधिवत रूप से पार्टी में शामिल कराया।

सदस्यता ग्रहण कार्यक्रम में आए हुए सभी लोगों का स्वागत करते हुए अजय राय ने कहा कि हमारे नेता राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से देश के आमजनमानस के दुख दर्द को समझा तथा भविष्य उसे दूर करने का आशवासन भी दिया। उनके इस सार्थक प्रयास का ही नतीजा है कि आए दिन प्रदेश के विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता तथा समाज में प्रतिष्ठित अधिवक्ता, शिक्षक, चिकित्सकों द्वारा कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की जा रही है जिससे कांग्रेस का परिवार लगातार बढ़ता जा रहा है। आने वाले समय में इस प्रदेश की जनता इंडिया गठबंधन को जीत दिलाएगी तथा भाजपा की तानाशाह योगी सरकार को सत्ता से बाहर करने का काम करेगी। सदस्यता ग्रहण करने के उपरांत इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष केके राय ने कहा कि राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा और भारत जोड़ो न्याय यात्रा के माध्यम पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ दिया और हमारे वक्त के सबसे बड़े लोकतंत्र रक्षक बनकर उभरे हैं जबकि आज देश भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, महामारी और नफरत की आंधी से जल रहा है, राहुल गांधी ने संसद से सड़क तक आम आदमी की आवाज को बुलंद किया और कदम कदम पर भाजपा की जन विरोधी राजनीति का पर्दाफाश किया। वे दलित, आदिवासी पिछड़े वर्ग महिलाओं और अल्पसंख्यकों के हर कदम पर साथ रहे। श्री गांधी के अथक प्रयासों से कांग्रेस सहित भारत के लोकतंत्र में नई आस्था और विश्वास विकसित हुआ है। केके राय के साथ सदस्यता ग्रहण करने वालों में प्रमुख रूप से अवधेश राय, श्याम कृष्ण, पद्मा, चार्ली प्रकाश, अंशु मालवीय, रमेश कुमार यादव, प्रबल प्रताप, आर्यन कृष्णा, रवीन्द्र सिंह, रमेश कुमार, प्रमोद सिंह सहित भारी संख्या में लोग शामिल रहे।

और सशक्त होंगी बेटियां, सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के प्रति बढ़ेगी जागरूकता

● शारदीय नवरात्रि में जल्द ही मिशन शक्ति के पांचवें चरण का शुभारंभ कर सकते हैं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार अपने विजन को प्रदेश में 'मिशन शक्ति' के रूप में आगे बढ़ा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस मिशन को और अधिक प्रभावी बनाने और महिलाओं को और अधिक सशक्त करने के लिए शारदीय नवरात्रि में इसके पांचवें चरण की शुरुआत करने जा रहे हैं। मिशन शक्ति के पांचवें चरण के तहत व्यापक पैमाने पर गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है जो कि दिसंबर माह तक चलेगा। इन कार्यक्रमों में महिलाओं के साथ-साथ बच्चों को भी सम्मिलित किया गया है। कार्यक्रमों की इस शृंखला में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस, ऑपरेशन मुक्ति, बाल कार्निवाल, वीरांगना दिवस, स्वावलंबन कैंप समेत कई कार्यक्रम शामिल हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रदेश में संचालित विभिन्न योजनाओं और सेवाओं के प्रति जागरूकता लाने के साथ-साथ उन्हें इससे लाभान्वित करना भी है। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आगामी मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत अक्तूबर से दिसंबर तक जो गतिविधियां संचालित की जानी हैं, उसके अनुसार 11 अक्टूबर तक

मिशन शक्ति-फेज 5

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इसमें लैंगिक समानता पर सेमिनार के साथ ही सफल महिलाओं के साथ टॉक शो, एक दिन की सांकेतिक जिलाधिकारी, कन्या जन्मोत्सव, बाल विवाह, संवाद, घरेलू हिंसा व कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ लैंगिक उत्पीड़न, अनंता जैसे विषयों पर जागरूकता का संदेश दिया जाएगा। 11 अक्तूबर को अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन होगा, जिसमें प्रत्येक आंगनबाड़ी तथा राजकीय बालिका/ शिशु गृहों में विशेष कन्या पूजन व उनके लिए प्रसाद ग्रहण का आयोजन किया जाएगा। इसी माह 21 से 31 अक्तूबर तक ऑपरेशन मुक्ति अभियान चलाया जाएगा। इसके तहत बाल विवाह तथा बाल श्रम के विरुद्ध सप्ताह भर जागरूकता एवं रेस्क्यू के लिए वृहद अभियान चलेगा। इस दौरान विभागों एवं प्राधिकारियों के बीच समन्वय के साथ कार्य करते हुए बाल विवाह या बाल श्रम के प्रकरणों में बच्चों को रेस्क्यू करने के लिए ऑपरेशन को संचालित किया जाएगा। रेस्क्यू किए गए सभी बच्चों को बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत कर उन्हें उत्तर प्रदेश बाल सेवा योजना से जोड़ा जाएगा। 10 से 14 नवंबर के बीच बाल कार्निवाल का आयोजन किया जाएगा। इसमें योग व मेडिटेशन के अतिरिक्त बच्चों द्वारा महापुरुषों के जीवन पर आधारित नाटक एवं ड्रामा का प्रदर्शन होगा। साथ ही खेलकूद प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाएंगी, जबकि नृत्य गायन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ पेंटिंग प्रतियोगिता कराई जाएगी। 14 नवंबर को बाल दिवस के उपलक्ष्य में कार्निवाल समापन समारोह में बच्चों द्वारा तैयार किए गए विभिन्न कार्यक्रमों जैसे म्यूजिक, गीत, गान, नाटक आदि का आयोजन, व्यवसायिक शिक्षा, कौशल विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत बच्चों द्वारा तैयार उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई जाएगी। प्रतियोगितों में फर्स्ट, सेकेंड और थर्ड आने वाले बच्चों को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

19 नवंबर से प्रदेश के समस्त जनपदों में भव्य समारोह का आयोजन करते हुए वीरांगना दिवस पर समाज में बदलाव के लिए प्रयासरत महिलाओं की प्रेरक कहानियों को जनपद स्तर पर विभिन्न माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाया जाएगा।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

No.15827574K नायक दिवाकर कुमार, ग्राम एवं डाकघर हरली, तेह बडकागांव, जिला हजारीबाग, झारखंड-825311 में रहते हैं। मेरे पिता का वास्तविक नाम अशोक साव जन्मतिथि 04/02/1970 के स्थान पर जन्मतिथि 01/01/1962 और माता श्रीमती पार्वती देवी (जन्मतिथि 05/02/1973) के स्थान पर श्रीमती परवा देवी जन्मतिथि 01/01/1963 जो कि सही है।

कैपरी ग्लोबल कैपिटल लिमिटेड
CAPRI GLOBAL CAPITAL LIMITED
पंजीकृत एवं कॉर्पोरेट कार्यालयः– 502, टॉवर–ए, पेनिनसुला बिजनेस पार्क, सेनापति बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई–400013
मंडल कार्यालयः 9बी, द्वितीय तल, पूसा रोड, नई दिल्ली – 110060

परिशिष्ट IV कब्जा सूचना (अचल संपत्ति के लिए)

जबकि, अधोहस्ताक्षरी कैपरी ग्लोबल कैपिटल लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में, वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अधीन तथा उक्त अधिनियम और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली 2002 तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मांग सूचना निम्नवर्णित तिथियों को जारी की थी जिनमें निम्नलिखित कर्जदार(रों) / गारंटर(रों) से सूचना में वर्णित बकाया राशि का भुगतान उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिन के भीतर करने की मांग की गई थी। कर्जदार उक्त राशि चुकाने में असफल रहे हैं, एतद्वारा कर्जदारों/गारंटरों को विशेष रूप से और जनसाधारण को सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरी ने प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली 2002 के नियम 8 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13 की उप धारा (4) के तहत उसको प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यहां नीचे प्रत्येक कर्जदार के समक्ष वर्णित संपत्ति का कब्जा इसमें आगे वर्णित तिथियों को प्राप्त कर लिया है। कर्जदार का ध्यान, प्रत्याभूत आस्तियों को छुड़ाने के लिए, उपलब्ध समय के संबंध में, अधिनियम की धारा 13 की उप–धारा (8) के प्रावधान की ओर आकृष्ट किया जाता है। विशेष रूप से कर्जदार को तथा सामान्य रूप से जनसाधारण को इस संपत्ति के संबंध में संव्यवहार नहीं करने हेतु सावधान किया जाता है और संपत्तियों के संबंध में कोई भी संव्यवहार सीजीसीएल के प्रभार वास्ते वर्णित बकाया राशि और उस पर ब्याज के प्रभाराधीन होगा।

क्र. सं.	कर्जदार/गारंटर का नाम	प्रत्याभूत आस्तियों का विवरण (अचल सम्पत्ति)	मांग सूचना की तिथि एवं राशि	कब्जे की तिथि
1	(हमारी बाराबंकी शाखा का ऋण खाता सं. LNMEBRK000125659 (पुराना) 80900005574738 (नया)) अमिताभ त्रिपाठी (उधारकर्ता) श्रीमती तनुजा त्रिपाठी (सह–उधारकर्ता)	संपत्ति का वह समस्त भाग एवं अंश जोकि भूमि एवं भवन प्लॉट क्षेत्रफल 640 वर्ग फीट अर्थात 59.47 वर्ग मी. पर निर्माणित, टिकैत नगर, परगना दरियाबाद, तहसील सिरौली गौसपुर, जिला बाराबंकी, उत्तर प्रदेश 225415 में स्थित है, जिसकी चौहद्दी: पूरब में – प्लाट, उत्तर में – रोड, दक्षिण में – गेना देवी का प्लॉट	01.02.2024 रु. 20,24,394/– बकाया राशि रु. 19,41,150/– दिनांक 25.09.2024 तक	01.10.2024

स्थान : बाराबंकी (यू.पी) दिनांक : 05.10.2024 हस्ता/– (प्राधिकृत अधिकारी) कृते कैपरी ग्लोबल कैपिटल लिमिटेड (सीजीसीएल)

कूटरचित वर्चुअल कॉइन बनाकर करोड़ों की ठगी करने वाले गिरोह का सरगना गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कूटरचित वर्चुअल कॉइन (रूबी कॉइन) बनाकर प्रदेश और देश के विभिन्न हिस्सों से निवेशकों की गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपयों को निश्चित लाभ दिलाने का झांसा देकर ठगरने वाले गिरोह के सरगना समीर केशरी निवासी भाई-भाई रोड, कुतुबबिहार, गोयला डेरी, जिला द्वारिका को लखनऊ कमिश्नरेट पुलिस के साथ संयुक्त अभियान के दौरान गिरफ्तार किया। समीर केशरी वर्तमान में लखनऊ के अंसल एपीआई, थाना सुशांत गोल्फ सिटी क्षेत्र में रह रहा था।

विस्तृत पूछताछ पर ज्ञात हुआ कि समीर कोलकाता में एंजेला एग्रोटेक कम्पनी में काम करता था जहां पर सेल्स स्किल अच्छी होने के कारण उसे जल्द ही कंपनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर में शामिल किया गया। जहां पर वर्ष 2016 में फर्जीवाड़ा होने पर उसे जनपद दुर्ग मध्यप्रदेश से जेल गया था। जेल से छूटने के बाद समीर रायपुर छतीसगढ़ में रहने लगा, जहां पर उसने रूबी कॉइन नाम की वर्चुअल कॉइन की शुरुआत की, जिसका धीरे धीरे इसने प्रचार प्रसार करना शुरू किया। धीरे-धीरे लोग उसके लोकलुभावन वादों में फंसते चले गए और कंपनी व उसकी वर्थ बढती चली गई। समीर व उसके साथी रूबी कॉइन में लोगों का पैसा इन्वेस्ट कराते थे। लोगों को लोक लुभावन वादे देना कि यह एक सुरक्षित निवेश है, जिसमें निवेशक की मूल पूंजी हमेशा सुरक्षित रहेगी और यदि निवेशक अपना पैसा वापस लेना चाहे तो 3 वर्ष के बाद पूर्व सूचना देकर अपनी कॉइन के बदले पैसा अपने बैंक खाते में वापिस ले सकता है। निवेशक की पूरी निवेश पूंजी के उपयोग करने का अधिकार समीर के पास रहेगा और निवेशक को निवेशित पूंजी के बदले विभिन्न पर्यटन स्थलों का टूर पैकेज दिया जाता रहेगा। निवेशकों को किसी प्रकार का शक न हो इसके लिए अपनी कॉइन को स्वयं द्वारा बनाये गये कॉइन एक्सचेंज सीटीएस कोला जिसका ऑफिस दुबई में होना बताया गया परन्तु यह कॉइन की पूरी हैंडलिंग लोकल सर्वर पर की जाती थी, जिसका एडमिन राइट समीर केशरी के पास था। रूबी कॉइन की साइट के माध्यम से निवेशकों की डिटेल लेकर उनका खाता खोला जाता था, जिस पर निवेशकों की निवेशित रकम के बदले रूबी कॉइन को अपने अनुसार दिखाया जाता था। खोले गए फर्जी खाता नम्बरों को साइट के माध्यम से निवेशित धनराशि का लाग दिखाने के लिए किया जाता है परन्तु बैकएण्ड पर कोई इस तरह के एक्सचेंज सिस्टम को न संचालित करते हुए केवल निवेशकों को रूबी कॉइन का छद्म बैलेंस दिखाने एवं कुछ समय बाद लाग को खाते में न दिखाते हुए उसे प्रिंसिपल अकाउंट में ऐड करना बताया जाता। बाद में अपने ही अंतर्गत सर्वर व साईट का एडमिन राइट होने से उसे नियंत्रित करते हुए जिन खातों की देनदारी अधिक हो जाती है उसे डीएक्टिवेट करके निवेशकों को झूठी सूचना देते रहना तथा पैसा मांगने पर सर्वर अपडेट, सॉफ्टवेर अपडेट, आदि बहाने बताकर भुगतान को लंबित रखता था। थाना सुशांत गोल्फ सिटी पर मुकदमा पंजीकृत हो जाने के कारण पूरे पैसे को वर्चुअल कॉइन में कन्वर्ट कर दुबई भागने की फिराक में था।

डीजीपी को सौंपी गई ट्रेड शो में यूपी पुलिस के स्टॉल को मिली प्रथम पुरस्कार की ट्राफी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी प्रशांत कुमार को एडीजी यूपी-112 द्वारा यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो में उत्तर प्रदेश पुलिस के स्टॉल को मिले प्रथम पुरस्कार की ट्राफी तथा इस अवसर पर संकलित कॉफी टेबुल बुक भेंट की गई। यूपी पुलिस के स्टॉल पर आगंतुको द्वारा विजिटर बुक मे किए गए आलेख को भी डीजीपी पुलिस द्वारा देखा गया। इस अवसर पर एडीजी कानून एवं व्यवस्था एवं एडीजी / डीजीपी के जीएसओ सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश सरकार एवं इंडिया एक्सपोजीशन मार्ट लिमिटेड द्वारा संयुक्त रुप से गौतमबुद्धनगर म 25 सितंबर 2024 से 29 सितंबर 2024 तक यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो 2024 का आयोजन किया गया। डीजीपी प्रशान्त कुमार के निर्देशन में उक्त ट्रेड शो के हॉल नम्बर 4 में उप्र पुलिस द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं के सम्बन्ध में एक स्टॉल लगाया गया। यूपी पुलिस की जनहित सेवाओं को जनता तक पहुंचाने के लिए यूपी 112, वुमेन पॉवर लाइन (1090), साइबर क्राइम, एसडीआरएफ, पीएसी, एसटीएफ, एटीएस, यातायात तथा विधि विज्ञान प्रयोगशाला के स्टाल लगाएस गए, जिसमे काफी संख्या में देश व विदेश के नागरिकों ने यूपी पुलिस की सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की और इस तरह के आयोजन बार-बार करने हेतु आग्रह भी किया। उक्त ट्रेड शो के कुल 15 हॉल में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी लगाई गई थी। यूपी पुलिस के स्टाल पर केन्द्रीय मंत्री वाणिज्य एवं उद्योग पियूष गोयल, केन्द्रीय मंत्री वस्त्र गिरिराज सिंह, प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री राकेश सचान आदि द्वारा भ्रमण किया गया और उत्तर प्रदेश पुलिस के कार्यों की सराहना की गई। इस पांच दिवसीय ट्रेड शो में केंद्र एवं राज्य के विभिन्न अधिकारियों ने भी स्टॉल का भ्रमण किया एवं प्रशंसा की। संजय प्रसाद, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री ने उत्तर प्रदेश पुलिस के स्टॉल का भ्रमण किया, यूपी-112, 1090, साइबर क्राइम, एटीएस, एसटीएफ, एसडीआरएफ के स्टॉल पर जाकर कार्य प्रणाली को जाना व सभी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा विज़िटर बुक मे आलेख भी दर्ज किया। उत्तर प्रदेश पुलिस के स्टॉल पर विभिन्न स्कूली बच्चों, महिलाओं एवं बुजुर्गों को आपात सेवा 112 की विभिन्न सेवाओं यथा वरिष्ठ नागरिकों हेतु सवेरा योजना, महिलाओं की सुरक्षा हेतु नाईट स्कोर्ट योजना, औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा हेतु लिंक योजना तथा विभिन्न आकस्मिक सेवाओं के एकीकरण के विषय में जानकारी दी गई इसके साथ-साथ केन्द्रीय सुरक्षा बल के जवानों व पुलिस के रेक्रूट दल को पुलिस के स्टॉल का भ्रमण कराया गया और प्रचार-प्रसार सामग्री का वितरण किया गया। आयोजकों द्वारा उक्त ट्रेड शो के सभी 15 हॉल में लगाये गए स्टॉल में से स्टॉल के साइज, उसका सेटअप, वहां के माहौल तथा स्टॉल पर आने वाले लोगों की संख्या के आधार पर प्रत्येक हॉल में प्रथम 3 स्टॉल को पुरस्कृत किया गया। ट्रेड शो के हॉल नम्बर 4 में लगाई गई उत्तर प्रदेश पुलिस के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। उक्त पुरस्कार 27 सितंबर 2024 को केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह एवं कैबिनेट मंत्री राकेश सचान द्वारा अपर पुलिस अधीक्षक यूपी 112 मोहिनी पाठक को प्रदान किया गया था।

राहुल गांधी के खिलाफ दाखिल परिवाद पर पुनः सुनवाई का आदेश

● भारत जोड़ो यात्रा के दौरान सावरकर के विरुद्ध टिप्पणी का मामला

विधि संवाददाता। लखनऊ

भारत जोड़ो यात्रा के दौरान महाराष्ट्र के अकोला में महान क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर जी को अंग्रेजो का नौकर बताने के कथित मामले में सांसद राहुल गांधी के खिलाफ दाखिल परिवाद को निचली अदालत द्वारा खारिज करने के आदेश को सत्र अदालत ने निरस्त कर दिया है।

एमपी एमएलए कोर्ट के विशेष जज हरबंश नारायण ने इस सम्बन्ध में दाखिल रिवीजन अर्जी को मंजूर करते हुए निचली अदालत को पुन: सुनवाई कर विधि सम्मत आदेश पारित करने का निर्देश दिया है। वकील नृपेंद्र पांडेय ने इस मामले में निचली अदालत में अर्जी दाखिल कर राहुल गांधी के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करने का आदेश देने की मांग की थी। निचली अदालत ने इस अर्जी को परिवाद के रूप में दर्ज करने का आदेश देते हुए थाना हजरतगंज से तथ्यों की जांच कराई थी। फिर 14 जून 2023 को इस परिवाद को खारिज कर दिया था। सत्र अदालत में निचली अदालत के इस आदेश को जरिए रिवीजन अर्जी चुनौती दी गई थी। विशेष जज ने अपने आदेश में कहा है कि पत्रावली पर पर्याप्त साक्ष्य मौजूद होने के बावजूद निचली अदालत द्वारा अपने आदेश में इस तथ्य का जिक्र नहीं किया गया है कि राहुल गांधी के खिलाफ कोई मामला बनता है अथवा नहीं। इस प्रकार प्रश्नगत आदेश विधिक मस्तिष्क का प्रयोग किए बिना पारित किया जाना परिलक्षित होता है। नृपेंद्र पांडेय ने परिवाद में आरोप लगाया है कि 17 नवंबर 2022 को राहुल गांधी ने समाज में वैमस्यता और द्वेष फैलाने की मंशा से वीर सावरकर जी के व्यक्तित्व पर अर्नगल दोषारोपण करते हुए एक प्रेस कान्फ्रेंस में उक्त बात कही। इस प्रेस कान्फ्रेंस में वीर सावरकर जी के विरुद्ध सुनियोजित व योजनाबद्ध तरीके से पहले से छपा छपाया पत्रक वितरित किया गया। अर्जी में कहा गया है कि राष्ट्रवादी विचारधारा के महानायक क्रान्तिवीर दामोदर सावरकर जी स्वतंत्रता इतिहास में अमरनायक व निडर स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने मां भारती को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए उनके अमानवीय अत्याचार सहे। काला पानी की सजा के दौरान कोल्हू मे बैल बनकर तेल पेरा। कोड़े खाए। राहुल गांधी द्वारा ऐसे महानायक के विरुद्ध सार्वजनिक मंच से अमर्यादित शब्दों का प्रयोग कर समाज में जहर घोलने का काम किया गया है। उनके वक्तव्यों से वह न सिर्फ हतप्रभ है बल्कि उन्हें मानसिक व शारीरिक आघात भी पहुंचा है।

दुष्कर्म के आरोपी को आजीवन कारावास, एक लाख का जुर्माना

लखनऊ (विसं)। पांच वर्ष की एक मासूम बच्ची से दुष्कर्म करने के मामले में दोषी करार दिए गए आरोपी पप्पू को पॉक्सो की विशेष अदालत ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। विशेष जज विजेन्द्र त्रिपाठी ने इस पर एक लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। कहा है कि वयस्क होने पर यह धनराशि पीड़िता को दी जाएगी। तब तक इसे किसी राष्ट्रीयकृत बैंक में सर्वाधिक ब्याज वाली सावधि योजना के तहत जमा की जाएगी। 10 जनवरी 2016 को इस मामले की एफआईआर पीड़िता के पिता ने थाना इंदिरानगर में दर्ज कराई थी। विशेष लोक अभियोजक अभिषेक उपाध्याय व अरुण कुमार के मुताबिक आरोपी पांच वर्षीय पीड़िता का रिश्तेदार लगता था। उसने दोपहर में पीड़िता को अकेली पाकर उसके साथ रेप किया था। पीड़िता ने रोते हुए घर आकर यह बात अपनी मां को बताई थी।

लखनऊ में डेंगू के 60 रोगी मिले

लखनऊ। लखनऊ जनपद में डेंगू के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। शुक्रवार को डेंगू के 60 नये मरीज सामने आये हैं। जिन इलाकों से रोगियों के मिलने की पुष्टि हुई है उनमें सरोजनीनगर-2, चन्दरनगर-10, अलीगंज-10, गुडम्बा-4, इन्दिरानगर-9, सिल्वर जुबली-8, बीकेटी-4, एनके रोड-4, रेडक्रास-2, टूडियागंज-5, ऐशबाग-2 रोगी शामिल हैं।इसके अतिरिक्त मलेरिया के 5 (इन्दिरानगर-2, सिल्वर जुबली-1, टूडियागंज-1, रेडक्रास-1) तथा चिकनगुनिया के 4 (सिल्वर जुबली-1, अलीगंज-1, इन्दिरानगर-2) धनात्मक रोगी पाये गये। माह जनवरी 2024 से अब तक जनपद में डेंगू के कुल 660 एवं मलेरिया के 414 एवं चिकनगुनिया के 60 धनात्मक रोगी पाये गये। आज लगभग 1353 घरों एवं आस-पास मच्छरजनित स्थितियों का सर्वेक्षण किया गया और कुल 12 घरों में मच्छरजनित स्थितियां पाए जाने पर नोटिस जारी किया गया।

दिवंगत पुलिस कर्मी के आश्रित परिजनों को डीजीपी ने प्रदान किया 95 लाख का चेक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी प्रशांत कुमार ने दिवंगत उपनिरीक्षक (लिपिक) निशांत रंजन के शोक संतप्त आश्रित परिजन को बैंक ऑफ बड़ौदा, पुलिस सैलरी पैकेज के अंतर्गत धनराशि के रूप में 95 लाख रुपए का चेक प्रदान किया। बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा मृत सहायक उपनिरीक्षक (लिपिक) के परिजन को पुलिस सेलरी पैकेज के अंतर्गत प्रदान किए गए 95 लाख रुपए के चेक में 60 लाख रुपए ऑफ ड्यूटी एक्सीडेण्टल डेथ, 15 लाख रुपए टर्म इंश्योरेंस व 20 लाख रुपए विकम क्रेडिट कार्ड पे इंश्योरेंस के सम्मिलित हैं। उक्त मृत सहायक उपनिरीक्षक (लिपिक) निशान्त रंजन तकनीकी सेवाएं मुख्यालय लखनऊ में नियुक्त थे, जो थाना हाजीपुर जनपद वैशाली, बिहार के रहने वाले थे, जिनकी ऑफ ड्यूटी दुर्घटनावश छत से गिरने के कारण असामयिक मृत्यु हो गई थी।

इस अवसर पर एडीजी कानून व्यवस्था उत्तर प्रदेश सहित बैंक ऑफ बड़ौदा के जनरल मैनेजर, डिप्टी जनरल मैनेजर व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

मरीजों के साथ हमेशा करें अच्छा व्यवहार: बृज लाल

● सीएचसी चिनहट पर सांसद निधि से निर्मित मीटिंग हॉल व अन्य संसाधनों को किया जनता को समर्पित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) चिनहट पर सांसद निधि द्वारा निर्मित मीटिंग हॉल तथा डेंटल चेयर व वॉयल ट्राली का लोकार्पण शुक्रवार को राज्यसभा सांसद व पूर्व डीजीपी बृज लाल द्वारा किया गया। इस मौके पर राज्यसभा सांसद ने कहा कि चिकित्सीय पेशा बहुत ही महत्वपूर्ण पेशा है जिसमें व्यक्ति की सेवा करने का मौका मिलता है। चिकित्सकों का काम सेवा ही है और सेवा ही परम धर्म है। कभी आपा मात खोएं । चिकित्सक हो या स्वास्थ्य कार्यकर्ता मरीजों के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करें, व्यवहार हमेशा संतुलित रखें । मरीजों की आधी बीमारी अच्छे व्यवहार से ही ठीक हो जाती है। मरीजों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनायें। क्षेत्रीय विधायक योगेश शुक्ला ने कहा कि चिनहट सीएचसी एक बड़ी आबादी को अच्छादित करती है। सीमित संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद भी यह अस्पताल बेहतर सेवाएं दे रहा है । यहाँ के सभी स्वास्थ्य अधिकारी व कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. मनोज अग्रवाल ने कहा कि यह बड़ी खुशी की बात है कि सीएचसी पर मीटिंग हॉल और अन्य संसाधनों की उपलब्धता सांसद निधि से हुयी है। जिन भी चीजों की मांग हमने सांसद के सामने रखी थी, उसकी आपूर्ति उन्होंने करवा दी है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने सांसद के सामने सीएचसी पर नयी अल्ट्रा साउंड मशीन की मांग रखी, जिसे सांसद ने स्वीकार कर लिया। इस मौके पर उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. ए.पी.सिंह, सीएचसी अधीक्षक डा. विनय मिश्रा,जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी योगेश रघुवंशी, क्षेत्रीय सभासद अरुण राय, मंडल अध्यक्ष कमल पांडेय, जिला कार्यक्रम प्रबन्धक सतीश यादव, सीएचसी के चिकित्सा अधिकारी डा. अनिल कुमार पांडे, स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी नीतेश सिंह, स्वास्थ्य पर्यवेक्षक बृजेंद्र श्रीवास्तव, वीपी चौरसिया, बीपीएम एसपी सिंह, बीसीपीएम अर्चना विश्वकर्मा और सोहित मिश्रा भी मौजूद रहे।

नगर निगम ने 18 करोड़ रुपये की सरकारी भूमि हुई कब्ज़ा मुक्त

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सरोजनीनगर के औरंगाबाद जागीर में नगर निगम द्वारा सरकारी भूमि से अवैध कब्जा हटाया गया। बेसकीमती जमीन पर बिल्डरों द्वारा भूमि पर कब्जा कर प्लाटिंग की जा रही थी। संपत्ति प्रभारी अधिकारी द्वारा क्षेत्रीय उप जिलाधिकारी के निर्देश पर भूमि का क्षेलफल 93612 वर्गफुट है, जिसे खाली कराया गया। अभियान में 18 करोड़ की भूमि को रिक्त करायी गयी।

शुक्रवार को औरंगाबाद जागीर में नगर निगम ने सरकारी भूमियों पर अवैध कब्जे को हटाया। संपत्ति अधिकारी संजय यादव, नायब तहसीलदार नीरज कटियान ने अतिक्रमण मुक्त कराये जाने के अभियान चलाया। ग्राम औरंगाब जागीर, तहसील सरोजनी नगर जिला लखनऊ को खसरा संख्या.957 360, 953, 962, 990, 987, 935, 924, 925, 913, 915 का चिन्हीकरण उपजिलाधिकारी, सरोजनी नगर सचिन वर्मा ने कराये जाने के उपरान्त प्रभारी अधिकारी संजय यादव, तहसीलदार अरविंद कुमार पाण्डेय के निर्देश में नायब तहसील नीरज कटियार के नेतृत्व में क्षेत्रीय लेखपाल राजस्व सारांश सिंह व नगर निगम के लेखपाल मनोज आर्या व तनुज मदान की उपस्थिति में कार्रवाई की। बिजनौर थानाध्यक्ष ने उपलब्ध करायी गई पुलिस बल तथा ईटीएफ की उपस्थिति में उपरोक्त सरकारी भूमियों पर अवैध अस्थायी अतिक्रमण शान्तिपूर्ण ढंग से हटा दिया। यहां डीलरों द्वारा प्लाटिंग करके उक्त सरकारी भूमि पर अवैध अतिक्रमण किया गया था। अतिक्रमण मुक्त हुई भूमि का क्षेलफल्ल 93612 वर्गफुट है जिसकी बाजारु कीमत लगभग 18 करोड़ आंकलित की गयी है।

सीबीआई की विशेष अदालत ने 10 आरोपियों को दोषी करार दिया

विधि संवाददाता। लखनऊ

वर्ष 2013 में प्रतापगढ़ के कुंडा में तैनात रहे सीओ जियाउल हक की हत्या के मामले में सीबीआई की विशेष अदालत ने 10 आरोपियों को दोषी करार दिया है। इनमें आरोपी फूलचंद यादव, पवन यादव, मंजीत यादव, घनश्याम सरोज, रामलखन, छोटेलाल यादव, रामआसरे, मुन्नालाल पटेल, शिवराम पासी व जगत बहादुर पाल उर्फ बुल्ले पाल को हत्या आदि का दोषी माना गया है। जबकि एक आरोपी सुधीर यादव को साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया गया है। सीबीआई की विशेष अदालत ने दोषी करार दिए गए सभी आरोपियों की सजा के बिंदू पर सुनवाई के लिए नौ अक्तूबर की तारीख तय की है। उस रोज सभी आरोपियों को जेल से अदालत में हाजिर करने का आदेश दिया है। दो मार्च, 2013 को सीओ जियाउल हक की प्रतापगढ़ के हथिगवां थाना क्षेत्र में हत्या कर दी गई थी। इससे पहले उस रोज दो और हत्या हुई थी। बलीपुर के प्रधान नन्हें यादव और उसके भाई सुरेश यादव की। सीओ जियाउल हक इसी हत्याकांड मामले में मौके पर गए थे। लेकिन वहां उत्तेजित भीड़ ने उनकी हत्या कर दी। सीओ जियाउल हक की हत्या में दो एफआईआर दर्ज हुए थे। एसओ मनोज कुमार शुक्ला के अलावा सीओ जियाउल हक की पत्नी परवीन आजाद ने भी एक एफआईआर दर्ज कराई थी। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में राजा भैया को अभियुक्त बनाया था। इन सभी मामलों की जांच सीबीआई को सौंप दी गई। सीबीआई ने जांच के बाद नन्हें यादव और जियाउल हक हत्याकांड मामले में आरोप पत्र दाखिल किया। लेकिन परवीन आजाद की एफआईआर पर जांच के बाद क्लोजर रिपोर्ट दाखिल कर दिया था। इसके बाद सीबीआई ने सुरेश यादव हत्याकांड मामले में भी अंतिम रिपोर्ट दाखिल किया।

केजीएमयू वीसी ने सीपी रोगियों के लिए दी पुनर्वास केंद्र शुरू करने की मंजूरी

● विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस कल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

हर साल 6 अक्टूबर को विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवसमनाया जाता है। इस बीमारी को सीपी के नाम से भी जाना जाता है। ये एक गंभीर न्यूरोलॉजिकल डिजीज है जो जन्म से ही बच्चों में देखने को मिलती है। इस बीमारी को विकलांगता की श्रेणी में रखा गया है। ऐसे में सीपी रोगियों को देखते हुए किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी की कुलपति ने संस्थान में पुनर्वास केन्द्र खोलने को मंजूरी दे दी है।

बता दें कि केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग के भीतर एक विशेष समर्पित सेरेब्रल पाल्सी क्लिनिक बनाने की परिकल्पना प्रोफेसर अजय सिंह (कार्यकारी निदेशक, एम्स भोपाल और एम्स, गोरखपुर) द्वारा की गई थी। जो एचओडी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, केजीएमयू के संस्थापक थे। बाल चिकित्सा आर्थोपेडिक्स विभाग, केजीएमयू आर्थोपेडिक विकारों के साथ सेरेब्रल पाल्सी का पूर्ण उपचार प्रदान करता है जिसमें उचित पुनर्वास देखभाल के साथ पूर्ण चिकित्सा और शल्य चिकित्सा प्रबंधन शामिल है और सीपी के लिए एक समर्पित विशेष क्लिनिक हर शनिवार को ओपीडी में आयोजित किया जाता है। प्रोफेसर विकास वर्मा (वर्तमान एचओडी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, केजीएमयू) के मुताबिक इससे पीड़ित बच्चे के ब्रेन का विकास आम बच्चों की तुलना में कम होता है। इसके कारण उनका ब्रेन फंक्शन प्रभावित होता है। ब्रेन के जिस हिस्से पर इसका असर होता है, उस हिस्से से संबन्धित अंग भी इसके कारण प्रभावित हो जाते हैं। ऐसे में मरीज का शारीरिक संतुलन भी ठीक से नहीं हो पाता। दुनिया भर में 17 मिलियन से अधिक लोग सीपी के साथ जी रहे हैं। अन्य 350 मिलियन लोग सीपी के साथ बच्चों से निकटता से जुड़े हुए हैं।

सीपी के संभावित कारण

- जन्म के समय बच्चे को पर्याप्त ऑक्सीजन न मिल पाए
- बच्चे के ब्रेन डेवलपमेंट के समय जेनेटिक परिवर्तन के कारण
- प्रेग्नेंसी के दौरान मां को हुए गंभीर संक्रमण की वजह से
- गर्भ में बच्चे के दिमाग में चोट लग जाए
- नवजात बच्चों में घातक संक्रमण के कारण
- अगर बच्चे के दिमाग में गर्भ के दौरान ब्रेन में खून की सप्लाई बंद हो जाए

लक्षण

मसल्स में स्टिफनेस, मांसपेशियों का बहुत कमजोर होना, चलने, उठने-बैठने और बात करने में परेशानी, शरीर के एक तरफ का हिस्सा ही काम करता है। कुछ चबाने-निगलने में परेशानी, शरीर का ठीक से विकास न हो पाना, कुछ बच्चों को सुनने में भी दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। आमतौर पर इस बीमारी के लक्षण जन्म के बाद पहले वर्ष में दिखाई देते हैं। जैसे ही बच्चे में इस तरह के कोई भी लक्षण नजर आएं, बिना देर किए विशेषज्ञ को दिखाएं।

यह भी जाने

- सीपी से पीड़ित 4 में से 1 बच्चा बात नहीं कर सकता
- 4 में से 1 चल नहीं सकता
- 2 में से 1 को बौद्धिक विकलांगता है
- 4 में से 1 को मिर्गी है

नाटक 'धत्त तेरे की पार्ट 3' के मंचन के साथ नाट्य महोत्सव का समापन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिल भारतीय सांस्कृतिक संस्थान, लखनऊ द्वारा नाटक 'धत्त तेरे की पार्ट 3' का मंचन किया गया। यह नाटक गांधी जयंती नाट्य महोत्सव 2024 के समापन पर राजेंद्र तिवारी के लेखन एवं निर्देशन में शुक्रवार को गांधी भवन प्रेक्षागृह, गांधी भवन में मंचित किया गया। यह एक हास्य व्यंग नाटक है जो पागलखाना के वार्षिक महोत्सव पर किया जाता है जिसमें सभी पागल भाग लेते हैं। कोई वकील बनता तो कोई जज, कोई गवाह तो कोई वकील का क्लाइंट। पहला केस आता है जिसमें टुपूजिया और उनकी पत्नी चमेली जिनकी वकील हैं चमचिम है उनका आरोप है की मुसद्दी और उनकी पत्नी चिकनी ने उनकी मुर्गी भून कर खा ली है। दूसरा केस आता है जिसमें खूसट का आरोप है की उनके पड़ोसी पलटूराम रात में उनके घर आकर उनके साथ गंदी हरकते करके परेशान करता है। साथ ही साथ पलटूराम की पत्नी चतुरी देवी का आरोप है की खूसट की बीवी कंतरिया रात में उसके घर आकर उसके साथ गंदी हरकते करके परेशान करती है। सच तो आखिरी में डॉक्टर मोना आकर सुलझाती हैं। एक केस तो ये भी आता है कि फौलादी जिसको लड़कियों को देखकर कुछ कुछ होता था, वो अपना इलाज़ डॉक्टर केकड़ा से कराने जाते हैं। डॉक्टर केकड़ा उनकी समस्या सुलझाने की जगह उनकी समस्या ही उखाड़ लेते हैं। जिससे न वो मर्द रह जाता है और न ही औरत। इसी की शिक़ायत कोर्ट में लेकर फौलादी जाता है। इसी तरह के अजीबो-गरीब केस सभी पागल मिलकर लड़ते हैं। वकील भी ऊलजलूल दलीलें और गवाह पेश करते हैं कोर्ट में। इसमें मुख्य कलाकारों में कार्तिक पिल्लई, ध्रुव खानचंदानी, शिवदान नायक, निष्ठा तिवारी, देविका पटेल, अरुण बीरो, संगीता मिश्रा, रंजन देहूरी, अक्ष्यारिका दास, साकेत राय, नकुल शर्मा, सूर्य प्रधान, देविका पटेल, संतोष बाग, काव्या मिश्रा, मोनिका भारती, परशुराम लोखंडे, अभय यादव, ललित पांडेय, संतोष बाबुलकर, अभिषेक राज, प्रदीप श्रीवास्तव, दीपक यादव, धैर्य खानचंदानी, प्रतीक्षा गुप्ता, विशाल दुबे, संजय यादव आदि कलाकार शामिल थे। यह कार्यक्रम अश्वनी शुक्ला, अंजना तिवारी, गणेश रावत, अमित तिवारी, ललित पांडेय, निष्ठा तिवारी, राकेश वर्मा, राकेश तिवारी, आदि के प्रबंधन एवं सहयोग से संपन्न हुआ।

हर जरूरतमंद का बनवाएं आयुष्मान कार्डः मुख्यमंत्री

● जनता दर्शन में सीएम योगी ने सुनीं 300 लोगों की समस्याएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनता दर्शन में गंभीर बीमारियों के इलाज में आर्थिक सहायता की गुहार लेकर आए लोगों को आश्वस्त किया कि जिन जरूरतमंद लोगों के पास आयुष्मान कार्ड नहीं है, उनके इलाज का खर्च भी सरकार उठाएगी। इसके लिए अस्पताल से इलाज खर्च का इस्टीमेट बनाकर उनके कार्यालय को उपलब्ध कराया जाए। विवेकाधीन कोष से भरपूर मदद की जाएगी।

शारदीय नवरात्र के पहले दिन, गुरुवार दोपहर बाद गोरखपुर पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में करीब 300 लोगों से मुलाकात की। एक-एक करके उनकी समस्याएं सुनीं और निस्तारण के लिए आश्वस्त करते हुए उनके प्रार्थना पत्र संबंधित अधिकारियों को दिए। सभी लोगों को आश्वस्त किया कि किसी को भी चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। सभी लोगों की समस्याओं का समाधान कराया जाएगा।

हर बार की भांति शुक्रवार सुबह के जनता दर्शन में कई लोग इलाज के लिए आर्थिक सहायता संबंधी प्रार्थना पत्र लेकर आए थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सबको मदद का भरोसा दिया। इस दौरान एक महिला की समस्या जानते ही उन्होंने अफसरों से कहा कि उक्त महिला को हॉस्पिटल में भर्ती कराकर इलाज का इस्टीमेट मंगाइए। पैसा सरकार देगी। सीएम ने लोगों से आयुष्मान कार्ड के बारे में पूछा और अधिकारियों को निर्देशित किया कि हर पात्र व्यक्ति का आयुष्मान कार्ड बनाना सुनिश्चित करें ताकि इलाज के लिए किसी को परेशान न होना पड़े। जनता दर्शन में सीएम योगी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि हर पीड़ित के साथ संवेदनशील रवैया अपनाया जाए और उसकी समस्या का समाधान कर उसे संतुष्ट किया जाए। इसमें किसी भी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि कहीं कोई जमीन कब्जा या दबंगई कर रहा हो तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए। हर पीड़ित की समस्या का निस्तारण निष्पक्ष रूप से उसकी संतुष्टि के अनुरूप किया जाना सुनिश्चित होना चाहिए।

शुक्रवार सुबह गोरखनाथ मंदिर परिसर का भ्रमण करने के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने परिजनों के साथ मंदिर आए बच्चों को प्यार, दुलार और आशीर्वाद दिया। बच्चों को अपने पास बुलाकर उनसे बातचीत की। उनसे नाम पूछने के साथ पढ़ाई के बारे में जानकारी ली और खूब पढ़ने के लिए प्रेरित किया। बच्चों को सीएम ने चॉकलेट गिफ्ट कर विदा किया।

उत्कृष्ट योगदानकर्ताओं को मिलेगा पं. दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न सम्मान

लखनऊ। योगी सरकार के रेशम विभाग द्वारा वर्ष 2024-25 में रेशम उत्पादन और संबंधित क्षेत्रों में असाधारण योगदान देने वाले व्यक्तियों को पं. दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न सम्मान प्रदान किया जाएगा। यह सम्मान 8 विभिन्न श्रेणियों में दिया जाएगा, जिसका उद्देश्य रेशम उद्योग में नवाचार, उत्पादन और डिजाइनिंग को प्रोत्साहन देना है। रेशम क्षेत्र में उत्कृष्टता की पहचान करने और इसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह सम्मान उन व्यक्तियों को दिया जाएगा, जिन्होंने कोकून उत्पादन, रेशम फिनिश्ड प्रोडक्ट में नवाचार, सर्वोच्च कोया/ धागा विक्रय, सर्वोच्च फिनिश्ड प्रोडक्ट विक्रय, रेशम निर्मित परिधान एवं अन्य उत्पाद में सर्वोत्तम डिजाइनिंग और लाइफटाइम एचीवमेंट जैसी श्रेणियों में उत्कृष्ट कार्य किया है। उत्तर प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग मंत्री राकेश सचान ने बताया कि रेशम उद्योग प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इस सम्मान का उद्देश्य प्रदेश के उन कारीगरों और उद्यमियों को प्रोत्साहित करना है।

गौ आधारित प्राकृतिक एवं जैविक खेती को अपनायें : राज्यपाल

● चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर का 26 वां दीक्षांत समारोह सम्पन्न

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल एवं राज्य विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में शुक्रवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर का 26 वां दीक्षांत समारोह सम्पन्न हुआ। दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने कुल 601 छात्र-छात्राओं को उपाधियां तथा 62 मेधावियों को पदक एवं पुरस्कार प्रदान किया। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 14 छात्र-छात्राओं को कुलाधिपति स्वर्ण पदक, 14 छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय रजत पदक, 13 छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय कांस्य पदक एवं 21 छात्र-छात्राओं को प्रायोजित स्वर्ण पदक से प्रदान किया। राज्यपाल ने सभी उपाधियों एवं अंक-पत्रों को डिजीलॉकर पर अपलोड किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने उपाधि धारक छात्र-छात्राओं को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्हें अपने ज्ञान एवं कौशल का उपयोग करते हुए कृषि की नवीन तकनीक द्वारा गुणवत्तापरक उत्पादन के साथ कृषि में रोजगार सृजन कर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने का प्रयास करना चाहिए, जिससे इस विश्वविद्यालय एवं देश की ख्याति में वृद्धि होगी।

उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि बड़ी उपलब्धि हासिल करने के लिए लक्ष्य भी बड़े निर्धारित करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को भविष्य की आवश्यकताओं, तकनीक एवं उपलबध अवसरों के अनुसार ही आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। अपने सम्बोधन में राज्यपाल ने कहा कि देश कृषि शोध एवं शिक्षा के क्षेत्र में शानदार उपलब्धियां अर्जित कर रहा है तथा खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो रहा है और इसका श्रेय हमारे किसानों को जाता है। उन्होंने कहा कि अधिकतर जनसंख्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रही हैं। ग्रामीण महिलाएं कृषि क्षेत्र, पशुपालन, मछली-पालन, हथकरघा तथा डेरी उत्पादन आदि में अपनी सहभागिता देकर आत्मनिर्भर बन रही हैं।

पीएम किसान सम्मान निधि

18वीं किस्त से यूपी के 2.25 करोड़ से अधिक किसान होंगे लाभांवितः शाही

● प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज महाराष्ट्र के वाशिम से जारी करेंगे पीएम किसान सम्मान निधि की 18वीं किस्त

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को महाराष्ट्र के वेगॉल (वाशिम) में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में किसान सम्मान निधि की 18वीं किस्त जारी करेंगे। इससे उत्तर प्रदेश के 2,25,91,884 किसानों के खातों में कुल 4,985.49 करोड़ रुपये की धनराशि स्थानांतरित की जाएगी।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना ने किसानों की आर्थिक स्थिति को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। केंद्र और राज्य सरकार के समन्वय से उत्तर प्रदेश के किसान लगातार इस योजना का लाभ उठा रहे हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो रही है और कृषि क्षेत्र में स्थिरता आ रही है। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने केंद्र सरकार की योजनाओं को तत्परता से लागू करते हुए शानदार प्रगति की है। प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने पत्रकारवार्ता में जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में योजना की शुरुआत से लेकर जुलाई 2024 तक सभी 17 किस्तों के माध्यम से किसानों को अब तक कुल 74,492.71 करोड़ रुपये का भुगतान किया जा चुका है। इस अवधि में राज्य के 2.76 करोड़ किसानों को कम से कम एक बार इस योजना का लाभ प्राप्त हुआ है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त का वितरण 18 जून 2024 को वाराणसी में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। इस दौरान 2,14,55,237 किसानों को 4,831.10 करोड़ रुपये की धनराशि वितरित की गई थी। इसके साथ ही, जिन किसानों की किस्तें किसी कारणवश रुकी हुई थीं, उन्हें 46.70 करोड़ रुपये की राशि उनके डाटा सुधार के बाद दी गई थी। पीएम किसान सम्मान निधि की 18वीं किस्त से पूरे देश के लगभग 9.51 करोड़ किसानों लाभांवित होंगे। 20,552 करोड़ रुपये की धनराशि सीधे किसानों के बैंक खातों में स्थानांतरित की जाएगी।

परिसर के भीतर से पिक-ड्रॉप करने की अनुमति नहीं देने वाले स्कूलों की सूची हाईकोर्ट ने तलब की

विधि संवाददाता। लखनऊ

हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने आदेश के बावजूद स्कूली बच्चों के वाहनों को परिसर के भीतर जाने की अनुमति नहीं देने वाले स्कूलों की सूची तलब की है। पीठ ने कहा है कि अगली सुनवाई पर इस सम्बन्ध में यथोचित आदेश पारित किया जाएगा। मामले की अगली सुनवाई छह नवंबर को होगी।

जस्टिस आलोक माथुर एवम जस्टिस बृजराज सिंह की पीठ ने यह आदेश गोमती रिवर बैंक रेजीडेंट्स की एक विचाराधीन जनहित याचिका पर दिया है। इस याचिका में शहर के आवासीय क्षेत्रों में चल रहे स्कूलों का मुद्दा खास तौर पर उठाया गया है। पीठ ने मामले की पूर्व में हुई सुनवाई के दौरान महत्वपूर्ण आदेश देते हुए कहा था कि हजरतगंज व राज भवन के आस-पास के स्कूली संस्थान कक्षा 5 तक के बच्चों को स्कूल परिसर के भीतर से ही पिक-ड्रॉप करने की सुविधा दें। इसके लिए स्कूल वैन्स को अनुमति दी जाए। सड़क के अनियंत्रित ट्रैफिक में बच्चों को खतरा है। पीठ को इस बार की सुनवाई के दौरान संज्ञान में लाया गया कि उक्त आदेश का कुछ स्कूलों द्वारा तो पालन किया जा रहा है, लेकिन कई ऐसे स्कूल हैं जो अब भी स्कूली वाहनों को अपने परिसर के भीतर जाने की अनुमति नहीं दे रहे हैं। जबकि उनके पास पर्याप्त जगह है। पीठ ने इस पर ऐसे स्कूलों की सूची तलब की। साथ ही सम्बन्धित अधिकारियों को आदेश दिया है कि वे स्कूलों के प्रशासन से इस सम्बन्ध में वार्तालाप करें।

ताकि न हो जहांगीराबाद जैसा हादसा

पीठ ने अविनाश मेहरोत्रा मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों को लागू करने पर भी जोर दिया है। पीठ ने कहा कि जहांगीराबाद, बाराबंकी के अवध चिल्ड्रेन एकेडमी के हादसे में कुछ दिनों पहले ही वहां के भवन का निरीक्षण किया गया था और भवन को बच्चों के लिए पूरी तरह सुरक्षित भी बताया गया था। बावजूद इसके भवन का एक हिस्सा गिरने से कई बच्चे घायल हुए। पीठ ने कहा कि यह हादसा हमारे लिए आंख खोने वाली घटना है। इसी वजह से जिला और राज्य स्तर पर अलग-अलग मशीनरी बनायी गयी है। ताकि वे बच्चों की सुरक्षा का निरीक्षण करें। पीठ ने कहा कि राज्य सरकार को यह समझना चाहिए कि अधिकारियों की रिपोर्ट हमेशा सही नहीं होती। इसलिए एक ऐसा मैकेनिज्म विकसित करना होगा जिसमें विशेषज्ञों द्वारा इन रिपोर्ट्स को परखा जाए।

अवनीश अवस्थी के खिलाफ सामग्री प्रसारित करने से अमिताभ ठाकुर को रोका

विधि संवाददाता। लखनऊ

प्रदेश सरकार के सलाहकार व पूर्व आईएएस अधिकारी अवनीश अवस्थी की याचिका पर अंतरिम आदेश देते हुए हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने पूर्व आईपीएस अधिकारी अमिताभ ठाकुर को उनके खिलाफ किसी भी प्रकार की सामग्री के प्रसारण पर रोक लगा दी है। जस्टिस सुभाष विद्यार्थी की एकल पीठ ने यह आदेश दिया है। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि पहले अमिताभ ठाकुर ने सोशल मीडिया पर झूठ फैलाया कि उनके उत्तराखंड स्थित बंगले से भारी मात्रा में कैश चोरी हुआ है। इस पर उन्होंने उन्हें लीगल नोटिस भेजी तो ठाकुर ने बिना शर्त माफी मांग ली। लेकिन इसके बाद भी वह लगातार उनके विरुद्ध मानहानिकारक सामग्री सोशल मीडिया पर प्रसारित कर रहे हैं। कहा गया कि निचली अदालत ने ठाकुर के खिलाफ नोटिस तो जारी की लेकिन अंतरिम आदेश पारित नहीं किया। पीठ ने मामले की सुनवाई के पश्चात पारित। अपने आदेश में कहा है कि प्रथम दृष्टया याचिकाकर्ता अंतरिम राहत पाने का हकदार है। क्योंकि स्वयं अमिताभ ठाकुर ने उसके खिलाफ गलत तथ्य प्रसारित करने पर माफी मांगी है।

शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी के सहयोग से ही प्रगति संभवः नीरज सिंह

● भाजपा के युवा नेता ने छात्र छात्राओं को टेबलेट वितरित किए

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बख्शी का तालाब स्थित आरआर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा छात्र-छात्राओं को शिक्षा में तकनीकी सशक्तिकरण के लिए टैबलेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि युवा भाजपा नेता नीरज सिंह रहे। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में शिक्षा के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में तकनीकी आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी के सहयोग से ही प्रगति संभव है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा तकनीकी सशक्तिकरण के लिए टेबलेट वितरण कार्य अच्छा एवं सराहनीय है। इस अवसर पर संस्थान के चेयरमैन अनिल कुमार अग्रवाल, सचिव चित्रांशु अग्रवाल, निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) सूर्य प्रकाश त्रिपाठी, डीन एकेडमिक दुर्गेश वर्मा, डीन स्टूडेन्ट वेलफेयर विकास सिंह, डीन (ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट) आरती जायसवाल, चीफ प्रॉक्टर विजय बहादुर सिंह तथा अन्य संकाय सदस्यों की मौजूदगी में छात्र-छात्राओं को टेबलेट वितरित किए गए।

इंदिरा फेलोशिप कार्यक्रम से राजनीतिक क्षेत्र में सशक्त बनेगी आधी आबादीः अजय राय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि इंदिरा फेलोशिप कार्यक्रम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक पहल है, जिसे पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की स्मृति में महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में सशक्त बनाने के लिए शुरू किया गया है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हमेशा से महिलाओं को शासन के विभिन्न क्षेत्रों में, विशेष रूप से राजनीतिक प्रतिनिधित्व में, प्रोत्साहित और सशक्त करने के प्रयास किए हैं। कांग्रेस ने ऐसी नीतियों और पहलों को लागू किया है, जो राजनीति और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करती हैं।

अजय राय शुक्रवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रहे थे।

प्रेसवार्ता में पूर्व विधायक अनुग्रह नारायण सिंह, मीडिया विभाग के चेयरमैन डॉ. सीपी राय, वाइस चेयरमैन मनीष हिंदवी, प्रदेश प्रवक्ता शुचि विश्वास, डॉ. अलीमुल्लाह खान, प्रियंका गुप्ता, डॉ. सुधा मिश्रा, इंदिरा फेलोशिप कार्यक्रम के प्रदेश कोऑर्डिनेटर धनंजय सिंह, महिला कांग्रेस की प्रदेश सचिव अनामिका यादव, जिला महासचिव मंजू दीप रावत, आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

अजय राय ने कहा कि हमारे नेता राहुल गांधी, महिलाओं की राजनीति और राष्ट्र निर्माण में बड़े पैमाने पर भागीदारी सुनिश्चित करने के विचार में गहरी रुचि रखते हैं और उन्होंने महिलाओं से इस क्रांति में शामिल होने का आग्रह किया है जिसे 'शक्ति अभियान' कहा जाता है। राय ने कहा कि इंदिरा फेलोशिप शक्ति अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे उन महिलाओं के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो अपने समुदायों में स्थायी प्रभाव डालने की आकांक्षा रखती हैं। एक राजनीतिक साधन के रूप में, यह आंदोलन 'हक, हिस्सेदारी और पहचान' के बुनियादी विचारों पर आधारित है।

राय ने बताया कि महज एक वर्ष के छोटे से समय में 300 से अधिक फेलो ने 28 राज्यों और 350 ब्लॉकों में 4300 शक्ति क्लब स्थापित किए हैं, जिनमें 31000 सदस्य शामिल हैं, जो शक्ति अभियान की स्थापना और संचालन का प्रमुख केंद्र बन चुके हैं।

नाले के ओवर फ्लो से परेशान लोगों का विरोध प्रदर्शन

लखनऊ। मुलायम नगर में नाले का गंदा पानी ओवर फ्लो होने पर लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है, जिससे नाराज दर्जन भर लोगों द्वारा प्रदर्शन किया गया। नगर निगम में कई बार संपर्क करने पर भी पानी का पानी रोड पर आना बंद नहीं हुआ। कई हफ्तों से गंदगी से निकलने वाले राहगीरों और मोहल्ले वालों को जूझना पड़ रहा है। लोगों द्वारा चेतावनी देते हुए कहा कि समस्या का समाधान न होने पर नगर निगम का घेराव करने की बात कही गयी। शुक्रवार को इस्माइलगंज द्वितीय वार्ड के मुलायम नगर मछली, मीट मंडी स्थित नाला का गंदा पानी ओवरफ्लो होने से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस रोड से अजय नगर, शिवपुरी कॉलोनी, प्रीति नगर, नारायण नगर, सनातन नगर, शंकरपुरी, चर्च रोड और शिव मंदिर को जाने वाले मुख्य सड़क पर लगातार पिछले 6 महीने से नाले का गंदा पानी बह रहा है। नाला सफाई की शिकायत स्थानीय लोगों और पूर्व पार्षद रुद्र प्रताप सिंह ने कई बार नगर निगम में और मुख्यमंत्री पोर्टल पर किया।

सड़क दुर्घटना में जख्मी बुजुर्ग की आंख को डॉक्टरों ने किया ठीक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सड़क दुर्घटना का शिकार हुए एक बुजूर्ग व्यक्ति की खिसकी आंख को किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों ने सर्जरी के जरिए ठीक कर मरीज को रौशनी लौटाने में सफलता हासिल की है। दुर्घटना में बुजूर्ग की दाई आंख बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी और आंख अपने स्थान से खिसककर, नाक की हड्डी को तोड़ते हुए नाक के नीचे आ गई थी।

लखनऊ निवासी 74 वर्षीय पुरुष बीते 26 सितंबर को सड़क दुर्घटना में घायल हो गए थे। दुर्घटना में इनकी दाई आंख बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। आंख अपने स्थान से खिसककर, नाक की हड्डी को तोड़ते हुए नाक के नीचे आ गई। दुर्घटना में चोटिल बुजूर्ग को उनके परिजनों ने ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया। ट्रॉमा सेंटर में आरंभिक उपचार के उपरांत रोगी को नेत्र रोग विभाग में स्थानांतरित कर दिया गया। यहां परीक्षण पर पाया गया कि दाई आंख और फलक फट गई है एवं यह आंख अपने स्थान से खिसक गई है। रोगी के समग्र उपचार हेतु विभागाध्यक्ष नेत्र रोग प्रो अपजीत कौर के नेतृत्व में टीम गठित की गई। इसमें नाक कान गला विभाग से डा वीरेंद्र वर्मा, निश्चेतना से डा मनीष कुमार सिंह एवं अन्य चिकित्सकों में डा निभा मिश्रा, डा नीरज कुमार यादव और डा अंजली गुप्ता सम्मिलित रहे। यह एक जटिल शल्य चिकित्सा थी। इसमें रोशनी को प्रभावित किए बिना शल्य क्रिया को संपन्न करना था। चिकित्सकों ने अपनी कौशलता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए शल्य क्रिया को पूर्ण किया। बुजर्ग अब ठीक है। उनकी आंख को इसके निश्चित स्थान पर स्थापित कर दिया गया है। आंख की गति एवं रोशनी धीरे धीरे सामान्य हो रही है। कुलपति किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रो सोनिया नित्यानंद ने सफल शल्य चिकित्सा के लिए पूरी टीम को बधाई दी है।

राजधानी में पहले राष्ट्रीय इमरजेंसी मेडिसिन एंड इंटेंसिव केयर सम्मेलन आज से

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राजधानी स्थित किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी में प्रथम राष्ट्रीय इमरजेंसी मेडिसिन एंड इंटेंसिव केयर सम्मेलन का आयोजन 5 और 6 अक्टूबर को होने जा रहा है। यह सम्मेलन देशभर के इमरजेंसी मेडिसिन विशेषज्ञ डॉक्टरों और चिकित्सको को एक साथ लाने का अनूठा अवसर प्रदान करेगा। सम्मेलन में देश विदेश के विशेषज्ञ एकत्र होंगे। इमरजेंसी मेडिसिन विभाग के विभाग प्रमुख प्रो. हैदर अब्बास के मुताबिक इमरजेन्सी मेडिसिन का जन्म 21वीं सदी में हुआ है अत: यह बिल्कुल नई विशेषता है। पूर्व में इसे कैजुअल्टी कहा जाता था। इसका मुख्य उद्देश्य गोल्डेन ऑवर में गम्भीर रोगियों का उपचार करके जीवन बचाना है। हम इस माध्यम से यह भी कहना चाहते है कि आम जनता को बेसिक लाइफ सपोर्ट के लिए प्रेरित करना भी हमारा उद्देश्य है ताकि रोगी को ससमय उपचार मिल पायें। सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि और मुख्य वक्ता के रूप में प्रोफेसर मीनू बाजपेई, उपाध्यक्ष राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान परीक्षा बोर्ड नई दिल्ली शामिल होंगी। इस सम्मेलन में उप-मुख्यमंत्री बृजेश पाठक एवं प्रमुख सचिव, चिकित्सा शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा एवं कुलपति प्रो सोनिया नित्यानंद उदघाटन समारोह में उपस्थित रहेंगी। इनके साथ, देशभर के अन्य प्रमुख विशेषज्ञ और चिकित्सक भी भाग लेंगे जो इमरजेंसी मेडिसिन और इंटेंसिव केयर की जटिलताओं पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा करेंगे। इस कार्यक्रम में आस्ट्रेलिया से इमरजेन्सी मेडिसिन विशेषज्ञ डा अमन आनन्द, नेपाल सोसाइटी के इमरजेन्सी मेडिसिन के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह थापा, भूटान के नेशनल रिफरल हास्पिटल की इमरजेन्सी मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. सोना प्रधान, अपोलो हास्पिटल हैदराबाद के डॉ. इमरॉन सुभान, बैंगलुरू से डॉ. श्रीनाथ, चेन्नई से डॉ. राजादुरई सम्मिलित होंगे।

पुलिस ने चौपाल लगाकार ग्रामीणों को किया जागरूक

● ड्रोन और चोरों की दहशत को बताया अफवाह, कहा आपकी सुरक्षा प्राथमिकता

संवाददाता। मोहनलालगंज

ड्रोन और चोरों की दहशत से परेशान लोगों का डर दूर करने के लिए शुक्रवार को एसएचओ आलोक राव और एसीपी रजनीश वर्मा ने कोडरा रायपुर में चौपाल लगाकर लोगों को जागरूक किया। एसीपी ने कहा आप सबकी सुरक्षा ही पुलिस की प्राथमिकता है। ड्रोन और चोरों की दहशत को अफवाह करार देते हुए एसीपी ने ग्रामीणों को पुलिस के हर पल उनकी मदद के लिए तत्पर होने का भरोसा जगाया। एसएचओ आलोक राव ने कहा किसी से भी कतई डरने की जरूरत नही है। आप सब शांतिपूर्ण तरीके से रामलीला का पूरा लुत्फ उठाएं। किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधि नजर आने अथवा मदद की जरूरत पड़ने पर फौरन पुलिस को सूचना दें। कुछ पलों में ही पुलिस आपकी मदद के लिए आप सबके साथ मौजूद होगी। ग्रामीणों को यातायात के नियमों की जानकारी देते हुए एसीपी रजनीश वर्मा ने किसी भी सूरत में नाबालिग को वाहन चलाने की अनुमति नहीं देने की अपील की। महिला और साइबर अपराध के बारे में ग्रामीणों को जागरूक कर एसीपी ने पुलिस के विभिन्न हेल्पलाइन नंबर वितरित कर जरूरत पड़ने पर फौरन मदद लेने की अपील की। जमीनी विवाद के मामलों में कानून हाथ में न लेने और जरूरत पड़ने पर पुलिस की मदद लेने के लिए सचेत किया।

पार्थ पल्लव ने बीओबी वंडरकिड 2024 में प्राप्त किया प्रथम स्थान

लखनऊ। डीपीएस गोमती नगर एक्सटेंशन के कक्षा चार के छात्र पार्थ पल्लव ने 'बीओबी वंडरकिड -2024' प्रतियोगिता में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है , प्रतियोगिता का अयोजन अगस्त 2024 में अखिल भारतीय स्तर पर की गई थी एवम रिजल्ट की घोषणा 2 अक्टूबर को की गई। पार्थ पल्लव को पुरस्कार स्वरूप एक ट्रॉफी और 10000 रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । गांधी जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर को जयपुरिया स्कूल लखनऊ के ऑडिटोरियम में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित कर पुरस्कार दिया गया। यह जानकारी दीपक कुमार और अनामिका झा ने दी। जो वर्तमान में पावरग्रिड में डीजीएम के रूप में कार्यरत हैं। पार्थ पल्लव की इस सफलता से उनके माता-पिता व परिवार के सभी सदस्य गौरवान्वित हैं।

बेकाबू ट्रैक्टर की टक्कर से ई रिक्शा सवार बुजुर्ग महिला की मौत, आधा दर्जन जख्मी

● मोहनलालगंज में गोद भराई की रस्म पूरी कर ई रिक्शे से लौट रहा था परिवार

संवाददाता। मोहनलालगंज

गोदभराई की रस्म पूरी कर ई रिक्शे से लौट रहा परिवार नई जेल रोड पर दर्दनाक हादसे का शिकार हो गया। इंद्रजीत खेड़ा मोड़ के निकट सामने से आ रहे ईंट लदे बेकाबू ट्रैक्टर ट्रॉली ने ई रिक्शे में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बुजुर्ग महिला की मौत हो गई जबकि पांच अन्य जख्मियों का इलाज चल रहा है।

गोसाईंगंज के देइटीकर की रहने वाली सीमा की बेटी की शुक्रवार को मोहनलालगंज के कालेबीर बाबा मंदिर में गोदभराई थी। रस्म पूरी होने के बाद सीमा की मां राजरानी बुजुर्ग दादी पार्वती व भाभी पिंकी और सीमा की सास गुलाबा अपने पोते आर्यन व गांव की जलमावती के साथ ई रिक्शे में बैठकर वापस देईटीकर लौट रहे थे। नई जेल रोड पर इंद्रजीत खेड़ा मोड़ के निकट खुझौली की ओर से ईंट लेकर आ रही बेकाबू ट्रैक्टर ट्राली ने रांग साइड जाकर ई रिक्शे में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बुजुर्ग पार्वती रोड पर गिरते ही अचेत हो गई। जिन्हें सीएचसी में डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। गुलाबा को गंभीर हालत में एपेक्स ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया गया। आर्यन और जलमावती का सीएचसी में इलाज चल रहा है। वहीं राजरानी व पिंकी और गोविंद का प्राइवेट अस्पताल में इलाज चलने की बात कही जा रही है । एसीपी रजनीश वर्मा ने बताया ट्रैक्टर ट्रॉली को कब्जे में लेकर ड्राइवर को हिरासत में लिया गया है। जख्मियों को अस्पताल में भर्ती कराकर मामले की जांच की जा रही है। मोहनलालगंज के इंद्रजीत खेड़ा मोड़ पर दर्दनाक हादसे के बाद जख्मियों को अस्पताल ले जाने के लिए आसपास के लोग काफी देर तक एंबुलेंस और पुलिस को फोन मिलाते रहे। लेकिन काफी देर बाद मदद पहुंच सकी। मौके पर एक एंबुलेंस आई भी तो सभी जख्मी अस्पताल नही जा सके। अचेत पड़ी बुजुर्ग पार्वती को बाद में आई पुलिस टीम अपने साथ सीएचसी ले गई लेकिन तब तक उनकी सांसे थम गईं।

डिप्टी सीएम केशव मौर्य का कार्यक्रम निरस्त होने पर प्रभारी मंत्री व अन्य कार्यक्रम में हुए शामिल

संवाददाता। अंबेडकर नगर

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के जनपद अंबेडकर नगर में प्रस्तावित भ्रमण कार्यक्रम के अपरिहार्य कारणों से निरस्त होने के उपरांत मुख्य अतिथि राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) खेल एवं युवा कल्याण उत्तर प्रदेश/प्रभारी मंत्री गिरीश चंद्र यादव, विधान परिषद सदस्य डॉ. हरिओम पांडे, जिलाधिकारी अविनाश सिंह, मुख्य विकास अधिकारी आनंद कुमार शुक्ला सहित विभिन्न जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में प्राथमिक विद्यालय पूरा बक्शराय में ग्राम चौपाल एवं स्वयं सहायता समूह का भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस दौरान प्रभारी मंत्री, व अन्यों द्वारा सर्वप्रथम कृषि, बेसिक शिक्षा, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, उद्योग, पशुपालन, मत्स्य, समाज कल्याण, पंचायती राज आदि सहित दर्जनों विभागों की तरफ से सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जन कल्याणकारी एवं रोजगारपरक योजनाओं के लगाए गए स्टालों का निरीक्षण किया। तदोपरांत ग्राम चौपाल एवं स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर प्रभारी मंत्री, द्वारा विभिन्न लाभार्थियों को मुख्यमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) का स्वीकृति पत्र, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की चाभी वितरण तथा 407 स्वयं सहायता समूहों को 4 करोड़ 49 लाख 70 हजार का आर. एफ. एवं सी.आई.एफ. का वितरण भी किया गया। इस दौरान प्रभारी मंत्री ने अपने संबोधन में केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा महिला उत्थान हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं उससे होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री के प्रेरणादाई मार्गदर्शन में स्वयं सहायता समूह योजना से लाभान्वित कर अब तक एक करोड़ लखपति दीदी बनाया जा चुका हैं और प्रधानमंत्री ने तीन करोड़ दीदियों को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य दिया हुआ है।

यह योजना लाभकारी योजना है अतः सभी दीदी आगे बढ़कर इसका लाभ उठाएं, स्वरोजगार स्थापित करें, आत्मनिर्भर बने और अपने बच्चों का बेहतर पालन-पोषण कर अच्छी शिक्षा-दीक्षा प्रदान करें तथा अपना और अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूह के दीदियों को नए कोटेदार के चयन में भी शीर्ष प्राथमिकता दी जा रही है। महिला सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सरकार द्वारा कई टोल फ्री नंबर यथा 1090, 112, 1076 आदि भी संचालित की जा रही है जिस पर हमारी माताएं, बहनें, बेटियां किसी भी प्रकार की समस्या घरेलू हिंसा आदि की शिकायत कर सकती हैं जिस पर तत्काल पुलिस मदद उपलब्ध कराती है।

ब्लाक प्रमुख ने 85 लोगों को दिलाई भाजपा की सदस्यता

सोनभद्र। शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष व सदर ब्लाक प्रमुख अजीत रावत द्वारा विकास खण्ड रावर्टसगंज के ग्राम पंचायत सिंदुरी में सभी वर्ग के लोगो को भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराया गया। इस दौरान 85 लोगो नें भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण किया। भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष व सदर ब्लाक प्रमुख अजीत रावत ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य व प्रदेश सदस्य रामचंद्र कनौजिया के दिशा निर्देश में भाजपा अनुसूचित मोर्चा द्वारा महापर्व सदस्यता अभियान तीव्र गति से चलाया जा रहा है जिसमें अधिक से अधिक घरों तक पहुंच कर लोगों को जोड़ने का काम किया जा रहा है।

समाज के विकास से जुड़ी है महिलाओं की आत्मनिर्भरता: आरपी सिंह

संवाददाता। सोनभद्र

दिशिता महिला मंडल के नवीनीकृत भवन का उद्धघाटन बतौर मुख्य अतिथि हिण्डालको रेनुसागर के यूनिट हेड आर पी सिंह ने नारियल फोड़ कर व फीता काटकर किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के अलावा दिशिता महिला मंडल की अध्यक्षा इंदु सिंह ऑपरेशन हेड मनीष जैन हेड एच आर शैलेश विक्रम सिंह संजय श्रीमाली एवं कविता माली मौजूद रहे। तत्पश्चात कविता श्रीमाली ने नवीनीकृत भवन का मुख्य अतिथि को निरीक्षण कराया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि यूनिट हेड आर पी सिंह ने कहा कि महिलाओं की आत्मनिर्भरता देश और समाज के विकास से जुड़ी हुई है। महिलाएं समृद्धि और उत्थान के अहम हिस्सा हैं उनका सकारात्मक योगदान समाज को फ़ायदा पहुंचाता है। दिशिता महिला मंडल की अध्यक्षा इंदु सिंह ने

आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होने जा रहा है।

इस अभियान में ग्रामीण महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। वे कृषि पशुपालन सिलाई कढ़ाई कशीदाकारी व्युटीशियन एवं खाद्य पदार्थो आदि का व्यवसाय कर अपने परिवारों को समृद्ध बनाने के साथ साथ रोजगार सृजन और वित्तीय आधार को मजबूत करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढांचे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह केवल एक इमारत का नवीनीकृत नही है बल्कि हमारे सपनों हमारी इच्छाओं और हमारे सामूहिक प्रयासों का प्रतीक है।

इसमें महिलाओं के विचारों का आदान प्रदान होगा। जहां महिलाएं अपने अंदर छिपे हुनर को पहचानती है वही हम एक दूसरे का हाथ थाम कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

तूलिका श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर शैलेश विक्रम सिंह मनीष जैन संजय श्रीमाली मनु अरोरा नवींद्र कुमार पाठक कर्नल जयदीप मिश्रा कुमार हर्षवर्धन अनिल झा सदानन्द पांडेय के आर संतोष सहित भारी संख्या में दिशिता महिला मंडल की सदस्यायें मौजूद रहीं।

एंटी करप्शन टीम ने रिश्वत लेते हुए लेखपाल को किया गिरफ्तार

सोनभद्र। मीरजापुर एंटी करप्शन की टीम ने तेलगुड़वा स्थित अस्थायी कार्यालय से कोटा-डाला के लेखपाल राजकुमार मिश्रा को 20 हजार रुपये रिश्वत लेते शुक्रवार को रंगेहाथ गिरफ्तार कर लिया। विशेष किस्म के पाउडर लगे 20 हजार रुपये के नोट को जैसे ही शिकायतकर्ता ने लेखपाल को दिया, टीम ने उसे पकड़ लिया। हाथ धुलवाने पर उसका हाथ लाल हो गया। इस पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपित लेखपाल ने भूमि संबंधी मामले का निस्तारण करने के लिए पीड़ित व्यक्ति से 50 हजार रुपये की रिश्वत मांगी थी, जिस पर 20 हजार रुपये पर मामला तय हुआ था। ग्राम पंचायत कोटा के लेखपाल राजकुमार मिश्रा पर घूस लेने का आरोप ग्रामीण काफी दिनों से लगा रहे थे। एंटी करप्शन मीरजापुर की टीम को शिकायत मिली थी कि ग्राम पंचायत कोटा के लेखपाल भूमि का धारा 80 कराने के नाम पर घूस मांग रहे हैं। इस शिकायत पर टीम शुक्रवार को दोपहर बाद करीब डेढ़ बजे लेखपाल के तेलगुड़वा स्थित अस्थायी कार्यालय के पास पहुंची और कार्रवाई की। चोपन थाना प्रभारी निरीक्षक विजय कुमार चौरसिया ने बताया कि मीरजापुर से एंटी करप्शन की आई 12 सदस्यी टीम में इंस्पेक्टर दिनेश, कृष्ण मोहन राय, पतिराज आदि ने गिरफ्तारी की है। ग्राम पंचायत कोटा निवासी पवन जायसवाल ने लेखपाल से भूमि को धारा 80 कराने के लिए कहा था, जिसके एवज में लेखपाल ने 50 हजार रुपये घूस की मांग की थी। इसे देने से पवन ने साफइंकार कर दिया था। बाद में लेखपाल ने 20 हजार रुपये मांगा था, जिस पर मामला तय हुआ था। इसकी शिकायत पवन ने एंटी करप्शन मीरजापुर की टीम से की थी।

पहले से तय समयानुसार लेखपाल ने तेलगुड़वा स्थित अपने कार्यालय में पवन से 20 हजार रुपये नकद लिया। जिसे पवन ने कागज में लपेट कर दिया था। दिये गये नोटों पर विशेष किस्म का पाउडर लगा था।

डेंगू संक्रमण के बढ़ते मामलों के दृष्टिगत क्षेत्रों में चलाएं विशेष सफाई अभियान: जिलाधिकारी

संवाददाता। प्रयागराज

जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार मांदड़ की अध्यक्षता में संगम सभागार में शारदीय नवरात्र के अवसर पर नारी सुरक्षा नारी सम्मान नारी स्वावलम्बन हेतु प्रारम्भ हो रहे मिशन शक्ति के पंचम चरण की तैयारियों के सम्बंध में कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में जिलाधिकारी ने कहा कि मिशन शक्ति अभियान मुख्यमंत्री के मुख्य प्राथमिकता वाले कार्यक्रमों में से एक और यह मिशन शक्ति का पंचम चरण आज से 90 दिनों तक चलेगा।

उन्होंने सभी कार्यालयाध्यक्षों से मिशन शक्ति अभियान को गम्भीरता से लेते हुए इससे सम्बंधित सभी कार्यक्रमों को आयोजित कराया जाना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है। साथ ही साथ प्रत्येक कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोगों का प्रतिभाग कराया जाना सुनिश्चित करने के लिए कहा है। कार्यशाला में जिला प्रोबेशन अधिकारी सर्वजीत सिंह के द्वारा मिशन शक्ति अभियान हेतु विभागवार प्रस्तावित कार्ययोजना और रूपरेखा एवं प्रत्येक विभाग से सम्बंधित कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी। उन्होंने गृह विभाग महिला एवं बाल विकास विभाग युवा कल्याण विभाग बेसिक शिक्षा विभाग माध्यमिक शिक्षा विभाग उच्च शिक्षा नगर विकास विभाग चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्कृति विभाग पंचायतीराज विभाग ग्राम्य विकास विभाग राजस्व विभाग के मिशन शक्ति से सम्बंधित कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके उपरांत जिलाधिकारी ने दशहरा दुर्गा पूजा और मूर्ति विसर्जन के दृष्टिगत सभी उप जिलाधिकारियों और खण्ड विकास अधिकारियों को दुर्गा मंदिरों में और आसपास विशेष साफ सफाई की व्यवस्था एवं रात्रिकालीन प्रकाश की व्यवस्था कराए जाने के लिए कहा है।

उन्होंने सभी तालाबों में रैम्प सीढ़ी साफ सफाई सील्ट की सफाई कराए जाने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने डेंगू के केसों के दृष्टिगत नगर व ग्रामीण क्षेत्रों में साफ सफाई का विशेष अभियान चलाये जाने के लिए कहा है।

उन्होंने जिला पंचायत राज अधिकारी से ग्राम प्रधानों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में साफ सफाई एण्टी लार्वा का छिड़काव जल जमाव वाले स्थानों को चिन्हित कर जल निकासी की व्यवस्था कराए जाने और अन्य आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने इसके पश्चात गौशालाओं में व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने हेतु सम्बंधित अधिकारियों के साथ अद्यतन उपलब्ध सुविधाओं और व्यवस्थाओं की समीक्षा की।

उन्होंने सभी खण्ड विकास अधिकारियों को उनके क्षेत्र से सम्बंधित गौशालाओं का प्रत्येक सप्ताह भ्रमण कर आख्या प्रस्तुत करने के लिए निर्देशित किया है।

क्विक न्यूज

सकलडीहा में मां शैलपुत्री का दर्शन कर भक्त हुए निहाल

सकलडीहा, चन्दौली। शारदीय नवरात्र के पहले दिन दुर्गापूजा सेवा समिति की ओर से सकलडीहा कस्बा के दुर्गा मंदिर पर मां शैलपुत्री की झांकी सजायी गयी थी। शाम को 6 बजे पट खुलते ही भक्तों ने जयकारा लगाते हुए मां का दर्शन पूजन कर निहाल हो होगये। इस दौरान देर रात तक रामलीला का मंचन देखने के लिये महिला और ग्रामीणों की भीड़ उमड़ पड़ा था। सुरक्षा को लेकर कोतवाल संजय कुमार सिंह के नेतृत्व में पुलिस देर रात तक चक्रमण करती रही। हर साल की तरह दुर्गा मंदिर पर नव दिवसीय झांकी दुर्गा पूजा सेवा समिति की ओर से निकाला जा रहा है। पहले दिन मां शैलपुत्री की डोली के रूप में झांकी सजायी गयी थी। मंदिर पर सुबह से ही महिला और ग्रामीणों की दर्शन पूजन के लिये भीड़ उमड़ पड़ा था। शाम को 6 बजे आरती के लिये पट खुलते ही भक्तों का जयकारा शुरू होगया। भक्तों ने माता का जयकारा लगाते हुए प्रसाद ग्रहण किया। देर रात तक रामलीला में रामजनम, विश्वा मित्र आगमन, और ताड़का वध का मंचन रामलीला कलाकारों द्वारा किया गया। इस मौके पर समिति के अध्यक्ष लालचंद सेठ,पवन वर्मा, नंदन सोनी, संत लाल चौरसिया, डा. अभय वर्मा, राजू जायसवाल, सोनू सहित कोतवाली पुलिस फोर्स मौजूद रही।

19 किलो गांजे के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

मुग़लसराय, चंदौली। चेकिंग के दौरान मुग़लसराय पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली है। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर 19 किलो गांजा के साथ दो तस्कर को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार गांजा तस्कर ने बताया कि गांजा की खेप वाराणसी किसी भांग की दुकान पर बेचने के लिए ले जा रहे थे। पुलिस आरोपी के खिलाफ वैधानिक कार्यवाई कर उन्हें जेल भेज दिया। मिली जानकारी के अनुसार चेकिंग के दौरान मुगलसराय पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर दो संदिग्ध युवकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने यह करवाई औद्योगिक नगर क्षेत्र के मिल्कीपुर-ताहीरपुर बॉर्डर के समीप की है। आरोपियों के पास से 19 किलो गांजा बरामद किया गया है। आरोपियों ने बताया कि गांजे की यह खेप वाराणसी में भांग की दुकान पर बेचकर जो पैसे मिलते आपस मे बांट लेते। गिरफ्तार किए गए गांजा तस्कर नीरज कुमार निवासी लक्खीसराय बिहार का बताया गया। वहीं दूसरा आरोपी रोहित माली निवासी जौनपुर यूपी बताया गया। आरोपियों के खिलाफ थाना मुगलसराय में मुकदमा दर्ज कर अग्रिम कार्यवाई में जुट गई है।

मानव तस्करी की रोकथाम के लिए चलाया गया अभियान

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में जनपद में मानव तस्करी, बाल श्रम, बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में शुक्रवार को थाना मानव तस्करी रोधी इकाई, जिला बाल संरक्षण इकाई व चाइल्ड हेल्पलाइन यूनिट के संयुक्त टीम द्वारा थाना रावर्टसगंज अन्तर्गत उरमौरा, कस्बा सहित विभिन्न स्थानो पर मानव तस्करी एवं बाल भिक्षा वृत्ति रोकथाम हेतु विशेष अभियान चलाया गया। इस दौरान जिला बाल संरक्षण इकाई सोनभद्र से ओआरडब्ल्यू शेषमणि दुबे द्वारा बताया गया कि अभियान के दौरान सूत्रों से जानकारी प्राप्त हुई थी की रावर्टसगंज कस्बा मे एक ब्यक्ति द्वारा नाबालिग बच्चे को अपने घर मे रखकर घर का काम करवाया जा रहा है। जिसके संबंध में टीम द्वारा मौके पर पहुंच कर जाचं किया गया टीम द्वारा सम्बंधित नियोक्ता को बच्चे के उम्र से सम्बंधित साक्ष्य सहित बाल कल्याण समिति के समक्ष उपस्थित होने हेतु निर्देशित किया गया है। सुधा गिरी नें बताया कि बच्चों के सुरक्षा एवं संरक्षण से सम्बंधित सूचना तत्काल चाईल्ड हेल्पलाइन टोल फ्री नम्बर 1098 पर सूचित कर सकते है। प्रभारी निरीक्षक रामजी यादव नें बताया कि यह विशेष जागरूकता एवं रेस्क्यू अभियान जनपद स्तर पर संयुक्त टीम द्वारा चलाया जा रहा है।

विद्युत मजदूर पंचायत प्रतिनिधियों ने एसई को सौंपा ज्ञापन

गाजीपुर। विद्युत मजदूर पंचायत शाखा के मंडल अध्यक्ष अरविंद श्रीवास्तव के नेतृत्व में विद्युत वितरण मंडल लाल दरवाजा पर अधीक्षण अभियंता को संविदा कर्मियों के बकाया भुगतान के लिए ज्ञापन सौंपा जिसमे अरविंद श्रीवास्तव ने बताया कि विगत कई महीनो से विद्युत विभाग के वितरण खंडो में जूनियर इंजीनियर एवं उपखंड अधिकारी द्वारा उपकेंद्रों के अनुरक्षण एवं परिचालन में लगे संविदा कर्मियों की उपस्थिति विवरण ही खंड को नहीं प्रेषित किया गया है। जिससे सभी संविदा कर्मियों को विगत कई महीनो से बकाया वेतन का भुगतान नहीं हो पा रहा है,और लगे हाथ दुर्गा पूजा एवं दशहरा जैसे महत्वपूर्ण त्यौहार पडने के कारण त्यौहार का रंग फीका पडने की उम्मीद है। मंडल अध्यक्ष अरविंद श्रीवास्तव ने नए अधीक्षण अभियंता का जनपद में मंडल का कार्यभार संभालने पर शुभकामना देते हुए पूर्ण सहयोग का वचन दिया और अधीक्षण अभियंता से मांग किया कि तत्काल संविदा कर्मियों के उपस्थिति विवरण मंगाते हुए उनके बकाए वेतन का भुगतान व्यवस्था कराने हेतु अनुरोध किया जिससे संविदा कर्मियों के परिवार के पोषण में सहूलियत मिल सके।

श्री रामलीला कमेटी के तरफ से श्री राम व निषाद राज के मिलन का हुआ मंचन

संवाददाता। गाजीपुर

अति प्राचीन रामलीला कमेटी हरिशंकरी की ओर से 3 अक्टूबर गुरुवार को हरिशंकरी श्री राम सिहासन से प्रभु श्री राम लक्ष्मण सीता की शोभायात्रा बाजे गाजे के साथ शाम 6 बजे से शुरू हुआ। जो महाजनटोली, झुन्नू लाल चौराहा, आमघाट, ददरी घाट चौक, महुआबाग चौक होते हुए पहाड़ खां पोखरा के निकट राम जानकी मंदिर तक पहुंच कर समाप्त हुआ।

बताते चलें कि प्रभु श्री राम माता पिता के आज्ञा अनुसार 14 वर्ष के लिए लक्ष्मण और सीता के साथ वन के लिए प्रस्थान कर देते हैं। वनवास के दौरान प्रभु श्री राम पहला विश्राम तमसा नदी के तट पर करते हैं। इसके बाद रथ पर सवार होकर श्रृंगवेरपुर के लिए चल देते हैं। वहां के राजा निषाद राज जब अपने दूतों के द्वारा अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के पुत्र श्री राम के आने की सूचना पाते हैं। यह सुधिगुहं निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बुलाई। वे अपने दरबारियों और मंत्री के साथ श्रीराम के स्वागत के लिए अपने दरबार से चल देते हैं।

वे श्रीराम को देख कर अति प्रसन्न होते हैं, तथा उन्हें अपने राज दरबार में चलने का आग्रह करते हैं। श्री राम ने उनके आग्रह को अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि मुझे 14 वर्ष तक वन में ही समय बिताना है। निषाद राज के काफी अनुनय विनय के बाद भी श्रीराम ने उनके दरबार में जाने से इनकार करते हुए कहते हैं कि मेरे लिए आप इसी वृक्ष के नीचे ठहरने की व्यवस्था करें। श्रीराम के कथनानुसार निषाद राज ने उनके ठहरने की समुचित व्यवस्था अपने मंत्री द्वारा करवाते हैं। श्री राम व निषाद राज का मिलन हुआ। इस मौके पर कार्यवाहक अध्यक्ष विनय कुमार सिंह, मंत्री ओमप्रकाश तिवारी, उप मंत्री लव कुमार त्रिवेदी, मेला प्रबंधक मनोज कुमार तिवारी, मेला उप प्रबंधक मयंक तिवारी, कोषाध्यक्ष रोहित कुमार अग्रवाल, सरदार राजन सिंह, उपस्थित रहे।

सीएमओ ने किया स्वास्थ्य कैम्प का निरीक्षण

अंबेडकर नगर। आजाद समाज पार्टी से बहुजन समाज पार्टी के नेता राजेश कुमार पूर्व लोकसभा प्रत्याशी मोहनलालगंज को प्रभारी,प्रत्याशी बनाया गया है जिन्होंने दो माह पूर्व बहुजन समाज पार्टी को छोड़कर नगीना सांसद राष्ट्रीय अध्यक्ष आजाद समाज पार्टी चंद्रशेखर आजाद की नीतियों से प्रभावित होकर आजाद समाज पार्टी का दामन थामा था। आजाद समाज पार्टी ने कटेहरी विधानसभा से दलित प्रत्याशी उतारकर बड़ा दांव खेला है। यह जानकारी आजाद समाज पार्टी के अंबेडकर नगर जिला अध्यक्ष जय सिंह राणा ने दी है। उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री जी व प्रधानमंत्री की महिलाओं बेटियों को समाज में बराबरी पर खड़ा करना चाहते हैं और देश को दुनिया का सबसे मजबूत देश बनाना चाहते हैं। इस अवसर पर एमएलसी द्वारा अपने उद्बोधन में मुख्यमंत्री के प्रेरणादाई नेतृत्व में स्वयं सहायता समूह की दीदियों एवं जन सामान्य हेतु वृहद स्तर पर तीव्र गति से कराए जा रहे हैं।

न्यूरोलॉजिकल समस्याओं में देरी होने से स्थिति हो सकती है गंभीर

प्रयागराज। यह पहल स्थानीय स्तर पर परामर्श और निरंतर देखभाल प्रदान करने के उद्देश्य से है। मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल लखनऊ ने प्रयागराज में अपनी विशेष कार्डियोलॉजी और न्यूरोलॉजी ओपीडी सेवाओं के शुभारंभ की घोषणा की है। डॉ विजयंत देवेनराज डायरेक्टर एंड हेड कार्डियोथोरेसिक एंड वास्कुलर सर्जरी और डॉ तुषार कांत अरोड़ा कंसल्टेंट न्यूरोसर्जरी न्यूरो ऑन्कोलॉजी एंड स्पाइन सर्जरी मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल लखनऊ की उपस्थिति में यह शुरुआत मरीजों को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है।

ताकि उन्हें सुपरस्पेशलिस्ट एक्सपर्टस से सलाह लेने के लिए अन्य बड़े शहरों की यात्रा करने की असुविधा का सामना न करना पड़े। डॉ विजयंत देवेनराज वेरासिटी क्लिनिक में और डॉ तुषार कांत अरोड़ा गुरु गोविंद सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल में हर महीने के पहले शुक्रवार को सुबह ग्यारह बजे से दोपहर तीन बजे तक ओपीडी के लिए उपलब्ध रहेंगे।

डॉ विजयंत देवेनराज ने कहा यह देखकर दुख होता है कि काफी कम उम्र में युवा मरीजों को दिल की सर्जरी की जरूरत पड़ रही है। यह समस्या पहले चालीस साल से कम उम्र के लोगों में दुर्लभ मानी जाती थी। यह स्थिति की गंभीरता को दर्शाता है और इसके लिए तुरंत हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

डॉ तुषार कांत अरोड़ा ने कहा न्यूरोलॉजिकल समस्याओं में देरी से इलाज करने पर स्थिति गंभीर हो सकती है। इसलिए इन समस्याओं का जल्द से जल्द इलाज बहुत ज़रूरी है। हमने प्रयागराज में अपनी सेवाएं शुरू की हैं ताकि लोगों को न्यूरोलॉजिकल समस्याओं से जुड़ी किसी भी तरह की परेशानी होने पर सही समय से मदद मिल सके।

विंध्य महोत्सव का विधायक व डीएम ने किया शुभारंभ

संवाददाता। मीरजापुर

मां विन्ध्यवासिनी देवी के धाम विन्ध्याचल में चल रहे शारदीय नवरात्र मेला के दौरान स्थानीय रोजवेज परिसर में उत्तर प्रदेश विन्ध्य तीर्थ विकास परिषद (पर्यटन/संस्कृति विभाग) एवं जिला प्रशासन के द्वारा आयोजित नव दिवसीय विन्ध्य महोत्सव-2024 का शुभारम्भ विन्ध्यवासिनी देवी के चित्र पर मायार्ल्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर विधायक नगर रत्नाकर मिश्र व जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारम्भ किया।

इसके पूर्व रोडवेज परिसर विन्ध्याचल में ही सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ के द्वारा केन्द्र सरकार एवं प्रदेश सरकार के द्वारा संचालित विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के वृहद प्रचार प्रसार हेतु लगाए गए चित्र प्रदर्शनी का फीता काटकर मा0 विधायक नगर व जिलाधिकारी द्वारा उद्घाटन किया गया। तत्पश्चात प्रदर्शनी में भ्रमण कर अवलोकन किया गया। विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी नवरात्र मेला में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ हैं, जिसमें भारी संख्या श्रद्धालु पहुंचकर प्रदर्शनी को देखकर सरकार के जन कल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों के बारे में जागरूक हो रहें हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात विधायक नगर द्वारा उपस्थित श्रद्धालुओं/जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए विन्ध्य क्षेत्र की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि वर्ष में प्रत्येक तीन माह में एक नवरात्र आता है। उन्होंने कहा कि चैत्र नवरात्र से शुभारम्भ होकर आषाढ के बाद क्वार माह में नवरात्र आता है इसके बाद पूष एवं माघ माह में भी नवरात्र का वर्णन शास्त्रो में उल्लेख मिलता है। उन्होंने बताया कि चैत्र नवरात्र एवं शारदीय नवरात्र के बारे में सभी को भलीभाति मालूम हैं परन्तु अन्य नवरात्र को गुप्त नवरात्र कहा जाता हैं।

उन्होंने कहा कि इस दौरान हम सभी लोग मां दुर्गा आदिशक्ति की आराधना करते है, इसमें अधिकांश लोग नव दिनों तक निराजली व्रत रहते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे देश के मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी पूरे नवरात्र भर केवल नीबू और पानी का सेवन कर व्रत रहते हैं। उन्होंने बताया कि गत नवरात्र के दिनो में प्रधानमंत्री जी अपने अमेरिका भ्रमण के दौरान भी जब उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया गया तो वहां पर भी वे केवल नीबू पानी पीकर मां शक्ति से आराधना करते है कि इतना शक्ति प्रदान करे कि समाज में फैली असमाजिकता, भ्रष्टाचार आदि को मुक्त करते हुए देश को एक मजबूत राष्ट्र बनाते हुए जन-जन की सेवा कर सकें। उन्होंने कहा कि आज भी प्रधानमंत्री जी तपस्वी जीवन व्यतीत कर रहें हैं।

उन्होंने प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की चर्चा करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री जी दिन रात जन सेवा कर रहे है। उन्होंने कहा कि तमाम सरकारे आई और गई लेकिन मां विन्ध्यवासिनी के धाम के लिए किसी ने चिन्ता नही की जबकि लगभग हर प्रदेश के बड़े नेता व मुखिया यहां आकर दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि विन्ध्याचल सकरी गलियों के कारण पहले यात्रियों को दर्शन करने व आने जाने में काफी दिक्कतें होती थी। उन्होंने कहा कि विन्ध्य कारीडोर के निमार्ण से जहां यहां आने वाले दर्शनार्थियों/श्रद्धालुओं की बढ़ोतरी हुई है वही पर विन्ध्याचल के लोगो एवं यहां के व्यापारिक प्रतिष्ठानों का कम से कम 05 गुना आय में बढ़ोतरी भी हुई हैं।

नवरात्र पर खाद्य सुरक्षा के दृष्टिगत छापेमारी कर लिए वस्तुओं के नमूने

अम्बेडकर नगर। आयुक्त, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन तथा जिलाधिकारी के आदेश के अनुपालन में सहायक आयुक्त (खाद्य) ग्रेड-2 श्रवण कुमार त्रिपाठी के निर्देशन में नवरात्रि पर्व के अवसर आम जनमानस को सुरक्षित खाद्य,पेय पदार्थ उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुरेन्द्र वर्मा के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन के सचल दल द्वारा विशेष अभियान चलाकर जनपद के विभिन्न स्थानों पर औचक छापेमारी करते हुए कुट्टू आटा, किशमिश, साबूदाना, सिंघाड़ा आटा, तिन्ना चावल, मूंगफली दाना इत्यादि खाद्य पदार्थों के कुल 12 नमूनें संग्रहित कर खाद्य विश्लेषक, उप्र की प्रयोगशाला को जांच हेतु प्रेषित किया गया। संतोष प्रोविजन स्टोर, पटेलनगर अकबरपुर के प्रतिष्ठान से 23 किग्रा0 मूंगफली दाना मिथ्याछाप एवं अधोमानक होने के संदेह पर खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 की सुसंगत धाराओं में जब्त किया गया जिसका अनुमानित मूल्य रूपये 3450/- है।

जन स्वास्थ्य के दृष्टिगत जनपद के समस्त खाद्य कारोबारकर्ताओं को निर्देशित किया जाता है कि कुट्टू आटा,सिंघाड़ा आटा जिसकी पैकिंग तिथि तीन सप्ताह से अधिक हो चुकी हो या बिना पैकिंग तिथि अथवा खुला हो, की बिक्री कदापि न की जाय।

डॉ. राजीव मिश्रा को लखनऊ में मिला राज्य स्तरीय पुरस्कार

प्रयागराज। राज्य रक्त संचरण परिषद उत्तर प्रदेश और डॉ राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ के तत्वावधान में राष्ट्रीय रक्तदान दिवस के अवसर पर आयोजित शतक वीर रक्तदाता डॉ राजीव मिश्रा को उत्तर प्रदेश राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार डॉ राजीव मिश्र को देश के 25 राज्यों में जाकर रक्तदान करना और इसके प्रति जागरूक कर साथ ही साथ सैकड़ों लोगों की जान बचाने के लिए दिया गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रंजन कुमार सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण उत्तर प्रदेश अमृत सोनी उपाध्यक्ष राज्य रक्त संचरण परिषद उत्तर प्रदेश रविन्द्र कुमार आईएएस निदेशक राज्य रक्त संचरण परिषद उत्तर प्रदेश डॉ सीएम सिंह निदेशक डॉ राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ के आडोटोरियम में उत्तर प्रदेश राज्य पुरस्कार दिया गया। अमृत सोनी रक्त संचरण परिषद उत्तर प्रदेश ने कहा कि बर्ष 2023 24 में रक्तदान शिविर लगाने वाले संस्था ब्लू क्रॉस आर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष और रक्तदान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने वाले डॉ राजीव मिश्रा को रक्तदान महादान के प्रति जागरूकता के लिए दिया गया। राज्य रक्त संचरण परिषद उत्तर प्रदेश के उप निदेशक डॉ गीता अग्रवाल ने कहा कि आप सभी युवाओं को रक्तदान के प्रति जागरूक होना चाहिए। यह एक निस्वार्थ और पुनीत का कार्य हैं और यह कार्य अपने आप में महानता की संज्ञा देता है। आज भी हमारे देश में खून की कमी है। इस लिए जागरूकता की कमी है सरकार भी प्रयास कर रही है इस कमी को कैसे दूर किया जाए।

हरियाणा चुनाव
कांटे की टक्कर

हरियाणा चुनाव में कांटे की टक्कर है। भाजपा-जजपा गठबंधन टूटने तथा कांग्रेस विद्रोहियों ने अनिश्चितता बढ़ाई है। 5 अक्टूबर, 2024 को चुनाव में हरियाणा का राजनीतिक परिदृश्य जबरदस्त टकराव तथा गठबंधनों में बदलाव से परिभाषित हो रहा है। यह चुनाव भारतीय जनता पार्टी-भाजपा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिसने 2019 में दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी-जजपा के समर्थन से सरकार बनाई थी, पर अब वह अकेले चुनाव मैदान में उतरी है। भाजपा-जजपा गठबंधन टूटने से भाजपा को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि उसे चुनाव तक अल्पमत सरकार चलानी पड़ी है। अपने पूर्व सहयोगी जजपा के अलग होने के बाद सत्तारूढ़ भाजपा अपने विकास एजेंडे पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। वह जनता को गिना रही है कि उसने ढांचागत विकास, शिक्षा तथा महिलाओं की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण काम किए हैं। लेकिन पार्टी को खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जहां कृषि सुधार जैसे मुद्दों पर भारी विरोध था। कांग्रेस स्वयं को भाजपा के मुख्य विकल्प के रूप में पेश कर रही है। भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में पार्टी को ग्रामीण क्षेत्रों में, खासकर जाट मतदाताओं में व्यापक समर्थन मिलने की उम्मीद है और वह भाजपा सरकार के प्रति कथित असंतोष का लाभ उठाने का प्रयास कर रही है।

दुष्यंत चौटाला अपनी पार्टी का अलग विमर्श बनाने के लिए स्वयं की भाजपा की नीतियों से दूरी बना रहे हैं तथा 'किसान-हितैषी सुधारों' की पैरवी कर रहे हैं।

हरियाणा में पूरे जोश के साथ चुनाव मैदान में उतरी आम आदमी पार्टी-'आप' अनिश्चितता और बढ़ा रही है। 'आप' पड़ोसी पंजाब में मिली सफलता यहां दुहराना चाहती है। पार्टी मुख्यत: शहरी मतदाताओं को संबोधित करते हुए स्वास्थ्यरक्षा, शिक्षा और भ्रष्टाचार-विरोधी कदमों पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। पिछले वर्षों में मजबूत पार्टी रही भारतीय राष्ट्रीय लोकदल-इनेलोद ने अभय सिंह चौटाला के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी-बसपा से हाथ मिलाया है। हरियाणा में कृषि क्षेत्र केन्द्रीय मुद्दा बना हुआ है। यह नए कृषि कानूनों पर किसानों के विरोध प्रदर्शनों से पैदा हुआ जिनको अब वापस ले लिया गया है। लेकिन सरकार के प्रति किसानों का गुस्सा अभी पूरी तरह ठंडा नहीं हुआ है। विपक्षी पार्टियां, खासकर कांग्रेस और जजपा इसका प्रयोग कर ग्रामीण मतदाताओं को लामबंद करने का प्रयास कर रही हैं। इसके साथ ही हरियाणा में भारत की सर्वाधिक बेरोजगारी दर है। भाजपा और कांग्रेस ने इसे हल करने का वादा किया है। भाजपा जहां अपनी औद्योगिक पहलें गिना रही है, वहीं कांग्रेस नई रोजगार नीतियों का प्रस्ताव कर रही है। इन सबके साथ ही राज्य में 'जातीय राजनीति' का दबदबा है जो सत्ता का निर्धारण करती है। परंपरागत जाट-गैर जाट विभाजन हरियाणा का राजनीतिक परिदृश्य परिभाषित करता है। भाजपा को परंपरागत रूप से गैर-जाट समुदायों का समर्थन मिलता रहा है, लेकिन उसके सामने इस जनाधार को मजबूत करने की चुनौती है। जजपा और कांग्रेस मुख्यत: जाट मतदाताओं पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। जातीय गणित हमेशा हरियाणा के राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण रही है। इसने मतदाताओं के व्यवहार और चुनाव परिणामों को प्रभावित किया है। हरियाणा की जनसंख्या में 25-30 प्रतिशत जाट सर्वाधिक प्रभावशाली राजनीतिक जाति समूह हैं। हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस जाट तथा गैर-जाट के बीच खाई पाटने के लिए शहरी-ग्रामीण विकास योजनाओं पर ध्यान दे रही है, लेकिन उसे विद्रोहियों का सामना करना पड़ रहा है। 'जातीय गणित' का प्रबंधन करने वाले दल को ही राज्य में सत्ता मिलेगी।

एकात्म मानववाद : आदर्श एवं चुनौतियां

भाजपा पंडित दीनदयाल उपाध्यय की 108वीं जन्म जयंती मना रही है। उसके सामने 'एकात्म मानववाद' के आदर्शों तथा आधुनिक प्रशासन के बीच संगति बैठाने की चुनौतियां हैं।

के.एस. तोमर
(लेखक, राजनीति विश्लेषक हैं)

भारतीय जनता पार्टी -भाजपा आजकल दीनदयाल उपाध्यय की 108वीं जन्म जयंती मना रही है। उसके सामने 'एकात्म मानववाद' आदर्शों तथा आधुनिक प्रशासन के बीच संगति बैठाने की चुनौतियां हैं। भारतीय जनसंघ के संस्थापक तथा 'एकात्म मानववाद' की अवधारणा व आदर्श पेश करने वाले स्वर्गीय दीनदयाल उपाध्याय की 108वीं जन्म जयंती मनाई जा रही है। ऐसे में भाजपा के सामने चुनौती है कि वह इस दूरदर्शी आदर्श के अनुकूल स्वयं को कहां तक ढाल पाती है और इसे लागू करने में कहां तक सफल होती है। दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' दर्शन में विकास के प्रति समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसमें मनुष्य की बेहतरी को ध्यान में रखते हुए विकेन्द्रीकरण, स्वदेशी संस्कृति, आत्मनिर्भरता तथा नैतिक प्रशासन पर जोर दिया गया है।

हालांकि, भाजपा ने इन सिद्धान्तों को अवधारणात्मक रूप से स्वीकार किया है, पर उनको दिन-प्रतिदिन के शासन-प्रशासन में स्थापित करना व्यावहारिक रूप से कठिन चुनौती है। इस अवधारणा को लागू करने के लिए आर्थिक आदर्शों को आधुनिक नीतियों के साथ रख कर देखना जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों की भारत की वर्तमान स्थितियों से सामंजस्य बैठाना जटिल है। वर्तमान 'वैश्वीकृत' दुनिया में भारत की नीतियां पूंजी-संचालित अर्थनीति पर आधारित हैं। इन नीतियों का प्रारंभ 1990 के दशक में अपनाये गए उदारीकरण सुधारों से हुआ था जिनके केन्द्र में 'उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण'-एलपीजी नीतियां थीं।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने ऐसी आर्थिक नीतियों पर ध्यान केन्द्रित किया है जिनसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश-एफडीआई, मुक्त बाजार सुधारों तथा निजीकरण को बढ़ावा मिले। आलोचकों का तर्क है कि इनका दीनदयाल उपाध्याय की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्थ की अवधारणा से टकराव है क्योकि इसमें ग्रामीण व स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, जमीनी स्तर पर रोजगारों के सृजन तथा विदेशी पूंजी पर निर्भरता घटाने को केन्द्र में रखा गया है। सरकार ने स्वदेशी संस्कृति और वैश्वीकरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया है। दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की स्वदेशी संस्कृति के संरक्षण तथा प्रोत्साहन की पैरवी की थी। हालांकि, इसके साथ देश की आधुनिक प्रगति को भी जोड़ा गया था। इनके बीच संतुलन बनाना भाजपा के लिए आसान काम नहीं है।

राजनीतिक पार्टी के रूप में भाजपा सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्रवाद तथा परंपरागत मूल्यों पर जोर देती है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने विश्व मंच पर आयुर्वेद व योग जैसी पहलों को बढ़ावा देने के अभूतपूर्व कदम उठाए हैं। लेकिन आधुनिक जीवनशैली प्रवृत्तियों के उभार तथा तकनीकों के विकास के कारण भारत विश्व अर्थव्यवस्था से तेजी से जुड़ रहा है। ऐसे में उन गहरी सांस्कृतिक जड़ों पर प्रभाव पड़ सकता है जिनकी पैरवी दीनदयाल उपाध्याय ने की थी। भाजपा द्वारा विशिष्ट 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के विकास पर भी अनेक आलोचक सवाल उठाते हैं। उनका कहना है कि इससे दीनदयाल उपाध्याय के 'समावेशी दृष्टिकोण' से ध्यान हट सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के समक्ष नैतिक प्रशासन को बढ़ावा देने तथा शासन-प्रशासन से भ्रष्टाचार समाप्त करने की कठिन चुनौती है। दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन में नैतिक प्रशासन पर जोर दिया गया था जिसके प्रमुख तत्व निष्ठा, ईमानदारी तथा जनता की सेवा है। हालांकि, पिछले दशक में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार तथा भाजपा व राजग की राज्य सरकारों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आक्रामक अभियान छेड़ा है और मोदी समेत सभी भाजपा नेता स्वयं को 'स्वच्छ प्रशासन' का पैरोकार मानते हैं। लेकिन इसके बावजूद आलोचकों तथा विपक्षी दलों ने पार्टी पर भ्रष्टाचार, दरबारी पूंजीवाद तथा बड़े निगमों का पक्ष लेने के आरोप लगाए हैं। ऐसे आरोप मुख्यत: भूमि अधिग्रहण नीतियों तथा निजीकरण के बारे में हैं। इनसे दीनदयाल उपाध्याय के नैतिक आदर्शों के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता पर भी आलोचक सवाल उठा रहे हैं। हालांकि, विपक्ष भाजपा के खिलाफ ऐसे आरोपों को अदालतों में पुष्ट नहीं कर सका है।

भाजपा के समक्ष समावेशी समाज बनाने की चुनौती भी है। भारतीय जनसंघ के संस्थापक दीनदयाल उपाध्याय ने समावेशी समाज बनाने की पैरवी की थी जिसका अर्थ सभी समुदायों की आवश्यकतायें पूरी करना तथा सामाजिक व धार्मिक विभाजनों से ऊपर उठ कर सामंजस्य व सद्भावना सुनिश्चित करना है। भाजपा का दावा है कि उसने अपनी विभिन्न विकास योजनाओं में सामाजिक व धार्मिक विभाजनों पर ध्यान नहीं दिया है, पर आलोचकों का आरोप है कि भाजपा विभाजनकारी नीतियां, खासकर धार्मिक आधार पर अपना रही है। हिंदुत्व-संचालित नीतियों तथा समावेशन व सामाजिक सामंजस्य के विचारों के बीच संतुलन बैठाना भाजपा के लिए एक प्रमुख चुनौती बना हुआ है। इसका संबंध कथनी और करनी में अंतर से भी है।

दीनदयाल उपाध्याय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'अंत्योदय', यानी समाज के अंतिम व्यक्ति की प्रगति था। अंत्योदय का उद्देश्य समाज के सर्वाधिक हाशियाकृत की प्रगति सुनिश्चित करना है। भाजपा ने अपनी कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से इस क्षेत्र पर सर्वाधिक ध्यान दिया है। 'पीएम उज्जवला योजना' से ग्रामीण परिवारों को एलपीजी, 'पीएम आवास योजना' से गरीबों को सस्ते मकान तथा 'स्वच्छ भारत अभियान' से सफाई में सुधार के काम किए गए हैं। भाजपा ने अनेक अभियानों के माध्यम से दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों को आगे बढ़ाने का काम किया है जिनमें विश्व स्तर पर 'योग दिवस' मनाना, भारतीय भाषाओं का विकास तथा भारत की ऐतिहासिक उपलब्धियों को उजागर करना शामिल है। दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन में 'राजनीतिक विकेन्द्रीकरण' का महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसका उद्देश्य प्रशासन को लोगों के निकट लाना सुनिश्चित करना है। भाजपा ने 'सहयोगी संघवाद', जीएसटी तथा नीति आयोग के गठन जैसे कदम इस दिशा में उठाए हैं। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण-डीबीटी तथा जनधन योजना ने नागरिकों का सशक्तीकरण सुनिश्चित करने के लिए बिचौलियों को हटाया है। इससे सब्सिडी तथा कल्याणकारी योजनायें सीधे लोगों तक पहुंची हैं।

कोविड-19 वैश्विक महामारी के समय शुरू की गई 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के माध्यम से दीनदयाल उपाध्याय के आत्मनिर्भरता सिद्धान्त पर जोर दिया गया है। इसके माध्यम से स्थानीय विनिर्माण तथा घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देने के साथ ही विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता घटाने के प्रयास किए गए हैं। इस प्रकार 'मेक इन इंडिया' पहल दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन के अनुरूप है। इसके माध्यम से घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के साथ ही रोजगार सृजन को बढ़ावा मिला है। लेकिन वर्तमान समय में आधुनिक अर्थव्यवस्था का वैश्वीकृत चरित्र है। इसे देखते हुए पूर्णत: ऐसी आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था बनाना बहुत कठिन तथा चुनौतीपूर्ण है जिसका विश्व अर्थव्यवस्था तथा दूसरे देशों से कोई संबंध न हो।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक तथा महान भारतीय दार्शनिक दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन को जमीन पर उतारने का प्रयास जारी है। दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन को जमीन पर उतारने के प्रयास में सत्तारूढ़ भाजपा को अनेक सफलतायें मिली हैं, पर उसके समक्ष अनेक चुनौतियां भी हैं। हालांकि, भाजपा को राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता तथा अंत्योदय को बढ़ावा देने में अनेक अभूतपूर्व व असाधारण उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं, पर उसे सच्चा आर्थिक विकेन्द्रीकरण लाने, शासन-प्रशासन को पूर्णत: नैतिक बनाने तथा सामाजिक सद्भावना को बढ़ावा देने में काफी बाधाओं का सामना भी करना पड़ रहा है। आधुनिक प्रशासन की जटिलतायें, वैश्विक आर्थिक एकीकरण तथा राजनीतिक रणनीतियां अक्सर भाजपा को दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन से थोड़ा विचलित करती हैं। लेकिन 'एकात्म मानववाद' के आदर्श पार्टी के समक्ष प्रकाश स्तंभ की तरह हैं जिससे वह दार्शनिक आदर्शों तथा समकालीन यथार्थ के बीच बेहतर संतुलन स्थापित कर बेहतर भारत बनाने का प्रयास कर रही है।

वैश्विक व्यवस्था का पुनर्संतुलन

इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते मिसाइल हमले पश्चिम एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा हैं।

कुमारदीप बनर्जी
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

भारत के विस्तारित पड़ोस में बढ़ते हालात क्षेत्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन रहे हैं। हाल ही में इजरायल द्वारा हिजबुल्लाह के कई शीर्ष कमांडरों को मार गिराया जाना, खास तौर पर इसके शीर्ष नेता हसन नसरल्लाह की हत्या, और इजरायली क्षेत्र पर ईरानी मिसाइलों की बारिश से पश्चिम एशिया में संकट बढ़ने की संभावना है। प्रधानमंत्री मोदी ने स्थिति की संवेदनशीलता को समझा और तुरंत अपने इजरायली समकक्ष बेंजामिन नेतन्याहू को फोन किया।

भारतीय प्रधानमंत्री का इजरायल को संदेश था कि क्षेत्रीय तनाव को रोकना और सभी बंधकों की सुरक्षित रिहाई बेहद जरूरी है, आतंकवाद के किसी भी रूप और अभिव्यक्ति के लिए कोई जगह नहीं है और भारत शांति और स्थिरता की जल्द बहाली का समर्थन करने के लिए तैयार है। पिछले महीने न्यूयॉर्क में फ्यूचर समिट के दौरान प्रधानमंत्री ने फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास से मुलाकात की थी। बैठक के बाद जारी एक प्रेस बयान में कहा गया, प्रधानमंत्री ने इजरायल-फिलिस्तीन मुद्दे पर भारत की समय-परीक्षित सैद्धांतिक स्थिति को दोहराया और युद्ध विराम, बंधकों की रिहाई और बातचीत और कूटनीति के रास्ते पर लौटने का आह्वान किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि केवल दो राष्ट्र समाधान ही क्षेत्र में स्थायी शांति और स्थिरता प्रदान कर सकता है।

यह याद करते हुए कि भारत फिलिस्तीन को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन की सदस्यता के लिए भारत के निरंतर समर्थन से अवगत कराया। जब भारतीय प्रधानमंत्री अमेरिका में कई वैश्विक नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठक कर रहे थे, तब बांग्लादेश की अंतरिम

सरकार के नवनियुक्त प्रमुख मुहम्मद यूनुस को पश्चिमी नेताओं से बहुत जरूरी प्रशंसा मिल रही थी। यूनुस ने अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन, पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, अमेरिकी विदेश मंत्री, कनाडाई प्रधानमंत्री, यूरोपीय संघ के अध्यक्ष, विश्व बैंक और एडीबी के प्रमुखों से मुलाकात की। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के साथ असामान्य रूप से गर्मजोशी से मुलाकात की, जहां उन्होंने अपने द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने और क्षेत्रीय निकाय सार्क को पुनर्जीवित करने की इच्छा व्यक्त की। भारत के लिए, ये संबंध संभावित रूप से पाकिस्तान और चीन को बांग्लादेश के साथ इस नए-नए दोस्ताना संबंध का उपयोग भारत के खिलाफ अपने विध्वंसक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

लगभग उसी समय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने न्यूयॉर्क में एशिया सोसाइटी पॉलिसी इंस्टीट्यूट में अपने भाषण में वैश्विक व्यवस्था को फिर से संतुलित करने पर बात की। उन्होंने कहा, वैश्विक व्यवस्था को फिर से संतुलित करना, जिसकी शुरुआत संयुक्त राष्ट्र के 51 संस्थापक सदस्यों से हुई थी, जो पिछले आठ दशकों में चौगुनी हो गई है, जहां आपके पास न केवल दुनिया में अधिक स्वतंत्र देश हैं, बल्कि वैश्विक व्यवस्था के व्यक्तिगत सदस्यों का आर्थिक, राजनीतिक और यहां तक कि जनसांख्यिकीय भार भी स्थानांतरित हो गया है, एक ऐसे बिंदु पर स्थानांतरित हो गया है जहाँ हममें से कई लोग मानते हैं कि आज हम वास्तव में एक मोड़ पर हैं, मंत्री ने विकसित हो रही वैश्विक व्यवस्था को परिभाषित करने की कोशिश करते हुए एक ही संबोधन में बहुध्रुवीयता और बहुलवाद को सावधानी से लाया।

उन्होंने कहा, आज, हम वास्तव में एक वैश्विक परिदृश्य को देख रहे हैं जो बहुत अधिक क्षेत्रीय है, जो, जैसा कि मैंने कहा, उन देशों द्वारा अधिक विशेषता है जिनके अपने मजबूत हित हैं और जो उस हित को आगे बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। और इसलिए हम दुनिया के संदर्भ में जो कुछ भी देखते हैं, वह वास्तव में यह है कि दुनिया की अभिसरण की राजनीति वास्तव में कैसे होती है। और एक तीसरा शब्द जो मेरे दिमाग में आता है वह है बहुपक्षीयता। यह एक बहुत ही भद्दा शब्द है, लेकिन यह एक तरह से द्विपक्षीय संबंधों से परे एक ऐसी दुनिया का वर्णन करता है, जो बहुपक्षीय से कम है।

वह जहां देश इन अभिसरण और ओवरलैप के आधार पर संयोजन बनाते हैं, जिनके बारे में मैंने बात की है। और आपके पास वास्तव में देशों के समूहों की यह घटना है जो अक्सर एक सीमित एजेंडे के लिए एक साथ आते हैं, कभी-कभी अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए एक सहमत थिएटर में।

हाल की वैश्विक घटनाएं और इनमें से कई पर भारत का मापा हुआ रुख वही दर्शाता है जिसके बारे में विदेश मंत्री ने न्यूयॉर्क में बात की थी, और एक पुनर्संतुलन चल रहा है।

आप की बात

नशे का व्यापार

दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल ने 562 किलो कोकेन पकड़ी जो अब तक की सबसे बड़ी जब्ती है और जिसकी कीमत 6.5 हजार करोड़ रुपये बताई जा रही है। दिल्ली पुलिस की यह उपलब्धि उल्लेखनीय है। भारत में नशे के व्यापार और अवैध उपयोग पर सख्त पाबंदी है। इसके बावजूद आए दिन नशीले पदार्थ बड़ी मात्रा में पकड़े जा रहे हैं और यह व्यापार अरबों रुपए का हो गया है। स्पष्ट है कि इसके लिए बहुत बड़ा अंतरराष्ट्रीय गिरोह सक्रिय है। नशे के व्यापार का काफी पैसा आतंकवादियों की जेब में जाता है जिससे देश में कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब होती है। रेव पार्टी के नाम पर युवकों को नशे का आदी बनाया जा रहा है। इस पर रोक लगाने के लिए आबकारी विभाग का पूरा अमला लगा हुआ है जिसे विभिन्न एजेंसियों का सहयोग मिलता है। इसके बावजूद युवकों में नशाखोरी बढ़ती जा रही है। कई युवा इतने ड्रग एडिक्ट हो चुके हैं कि नशे के लिए पैसा जुटाने हेतु आपराधिक गतिविधियां करने लगते हैं। इनके कारण चोरियों व अन्य आपराधिक घटनायें बढ़ती जा रही है। इन सब के लिए नशे का व्यापार जिम्मेदार है। सरकार अपना काम कर रही है मगर नौजवानों को नशाखोरी की लत से बचाने के लिए परिवार तथा समाज को भी अपना दायित्व पूरी जिम्मेदारी से निभाना होगा।

-सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

जातिगत भेदभाव

विडंबना है कि 78 साल की आजादी के बाद भी देश के कुछ राज्यों में ऐसी कारागार नियमावली है जहां जाति के आधार पर बैरक आबंटित की जाती है और काम दिया जाता है। इन कारागार नियमावलियों के अनुसार बंदी या हिरासती की जाति का उल्लेख जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक निर्णय में देश के 11 राज्यों में जारी भेदभाव पर आधारित जेल नियमावली को निरस्त करने का आदेश दिया है। उसने तीन महीने में आवश्यक संशोधन का आदेश भी दिया है ताकि औपनिवेशिक काल के जातिगत भेदभाव वाले इन प्राविधानों को समाप्त किया जा सके। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय अत्यंत प्रशंसनीय है और इसे एक बड़े बदलाव के रूप में देखा जाना चाहिए। इस प्रकरण से स्पष्ट है कि देश में अब भी अनेक ऐसे औपनिवेशिक कानून मौजूद हैं जिनको तुरन्त समाप्त किया जाना चाहिए। जातिगत भेदभाव के सभी रूपों तथा अश्पृश्यता की घटनाओं को पूरी तरह समाप्त करने के लिए शासन-प्रशासन और न्यायपालिका के साथ ही राजनीतिक दलों व सामाजिक संगठनों को पहल करनी चाहिए। जातिगत भेदभाव वाले ऐसे सभी प्राविधानों को समाप्त करना विकसित भारत तथा स्वस्थ समाज बनाने हेतु अनिवार्य है।

- वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

युद्ध का विस्तार

हिज्बुल्ला प्रमुख के मारे जाने के बाद ईरान ने इजरायल पर बड़े पैमाने पर मिसाइल हमले किए हैं। इजरायल भी पूरी मजबूती के साथ हमलों का जवाब दे रहा है। उसका कहना है कि वह इस समय सात दुश्मनों से एक साथ लड़ रहा है और वह सबको तबाह करके रहेगा। अमेरिका तथा पश्चिमी देश इस युद्ध में इजरायल के साथ हैं, लेकिन वे भी अनेक कारणों से युद्ध का विस्तार नहीं चाहते हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध जारी रहने तथा पश्चिम एशिया में युद्ध का विस्तार होने से विश्व अर्थव्यवस्था पर भारी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा जो पहले से ही अनेक संकटों का सामना कर रही है। अमेरिका में अगले महीने होने वाले चुनाव के दृष्टिकोण से भी डेमोक्रेट व रिपब्लिकन किसी प्रकार इजरायल व यहूदियों के समर्थन से पीछे हटना नहीं चाहते हैं। लेकिन युद्धविराम करवाना वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आसान नहीं है। एक साल पहले इजरायल पर हुआ हमला द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यहूदियों के नरसंहार के बाद सबसे बड़ा हमला था। इजरायल की जनता तथा सरकार इस बार अपने दुश्मनों का इस सीमा तक सफाया कर देना चाहते हैं कि वे उसके लिए निकट भविष्य में खतरा न बन सकें। वर्तमान स्थिति अत्यन्त जटिल है।

- विभूति बुपक्या, खाचरोद

पैसे की गुलामी

फिल्मी गीत-ना बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रुपैया बहुत मशहूर हुआ था। आज के समय में भी यह पूरी तरह प्रासंगिक है और शायद भविष्य में भी रहेगा। पैसा ही सब कुछ हो गया है और पैसे के लिए अनेक लोगों ने अपनी विश्वसनीयता व नैतिकता की लक्ष्मण रेखा तोड़ दी है। एक अस्पताल की नर्स ने महज 5100 रुपए का नेग न मिलने पर एक नवजात शिशु की जान ले ली। इसी तरह दो युवकों ने डेढ़ लाख रुपए के आईफोन मंगवाकर डिलीवरी ब्वाय की हत्या कर दी। बहुत अफ़सोस की बात है कि रुपए पैसों के आगे इंसान की कीमत घास के तिनके से भी गई बीती हो गई है। कहा जाता है कि पहले हमारे देश में दया, करुणा व विश्वास की संस्कृति थी, लेकिन अब पैसे की गुलामी के चलते उसकी हत्या हो रही है। हालांकि, अब भी लोगों के खोए पैसे उनको तलाश कर लौटाने तथा पैसे के लालच में न पड़ कर अपरिचित लोगों की सेवा और उनकी रक्षा करने वाले लोग हैं, पर ऐसी सकारात्मक खबरें अक्सर खो जाती हैं। हमें ऐसे लोगों को सम्मान देना चाहिए।

-हेमा हरि उपाध्याय, खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

अमेठी हत्याकांडः उठते सवाल, खोज में लगी पुलिस

- प्रेम संबंध व एफआईआर हत्या की वजह तो नहीं?
- घटना से शिक्षकों में आक्रोश

संवाददाता। अमेठी

उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले में दलित परिवार के हत्याकांड ने प्रदेश को झकझोर कर रख दिया है। पुलिस इस पूरे हत्याकांड को आपसी रंजिश बता रही है। वहीं यह भी बात सामने आ रही है कि एक एफआईआर के चलते पूरे परिवार की जान चली गई है। शिवरतनगंज थाना क्षेत्र के अहोरवा भवानी कस्बे के मुख्य चौराहे पर स्थित घर में अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट सुनाई देने लगी, गोलियों की आवाज सुनकर जब लोग घर के अंदर गए तो देखा कि आंगन में सुनील और उसकी पत्नी की लाश पड़ी है। वहीं दूसरे कमरे में उसके दो मासूमों की लाश पड़ी हुई है। पुलिस ने मौके से गोली के 9 खोखे बरामद किए हैं। सूत्रों से जानकारी यह भी मिल रही है कि इस हत्या का आरोपी चंदन वर्मा को हिरासत में ले लिया गया है। बताया यह भी जा रहा है कि चंदन वर्मा अकेले ही इस नृशंत हत्या की वारदात को अंजाम दिया है। सुनील मूल रूप से रायबरेली जिले के गदागंज इलाके का रहने वाले थे। हाल ही में उनका अमेठी में ट्रांसफर हुआ था।

प्रारंभिक पुलिस जांच में पता चला है कि पूनम ने 18 अगस्त को रायबरेली में चंदन वर्मा के खिलाफ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत और छेड़छाड़ के आरोप में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। शिकायत में यह भी कहा गया था, 'अगर उसे या उसके परिवार को कुछ होता है तो इसके लिए चंदन वर्मा जिम्मेदार होगा। 'सूत्रों की मानें तो पूनम का चंदन वर्मा के साथ अफेयर चल रहा था।

इस घटना में एक बड़ी वज़ह ये भी कहा जा रहा है। वहीं चन्दन फरार हो गया है। उसका साथी दीपक सोनी पुलिस की गिरफ्त में है। जल्द पुलिस घटना का आधिकारिक अनावरण कर सकती है ड्ड अमेठी के पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा था कि इस बात की जांच की जा रही है कि हत्याएं इस मामले से जुड़ी हैं या नहीं। सुनील अपने परिवार में कमाने वाला एकमात्र सदस्य था। शुक्रवार को उनके पिता राम गोपाल ने कहा, 'हत्यारों का भी यही हश्र देखना चाहता हूं।

इस घटना को लेकर राजनीतिक दल भी सक्रिय हो गए हैं। अमेठी की पूर्व सांसद स्मृति इरानी एवं राहुल गांधी ने पीड़ित परिवार से बातचीत की है। अमेठी सांसद किशोरी लाल शर्मा भी पीड़ित परिवार से मिलने सुदामापुर गांव पहुंच कर शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया।

साथी की मौत के बाद प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष धीरेंद्र सिंह की अगुवाई में शिक्षकों ने जनपद के सभी ब्लॉक संसाधन केंद्रों पर शोक सभा कर दिवंगत की शांति के लिए प्रार्थना की। इसी क्रम में सिंहपुर में शिक्षकों द्वारा कैंडल मार्च निकाला गया।

डीएम ने की कर-करेत्तर वसूली एवं राजस्व कार्यों की समीक्षा

अमेठी। जिलाधिकारी निशा अनंत ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में कर-करेत्तर वसूली एवं राजस्व कार्यो की समीक्षा बैठक की। डीएम ने विद्युत देय, खनन, आबकारी, परिवहन विभाग, नगर निकाय, स्टाम्प ड्यूटी, बाट-माप, जीएसटी सहित अन्य विभागों की राजस्व वसूली की समीक्षा की तथा कम वसूली वाले विभाग को सुधार लाने के निर्देश दिये। जीएसटी की समीक्षा करते हुये वसूली में तेजी लाने एवं लक्ष्य की पूर्ति हेतु निर्देशित किया। स्टाम्प वसूली की समीक्षा में स्टाम्प की कमी की सम्बन्धित निर्गत आरसी की वसूली कराये जाने एवं लक्ष्य की शत् प्रतिशत पूर्ति हेतु एआईजी स्टाम्प को निर्देशित किया। इसके अतिरिक्त आइजीआरएस पोर्टल प्राप्त शिकायतों के निस्तारण, रिट याचिकाओं, खतौनी अंश निर्धारण की कार्यवाही, स्वामित्व योजना, रोस्टर के अनुसार खतौनियों का दाखिला, एंटी भू माफिया जैसे कार्यों पर अब तक की प्रगति के संबंध में जानकारी ली।

विकास खण्ड मुजेहना का जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने किया निरीक्षण

संवाददाता। गोंडा

शुक्रवार को जिलाधिकारी श्रीमती नेहा शर्मा ने सदर तहसील अंतर्गत विकास खंड मुजेहना का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने विकासखंड स्तर पर संचालित सभी योजनाओं के अधिकारियों से योजनाओं के संचालन एवं उनके प्रगति के संबंध में जानकारी ली।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने ब्लॉक कैम्पस में संचालित सभी विभागों के कार्यालय का निरीक्षण किया। साथ ही स्थापना कक्ष, मनरेगा कक्ष, कंप्यूटर कक्ष सहित सभी कार्यालय का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने ब्लॉक परिसर में निष्प्रयोज्य कार्यालय के संबंध में कड़े निर्देश देते हुए कहा कि कैम्पस में जो भी कार्यालय निष्प्रयोज हो गए हैं, उनकी कार्यवाही करते हुए निस्तारित किया जाय। वहीं निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने पंचायती राज विभाग, कृषि विभाग, समाज कल्याण विभाग, कृषि रक्षा विभाग, मनरेगा विभाग, एनआरएलएम विभाग, स्थापना लिपिक, ग्राम रोजगार सेवक, पंचायत सहायक नियुक्ति के संबंध में, भूमि रजिस्टर, अनुपालन आख्या रजिस्टर, सेवा पुस्तिका, वेतन वृद्धि, वेतन निर्धारण, विकास खंड के अकाउंट के संबंध में, ग्रान्ड रजिस्टर, ब्लॉक मुख्यालय पर वाहन के संबंध में, क्षेत्र समिति की बैठक के संबंध में, कार्य विभाजन पत्रावली, गार्ड फाइल, मोमेंट रजिस्टर सहित अन्य सभी विभागों एवं पटलों के संबंध में जिलाधिकारी ने गहन समीक्षा की।

जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान बीडीओ को निर्देश दिए हैं कि ग्राम पंचायत सचिवों के लिए एक दैनिक डायरी तैयार की जाय जिसमें उनके द्वारा प्रतिदिन किये गये कार्यों को अंकित किया जाय। इसके बाद बीडीओ के द्वारा उसका परीक्षण किया जाय।

डीएम कार्यालय पर रोजगार सेवकों ने किया जोरदार प्रदर्शन

संतकबीरनगर। ग्राम रोजगार सेवक वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने शुक्रवार को राज्य कर्मचारी का दर्जा देने समेत 10 सूत्रीय मांगो को लेकर विकास भवन से जुलूस निकाला। कलक्ट्रेट पर पहुंच कर प्रदर्शन किया। रोजगार सेवको ने मुख्यमंत्री को संबोधित 10 सूत्रीय मांग पत्र अपर एसडीएम को सौपा। एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष संतोष यादव ने कहा कि मनरेगा योजना के तहत 2006 से प्रदेश के विभिन्न ग्राम पंचायतों में संविदा पर ग्राम रोजगार सेवक कार्यरत है। जिनके मानदेय की व्यवस्था मनरेगा के प्रशासनिक मद से होता है। किसी ग्राम में कार्य अधिक है तो कही कम है। जिसकी वजह से रोजगार सेवकों का भुगतान समय से नहीं हो रहा है। जिससे समस्या उत्पन्न हो रही है। उन्होंने कहा कि रोजगार सेवकों को राज्य कर्मचारी का दर्जा दिया जाए। मासिक मानदेय 24 हजार रुपये किया जाए। ईपीएफ बोनस, हेल्थ इंश्योरेंस आदि की सुविधा दी जा। उन्होंने कहा कि मासिक भुगतान हेतु पृथक से बजट की व्यवस्था की जाए। इसके साथ ही ग्राम पंचायतों में मनरेगा कार्य का पासवर्ड भुगतान का प्रथम डोंगल हस्ताक्षरकर्ता के रूप में ग्राम रोजगार सेवकों को दिया जाए।

विधिक जागरूकता शिविर में महिलाओं को दी गई कानून की जानकारी

संतकबीरनगर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं जनपद न्यायाधीश अनिल कुमार वर्मा के निर्देशन में ब्लॉक सभागार खलीलाबाद के सभागार में 'विधान से समाधान' कार्यक्रम के अंतर्गत महिलाओं के हितार्थ कानूनी एवं लाभकारी योजनाओं के बावत विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता अपर जिला जज एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण महेंद्र कुमार सिंह द्वारा की गयी।

उन्होंने बताया कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर हम एक आर्थक और राजनीतिक शक्ति पुंज के रूप में उभर रहे है। हमारे संविधान ने हमें जो अधिकार और अवसर दिए है उन्हें भी मेहनत कर रही है। आज महिलाएं भी मेहनत कर रही है और अपने कैरियर को लेकर गंभीर है। ऐसे में महिलाओं को भारतीय कानून द्वारा दिए गए अधिकारों के प्रति जागरूक होनी चाहिए। उन्होनें कहा कि समान पारिश्रमिक अधिनियम के अनुसार अगर बात वेतन मजदूरी की हो तो लिंग के आधार पर किसी के साथ भी भेदभाव नहीं किया जा सकता है।

काम पर हुए यौन उत्पीड़न अधिनियम के अनुसार आपको यौन उत्पीड़न के खिलाफ शिकायत दर्ज करने का पूरा अधिकार है। शिकायत पर तत्काल कारवाई होगी। यौन उत्पीड़न की शिकार महिलाओं को नाम न छापने देने का अधिकार है। अपनी गोपनीयता की रक्षा करने के लिए यौन उत्पीड़न की शिकार हुई महिला अकेले अपना बयान किसी महिला पुलिस अधिकारी की मौजूदगी मे या फिर जिलाधिकारी के सामने दर्ज करा सकती है। खंड विकास अधिकारी खलीलाबाद राम प्रताप पांडेय तथा सहायक विकास अधिकारी (महिला) नीतू शुक्ल ने सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के बारे में बताया।

उत्कृष्ट कार्य के लिए शिक्षक बृजेश यादव को मिलेगा भारत गौरव सम्मान

रायबरेली। शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट व उल्लेखनीय कार्यों के लिए विकास खंड डीह में कार्यरत विशेष शिक्षक बृजेश यादव को रविवार 6 अक्टूबर को जयपुर, राजस्थान में भारत गौरव सम्मान 2024 से सम्मानित किया जायेगा। शिक्षक द्वारा दिव्यांग बच्चों को प्रभावी शिक्षा देने के साथ ही उन्हें खेल कूद व सांस्कृतिक कार्यों में भी निपुण बनाने का प्रयास किया है। साथ ही शिक्षक के मार्गदर्शन में कई दृष्टिहीन, मूकबधिर व अस्थिदिव्यांग बच्चे लखनऊ से उच्च शिक्षा भी ग्रहण कर रहे हैं। इस सम्मान समारोह का आयोजन भैरों सिंह शेखावत सभागार राजस्थान चौम्बर ऑफ कामर्स एम. आई. रोड जयपुर में किया जायेगा जिसमें देश की विभिन्न हस्तियों को सम्मानित किया जायेगा। इस सम्मान समारोह का आयोजन दिव्यांग जगत के सम्पादक उत्तम चंद जैन द्वारा किया जायेगा। शिक्षक के इन्ही प्रयासों को देखते हुए वर्ष 2022 में राज्य अध्यापक पुरस्कार से , 2018 में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम माँझी द्वारा रीता पेशावरिया सम्मान से, 2017 में सामाजिक चेतना सम्मान से विधानसभा अध्यक्ष ह्रदय नारायण दीक्षित जी से , 2018 में जनपद गौरव सम्मान सूर्य कुमार शुक्ला पूर्व डी. जी. पी. होमगार्ड्स विभाग सहित अनेकों बार उच्चाधिकारियों व विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा अलंकृत किये जा चुके हैं। शिक्षक को भारत गौरव सम्मान से सम्मानित होने के जानकारी मिलने पर साथी शिक्षक मनोज सिंह, राजेश शुक्ला,ज्ञान यादव वीरेन्द्र कुमार, रमन, संदीप, शिवबरन,राकेश सिंह, विवेक शुक्ला, सुनील यादव, साथियों ने शिक्षक को बधाई दी।

प्रो. रवींद्र पांडेय बने प्राचार्य परिषद के अध्यक्ष

गोंडा। डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या से संबद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य परिषद की नई कार्यकारिणी का गठन 03 अक्टूबर को विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोंडा के प्राचार्य प्रोफेसर रवींद्र कुमार पांडये को सर्वसम्मति से परिषद का अध्यक्ष चुना गया। प्राचार्य परिषद की नई कार्यकारिणी में प्रो0 रवीन्द्र कुमार पांडेय अध्यक्ष, बीएनकेवी पीजी कॉलेज अंबेडकर नगर के प्राचार्य प्रो. सुचिता पांडेय को महामंत्री एवं प्रो. दिव्यदर्शन तिवारी प्राचार्य गायत्री विद्यापीठ पी0जी0 कॉलेज रिसिया बहराइच को कोषाध्यक्ष बनाया गया है। साथ ही गणपत सहाय पीजी कॉलेज सुल्तानपुर के प्राचार्य प्रो0 अंग्रेज सिंह राणा व जवाहर लाल नेहरू पी0जी0 कॉलेज बाराबंकी के प्राचार्य प्रो. सीताराम सिंह को उपाध्यक्ष एवं प्रो0 मंजू मगन व प्रो0 डी0पी0 मिश्रा को संयुक्त मंत्री बनाया गया है।

बेसिक शिक्षा विभाग की कार्यशाला संपन्न

गोंडा। जिला पंचायत सभागार में समावेशी शिक्षा के उन्नयन हेतु मण्डल स्तरीय कार्यशाला का आयोजन सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक देवी पाटन मंडल गोंडा द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी श्रीमती नेहा शर्मा द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि दिव्यांग बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पहचानते हुए उसके अनुरूप विद्यालय में विभिन्न सुविधाएं प्रदान की जायें। कार्यक्रम में अपर परियोजना निदेशक द्वारा विस्तृत रूप से समावेशी शिक्षा के संदर्भ में चलाएं जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में बताया गया।

कासीपुर मूसा गौशाला में 12 गायों की मौत, 15 का चल रहा इलाज

- जिलाधिकारी ने दो लोगों को किया निलंबित

संवाददाता। श्रावस्ती, गिलौला

विकास खण्ड गिलौला के ग्राम पंचायत कासीपुर मूसा में स्थित गौशाला में 5 गौवंश की मौत हो गई जबकी 20 गौवंश की हालत नाजुक होने पर निकटतम पशु चिकित्सालय पर एम्बुलेंस की सहायता से पहुचाया गया है जहां उनका इलाज चल रहा है गायों की हालत स्थिर बनी हुई है। इस घटना की गम्भीरता को देखते हुए शासन द्वारा एक विशेषज्ञ टीम को मौके पर भेजा गया है जो गौवंशो की मौत के कारणों का पता लगाने में जुट गई है। इस घटना से जिला प्रशासन में हड़कंप मच गया है जिलाधिकारी के त्वरित कार्यवाही करते हुए 2 अधिकारियों को निलंबित कर दिया है साथ ही अन्य जिम्मेदारो पर भी गाज गिरने की संभावना है।

इस सम्बंध में जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने शुक्रवार की शाम को कलेक्ट्रेट सभागार में प्रेस वार्ता की इस दौरान उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत कासीपुर मूसा विकास खण्ड गिलौला में स्थित गौशाला में लगभग 15-20 गायों के बीमार अवस्था में होने का तथ्य संज्ञान में आया है। इस सम्बन्ध में सभी गायों को एम्बुलेंस के माध्यम से उपचार हेतु भेजा गया है बीमार गायों का उपचार सोनवां एवं गिलौला स्थित पशु चिकित्सालयों में कराया जा रहा है मुख्य पशु चिकित्साधिकारी श्रावस्ती को निर्देशित किया गया है कि बीमार गायों के उपचार के दौरान यदि किसी गाय की मृत्यु होती है तो उसका पोस्टमार्टम कराने के उपरान्त ही शव का निस्तारण किया जाये।

गायों के बीमार होने के दो कारणों का अनुमान लगाया जा रहा है पहला कारण दूषित चारा अथवा दूषित पानी पीने की सम्भावना हो सकती है इस हेतु दूषित चारा एवं दूषित पानी की सैम्पलिंग कराकर जांच लैब भेजे जा रहे हैं दूसरा कारण कीड़ा मारने की जो दवा गौवंशों को खिलायी गयी थी इसकी भी जांच करायी जा रही है यदि दवाओं की खराबी के कारण पशुओं के बीमार होने का तथ्य जांच में पाया जाता है तो ऐसी दशा में सम्बन्धित दवा सप्लायर को ब्लैक लिस्ट कर विधिक कार्यवाही की जायेगी।

गायों के बीमार होने अथवा मृत्यु होने के कारणों की जांच हेतु शासन स्तर से विशेषज्ञ टीम आ रही है जो पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय जांच करेगी। यह भी तथ्य संज्ञान में आया है कि 2 मृतक पशुओं को दफनाया गया है इस तथ्य की भी जांच कराकर उक्त कृत्य के लिए जिम्मेदार अधिकारी, कर्मचारियों, केयर टेकरों के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जायेगी।

डीआईजी ने किया भोजनालय का उद्घाटन व गोष्ठी

श्रावस्ती, भिनगा। पुलिस उप महानिरीक्षक अमरेन्द्र प्रसाद सिंह देवीपाटन परिक्षेत्र गोण्डा के आगमन पर थाना सिरसिया क्षेत्र अंतर्गत नवीनतम बाबा विभूतीनाथ मंदिर पुलिस चौकी पर सम्मान गार्द द्वारा सलामी दी गयी तथा उनके द्वारा जनसहयोग से बनी चौकी का उद्घाटन किया गया इसके बाद थाना को0 भिनगा में पुनर्निमित आरक्षी भोजनालय का उद्घाटन किया। डीआईजी द्वारा थाना भिनगा का निरीक्षण किया गया निरीक्षण के क्रम में थाने के शस्त्रागार लाकअप मालखाना व थाना परिसर को साफ रखनें भोजनालय में पोषण युक्त भोजन तैयार करने कार्यालय के समस्त अभिलेखों को चेक किया। तत्पश्चात् डीआईजी ने पुलिस कार्यालय सभागार में अधिकारियों व कर्मचारी गण के साथ गोष्ठी की।

योजनाओं को धरातल तक लागू करने के लिए सत्यनिष्ठा जरूरीः प्रमुख सचिव

रायबरेली। नोडल अधिकारी प्रमुख सचिव, परिवहन एल वेंकटेश्वर लू ने मंत्री समूह के जनपद भ्रमण की निरीक्षण आख्या एवं विकास कार्यो की प्रगति जानने के लिए जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक की। नोडल अधिकारी ने कार्यवृत्त के अनुसार अधिकांश कार्यो पर हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। श्री लू ने जनकल्याणकारी योजनाओं कन्या सुमंगला योजना,मिशन शक्ति, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के लाभार्थियों की जानकारी ली। समाज कल्याण विभाग को निर्देश दिया कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत पत्रों की चयन प्रक्रिया शीघ्र पूरी कराई जाए जिससे कि कार्यक्रम समय से पूरा हो सके। पीडब्ल्यूडी विभाग के कार्यो की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि मंत्री समूह द्वारा दिए गए निर्देशों को समय से पूरा कराया जाए। साथ ही सेतू निगम के अंतर्गत जो भी बाईपास बनाए जा रहे हैं उनका कार्य शीघ्र पूरा कराया जाए। निर्माण कार्यों के समय यात्रियों की सुविधाओं का भी ख्याल रखा जाए। चिकित्सा विभाग के कार्यो की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि आयुष्मान कार्ड अधिक से अधिक लाभार्थियों तक पहुंच जाना चाहिए। राशन वितरण में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए, पारदर्शिता का पूरा ख्याल रखा जाए।

डिवाईन लाईट इग्लिश स्कूल में मनाई गई महाराजा अग्रसेन जयंती

लालगंज, रायबरेली। कस्बे के डिवाईन लाईट इंग्लिस स्कूल में महाराजा अग्रसेन की 5187वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम में वैश्य समाज ईकाई का भी गठन किया गया जिसमें राहुल अग्रहरि को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाराजा अग्रसेन के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन व हवन पूजन के साथ हुआ। जिसके बाद विद्यालय के नन्हे मुन्हे बच्चो ने अपनी प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अग्रहरि समाज ईकाई के गठन की घोषणा की जिसमें राहुल अग्रहरि को अध्यक्ष, पीयूष अग्रहरि को महामंत्री, निखिलेश अग्रहरि को कोषाध्यक्ष, सुरेंद्र अग्रहरि को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, मनीष अग्रहरि को आडिटर, सर्वेश को सयुक्त मंत्री, गोल्डी को प्रचार मंत्री, विवेक को संगठन मंत्री तथा अनिल गुप्ता, श्रवन कुमार व दीपेंद्र गुप्ता को संरक्षक मनोनीत किया। वही युवा अध्यक्ष की जिम्मेदारी रामसन अग्रहरि को सौपी गई। सभी मनोनीत पदाधिकारियों को जिला महामंत्री शिवसागर अग्रहरि ने पद एवं गोपनीयत की शपथ दिलाई। मनोनीत अध्यक्ष राहुल अग्रहरि ने कहा कि वे संगठन के माध्यम से समाज को और आगे बढाने का कार्य करेगें।

एसडीएम पहुंचे परिषदीय विद्यालय बच्चों में शिक्षा की गुणवत्ता का किया परीक्षण

संवाददाता। कालपी, जालौन

शुक्रवार को उप जिलाधिकारी ने कदौरा ब्लाक क्षेत्र में गौशाला के साथ परिषदीय शिक्षा की भी हकीकत देखी। इस दौरान उन्होंने कमियां पाए जाने पर जिम्मेदारों को व्यवस्थाओं में सुधार लाने देने के निर्देश दिए। वहीं बरदौली गांव में बनी गौशाला का निरीक्षण करने पहुंचे एसडीएम की नजर गौशाला में बनी चरही पर पड़ी तो वह मौके पर पहुंचे जहां चरही में गंदा पानी भरा मिला जिस पर उन्होंने ग्राम प्रधान को फटकार लगाते हुये प्रतिदिन चरही की साफ सफाई करने व गौवंशों की अच्छी तरह से देखभाल करने के निर्देश दिए।

शासन गौवंशों की व्यवस्था के प्रति बेहद गंभीर है जिसके चलते प्रशासनिक जिम्मेदारों को प्रतिदिन उनकी व्यवस्थाए परखने के निर्देश दिए हैं तो शासन परिषदीय शिक्षा व्यवस्था को भी पटरी पर लाने की कवायद में लगा है इसके लिए सरकारी विद्यालयों में कई स्तर की निगरानी की जा रही है। इसी के चलते शुक्रवार को एसडीएम सुशील कुमार सिंह ने कदौरा ब्लाक क्षेत्र के ग्राम बरदौली स्थित अस्थाई गौशाला का आकस्मिक निरीक्षण किया इस दौरान उन्होंने गौशाला में पानी, भूसा के साथ उनके रहने के स्थान को भी देखा और वहां पर चरही का पानी गंदा देख ग्राम प्रधान को साफ पानी भरवाने के निर्देश दिए।

साथ ही गौवंशों के बैठने के स्थान पर भी गड्ढे होने पर उन्हें भरवाने के निर्देश दिए हैं। इस मौके पर उन्होने निवाड़ी गांव के परिषदीय विद्यालय कि भी निरीक्षण कर लिया जहां पर उन्होंने छात्रों और शिक्षकों की उपस्थिति का भी सत्यापन किया और वहां की शिक्षण व्यवस्था को भी परखा जिसमें उन्होंने छात्रों का टेस्ट लिया और कहा कि परिषदीय शिक्षा व्यवस्था अब बदल रही इसलिये समय के अनुसार बदलाव लाना जरूरी है। एसडीएम के मुताबिक शिक्षण व्यवस्था अभी ठीक नहीं है इसके लिए अभिभावकों के साथ शिक्षकों तथा विभाग के अधिकारियों को भी सक्रियता लानी होगी। निरीक्षण के दौरान ग्राम प्रधान व ग्राम पंचायत से जुड़े तमाम अधीकारी मौजूद रहे।

छह विद्युत चोर गिरफ्तार, दो कुंतल से ज्यादा चोरी का तार हुआ बरामद

उरई, जालौन। माधौगढ़ कोतवाली पुलिस ने लंबे समय से विद्युत तारों की चोरी करने वाले एक गिरोह का भंडाफोड़ करते हुये आधा दर्जन चोरों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से दो कुंटल 23 किलो 500 ग्राम चोरी का तार बरामद कर उनके कब्जे से एक तमंचा व दो जिंदा कारतूस बरामद हुये। उक्त मामले का खुलासा करते हुये पुलिस अधीक्षक डा. दुर्गेश कुमार ने बताया कि क्षेत्र में लगातार विद्युत पोलों से तार चोरी की घटनायें घटित हो रही इसको लेकर माधौगढ़ पुलिस लगातार विद्युत तारों की चोरी करने वाले गिरोह की तलाश में जुटे हुये थे तभी मुखबिर की सूचना पर बंगरा नहर के पास से करन सिंह पुत्र राजेश दोहरे, अनुज उर्फ वीरप्रताप पुत्र कमलेश दोहरे, सोनू पुत्र बैजनाथ दोहरे, सुनील पुत्र राजाराम दोहरे, पवन उर्फ वीरू पुत्र शिवकुमार दोहरे निवासीगण ग्राम निचावड़ी थाना रेढ़र जिला जालौन के साथ मुकेश पुत्र राजू दोहरे निवासी बिरिया थाना माधौगढ़ को पकड़ने के बाद उनकी जामा तलाशी ली तो एक तमंचा व दो जिंदा कारतूस बरामद हुआ।

जब पकड़े गये लोगों से कड़ाई से पूछताछ की तो उनकी निशानदेही पर दो कुंटल 23 किलो 500 ग्राम चोरी का विद्युत तार बरामद करने में सफलता प्राप्त की।

सीओ-एसडीएम की मौजूदगी में कोंच में मूर्ति विसर्जन को लेकर बैठक में लिये गये निर्णय

संवाददाता। कोंच, जालौन

शुक्रवार की देर शाम को कोतवाली में आहूत पीस कमिटी की बैठक में अधिकारियों ने मूर्ति विसर्जन से जुड़े लोगों के साथ संवाद स्थापित कर उनकी समस्याएं भी सुनीं और अपनी अपेक्षाएं भी बताईं। एसडीएम ज्योति सिंह की अध्यक्षता और सीओ अर्चना सिंह व प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार राय की मौजूदगी में शांति समिति की बैठक संपन्न हुई जिसमें आगामी दिनों में मूर्ति विसर्जन से जुड़े लोगों के साथ साथ नवरात्रि जागरण मंचों के कार्यकर्ताओं के साथ वार्ता में एसडीएम ने कहा, पर्व शांति और सद्भाव के साथ मनाएं, ऐसा कोई काम न करें जिससे किसी दूसरे को दिक्कत हो। ध्यान रहे कि डीजे पर सिर्फ धर्मिक गाने ही बजेंगे, अन्य किसी तरह के गाने अगर बजे तो डीजे जब्त कर संचालक को जेल भेजा जाएगा। उन्होंने कोतवाल को निर्देश दिए कि डीजे वालों के नाम नंबर और आधार कार्ड कोतवाली में जमा कराएं और उन्हें अच्छी तरह से प्रशासन की मंशा समझा दें। उन्होंने यह भी कहा, मेलों में सरकारी गाड़ी को पास न देने वाले वाहनों पर कड़ी कार्यवाही होगी। सीओ ने कहा, किसी भी कीमत पर झगड़ा नहीं होना चाहिए। झगड़ा फसाद करने वालों के साथ पूरी सख्ती से निपटा जाएगा।

पर्व और त्योहार हमारी भारतीय संस्कृति के आधार हैं, इन्हें मिलजुल कर मनाने का आनंद ही कुछ और है। कोतवाल ने कहा कि भगवान के काम में कोई भी शराब पिए हुए मिला तो उसे कार्यक्रम समापन तक कोतवाली में बैठाया जाएगा।

कोतवाल के कहा कि क्रम के अनुसार सभी मूर्तियां नम्बर से चलेगी ओर कोतवाली से लेकर ही मूर्ति विसर्जन को निकालें इस दौरान एसएसआई अभिलाष मिश्रा, सभासद अमित यादव, अनिल पटेरिया, आकाश अग्रवाल, महेंद्र चंदेरिया, अनमोल दीक्षित, अंशुल कुशवाहा, आशीष कुशवाहा, महेंद्र सोनी, वीरु वर्मा, अंचल बिलैया, कार्तिक गोयल, श्रीयांश गुप्ता, आशीष अग्रवाल, वसंत अग्रवाल आदि उपस्थित रहे।

त्यौहारों को शान्तिपूर्ण ढ़ंग से सम्पन्न कराने में संभ्रान्तजनों की महत्वपूर्ण भूमिका: जिलाधिकारी

● परंपरागत एवं शांतिपूर्ण तरीके से मनायें त्यौहार

लखीमपुर खीरी। आसन्न त्यौहारों श्री दुर्गा पूजा, मूर्ति विसर्जन एवं दशहरा को शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल व एसपी गणेश प्रसाद साहा ने जिला शान्ति समिति ने बैठक ली। बैठक के दौरान डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने सभी को आसन्न त्यौहारों की शुभकामनाएं देते हुए आयोजकों से अपील की है कि पूजा स्थलों एवं पण्डालों में आस्था के साथ.साथ सुरक्षा के मानकों का भी कड़ाई के साथ अनुपालन किया गया। पूजा स्थलों को सीसीटीवी कैमरों के साथ.साथ अग्निशमन उपकरणों से भी सुसज्जित रखा जाय। त्यौहारों के अवसर पर प्रदेश सरकार व जिला प्रशासन के लिए सुरक्षा व्यवस्था शीर्ष प्राथमिकता का विषय है किसी भी दशा में जनहानि नहीं होने दी जाएगी।

डीएम.एसपी ने कहा कि सभी आयोजक मॉ दुर्गा की प्रतिमाओं की ऊंचाई एवं जुलूसों में डीजे की हाइट एवं ध्वनि के स्तर को माण् उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित मानक के अनुसार रखा जाय तथा आपत्तिजनक गानों को न बजाया जाय। वरिष्ठ नागरिकों का दायित्व है कि धार्मिक आयोजनों के समय युवाओं को संयमित व्यवहार के लिए प्रेरित करें।

एसपी गणेश प्रसाद साहा ने नवरात्रि एवं दुर्गा पूजा के दौरान चाक.चौबंद पुलिस व्यवस्था का आश्वासन देते हुए कहा की त्यौहार को सकुशल संपन्न कराने के लिए यद्यपि पुलिस पूरी तरह से मुस्तैद रहेगी, फिर भी स्थानीय लोगों से इस व्यवस्था में पुलिस का सहयोग करने की अपील किया तथा कहा कि सुरक्षा व्यवस्था से संबंधित किसी भी आशंका की स्थिति में वे स्थानीय पुलिस चौकी, थाने अथवा सीधा उनसे संपर्क कर सकते हैं। ट्रैफिक मैनेजमेंट हेतु डायवर्सन और सख्ती में अपना अपेक्षित सहयोग दे। एडीएम संजय कुमार सिंह ने कहा कि जनपद में त्यौहारों को मनाए जाने की गौरवशाली परंपरा रही है। उन्होंने लोगों से अपील किया कि इस परंपरा का निर्वहन करते हुए इस वर्ष भी त्योहारों को शांति, सौहार्द एवं आनंद के वातावरण में आपसी भाई.चारे एवं एक दूसरें की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए परम्परागत तरीके से त्योहार मनाए। पंडालो और विसर्जन में भक्ति गीत ही बजाए जाएं। डीएम व एसपी ने कहा कि जिला प्रशासन को आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आसन्न त्यौहार भी सभी के सहयोग से पूर्व की भांति शान्ति के साथ संपन्न हो जायेंगे।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजनान्तर्गत मिशन शक्ति कार्यक्रम का आयोजन

कानपुर देहात। मुख्य सचिव, उप्र शासन के निर्देशों व जिलाधिकारी आलोक सिंह के मार्गदर्शन में प्रदेश में महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षाए सम्मान एवं स्वावलम्बन हेतु शरदीय नवरात्र के पर्व पर मिशन शक्ति (फेज.05) के विशेष अभियान के क्रम में अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के 10 दिवसीय समारोह के उपलक्ष्य में आज दिनांक 04.10.2024 को ब्राइट ऐन्जिल स्कूल अकबरपुर कानपुर देहात में टॉक शो विथ ऑयडलस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आइडल के रूप में रेनू यादव जिला प्रोबेशन अधिकारी, नेहा सिंह जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, डा. सुरभी खत्री चिकित्साधिकारी, महिला थानाध्यक्ष कानपुर देहात द्वारा जीवन में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने की जानकारी दी गई एवं बालिकाओं के साथ संवाद स्थापित कर उनकी जिज्ञासाओं का उत्तर दिया गया।

रेलवे ट्रैक पर पड़ी लकड़ी की भारी टुकड़ा देख चालक ने खड़ी की ट्रेन, चालक की सूझबूझ से मेमू पलटने से बची

सुमेरपुर हमीरपुर। भरुआ सुमेरपुर रेलवे की दोहरीकरण लाइन और नये प्लेट फार्म का निर्माण कर रही कार्यदायी संस्था केपीटीएल की लापरवाही के चलते मेमू ट्रेन पलटने से बच गई। रेलवे प्लेटफार्म पर रेलवे ट्रैक पर पड़े लकड़ी के स्लीपरो को देख कर ट्रेन के चालक ने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन को पहले ही रोक दिया। एक बड़ा हादसा टल गया। स्टेशन प्रबंधक ने इसकी सूचना रेलवे सुरक्षा बल सहित उच्चाधिकारियों को दी। अधिकारी मौके पर पहुंच कर मामले की जांच करने में जुट गए है। वहीं रेलवे के अवर अभियंता ने कार्यदायी संस्था के खिलाफ एफआईआर दर्ज अभियोग पंजीकृत कराने की बात कही है। कानपुर से मानिकपुर जाने वाली मेमू ट्रेन सुबह सुमेरपुर रेलवे स्टेशन में प्लेटफार्म नंबर तीन पर पहुंचने वाली थी। दोहरीकरण का कार्य कर रही कंपनी केपीटीएल ने इस प्लेटफार्म में

ट्रेन व उसके आगे रखा लकडी का टुकड़ा

कार्य के लिए पटरियों व प्लेटफार्म की दीवार के बीच लकड़ी की स्लीपर लगा रखे थे, जबकि कार्य करने के बाद उनको हटाया नहीं गया। वहीं दूसरी ओर रेलवे स्टेशन में ड्यूटी पर रहने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों की भी लापरवाही समाने नजर आ रही है और ड्यूटी पर तैनात रेल कर्मियो ने कैसे मेमू ट्रेन को बिना प्लेटफार्म को देखे ट्रैक पर ले लिया गया। ट्रेन के ड्राईवर ने जब पटरियों पर लकड़ी के स्लीपरो को देखा, तो दन्न रह गए और इमरजेंसी ब्रेक लगा कर मेमू ट्रेन को लकड़ी के स्लीपरो से पहले रोक दिया। ट्रेन के ड्राईवर के सुझ बूझ से एक बड़ा हादसा होते टल गया ट्रेन के ड्राईवरो ने वॉकी टॉकी के माध्यम से स्टेशन मास्टर को इसकी जानकारी दी। और स्टेशन पर ड्यूटी पर तैनात रेलवे कर्मी प्लेटफॉर्म तीन की ओर अनन फनन मे दौड़े और पटरियों में लगाये गए स्लीपरो को आनन फानन मे रेलवे ट्रैक से हटाया गया।

कार्यदायी संस्था के खिलाफ लापरवाही का मुकदमा

स्टेशन प्रबंधक ने इस मामले की सूचना आरपीएफ सहित उच्चाधिकारियों की दी है। आरपीएफव अधिकारियों ने मामले की जांच शुरू कर दी है। रेलवे के अवर अभियंता उपेंद्र कुमार ने बताया कि यह कार्यदायी संस्था के कर्मियों की बड़ी लापरवाही है। कार्यदायी संस्था केपीटीएल के खिलाफ इस लापरवाही का मुकदमा दर्ज कराया जा रहा है।

जयकारे के साथ आदिशक्ति मां ब्रह्मचारिणी की पूजा

● दूसरे दिन माता के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की हुई पूजा-अर्चना

फतेहपुर। दोआबा में नवरात्र के दूसरे दिन मां बह्मचारिणी के स्वरूप की पूजा अर्चना की गई। पंडालों सहित देवी मंदिरों में भक्तों का तांता लगा रहा। कहीं भंडारे तो कहीं प्रसाद वितरण का सिलसिला चलता रहा। वहीं रंग-बिरंगी झालरों की रोशनी की अनोखी छटा, संगीतमय आरती के स्वर, तालियों की गड़गड़ाहट संग गूंजते मां भवानी के गगन भेदी जयकारों से भक्तिमय माहौल दिखाई दिया। शारदीय नवरात्र के दूसरे दिन शुक्रवार को शहर के देवी मंदिरों सहित पंडालों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की कतार लगी रही। भक्तों ने मां के दूसरे स्वरूप मां बह्मचारिणी की पूजा अर्चना की। हर कोई देवी मां के पहले दर्शन करने की होड़ और प्रसाद पाने की ललक लेकर मंदिरो से पंडाल तक पहुच रहा था। भक्तों ने नारियल, रोली, गंगाजल, पुष्प, चंदन माता को अर्पित कर सुख समृद्धि मांगी। मां के दर्शन के लिए भक्तों की लंबी कतारें देवी मंदिरों में लगी रही। वहीं शाम के समय पंडालो में माता की संगीतमय आरती की गई। बड़ी संख्या में भक्तों की मौजूदगी से दुर्गा पंडालों में रौनक देखते ही बन रही थी। उधर शहर स्थित मंदिरों में आरती के बाद भजन कीर्तन का आयोजन महिलाओं द्वारा किया गया। आरती के बाद वृहद प्रसाद वितरण किया गया। नवरात्र के दूसरे दिन शाम को लोग पंडालो में पहुंचकर जगत जननी की भक्ति में लीन दिखाई दिए।

भक्तों ने माथा टेककर मांगी मन्नत: शारदीय नवरात्रि के दूसरे दिन शहर के पटेल नगर चौराहे में स्थापित दुर्गा पांडाल में मां अंबे की आरती में शामिल होकर भक्तों माथा टेकने के साथ ही आदिशक्ति जगत जननी से मन्नत मांगी। इससे पूर्व आचार्य द्वारा विधिवत वेद मंत्रों के बीच मां दुर्गा की पूजा अर्चना कराई गई। ऐसे ही शहर के अन्य स्थानों में लगे पांडालों में सुबह शाम भक्तों का जमावड़ा लग रहा है।

वैट का बकाया राशि न जमा न करने पर ढाई सौ व्यापारियों के खाता सीज

● व्यापारियों ने कहा उनका हो रहाहै उत्पीडन, बगैर नोटिस के ही सीज किये जा रहे है खाते

हमीरपुर। वैट का बकाया राशि न जमा न करने पर जिले के करीब दो सौ पचास व्यापारियों के खाते सीज कर दिये गये है,जिससे व्यापारियों में हड़कंप मच गया है। जब कि व्यापारियों का कहना है कि उनका उत्पीडन किया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक व्यापारियों से कर वसूलने के लिये शासन ने वर्ष 2008 से लेकर 2017 तक वैट प्रक्रिया लागू की गयी थी इसके बाद शासन ने वैट समाप्त कर जीएसटी लागू कर दिया था। नौ साल के अंतराल में बैट वकाया करीब 1700 व्यापारी बकायेदार की सूची में आ गया था व्यापारियों पर करोड़ो रुपये बकाया हो गया था इसके बाद व्यापारियों ने बकाये पर कोई ध्यान नही दिया और वह ज्यो का त्यो पड़ा रहा,इधर प्रदेश में भारी रकम बकाया होने के कारण आला अफसरों ने जिले के अधिकारियों पर नकेल कर शीघ्र ही वसूली करने के आदेश कर दिये है। जिले में अभी तक करीब 250 व्यापारियों के खाते सीज किये जा चुके है। उधर शासन ने बैंक को एक सूची भेजी है जिन व्यापारियों का बैट बकाया है उनका पैसा निकालने से साफइंकार कर दिया है। विभाग के उपायुक्त राज्य कर हमीरपुर कृष्ण प्रकाश का कहना है कि इस कार्य में न केवल विभाग के लोग रात दिन लगे है बल्कि राजस्व विभाग के कर्मी भी राजस्व वसूली में रात दिन सहयोग कर रहे है यही नही कितने खाते सीज किये गये कितनी वसूली की गयी है इसकी रोजाना मानीटरिंग शासन स्तर पर होती है यही नही नौ साल पुरानी फाइलों को खोजबीन कर उनसे हर बकायेदार व्यापारी की रिपोर्ट बनायी जा रही है। वही बुंदेलखंड के अधिकारी ग्रेड वन धीरेंद्र प्रताप का कहना है कि बकाया वसूलने में किसी व्यापारी को नोटिस की क्या आवश्यकता है उसको पूरी जानकारी पहले से होती है। जो व्यापारी बकाया नही देगे तो कार्यवाही की जाती है। इधर व्यापारियों का कहना है कि उनको बगैर नोटिस दिये ही खाता सीज कर दिये गये है। जो व्यापारियों के साथ अन्याय है। कई लोगो ने व्यापार बंद कर दिया है इसके बाद भी उनकी वसूली की जा रही है। इसके लिये व्यापारियों ने उच्चाधिकारियों से न्याय की गुहार लगायी है।

ग्राम सभा सेहरुवा में किया गया पंडित दीनदयाल पशु आरोग्य मेला का आयोजन

लखीमपुर खीरी। ब्लॉक लखीमपुर के अंतर्गत ग्राम पंचायत सेहरूवा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेले का आयोजन किया गया। आज 04 अक्टूबर 2024 ग्राम पंचायत सेहरुवा ब्लाक लखीमपुर में सरकार की मंशा के अनुरूप एवं मुख्य पशु चिकित्साधिकारी लखीमपुर डॉ. जगदीश प्रसाद के उपस्थिती में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि ग्राम प्रधान मधुराम वर्मा एवम मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने गौ पूजन कर तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की फेटो पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया मेले में आए हुए डॉ0 सौरव सिंगही नीमगांव ने पशुओं के टीकाकरण व क्रमिनाशक दवा पान के बारे में जानकारी दी। डॉक्टर अनिल दुबे ने किसानो को क्रेडिट कार्ड, टैगिंग का महत्व बीमा के बारे में जानकारी दी।

क्विक न्यूज

ऊर्जा विकास अभिकरण के तत्वाधान में पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के समीक्षा बैठक का आयोजन

फर्रुखाबाद। जिलाधिकारी डॉ. वी.के. सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार परिसर फतेहगढ़ में उप्र नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपी नेडा) फर्रूखाबाद के तत्वाधान में प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के सफल क्रियान्वयन व पर्यवेक्षण हेतु समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि बिजली विभाग योजना के लाभ के बारे मे उपभोक्ताओं को अवगत करायेगा, उपभोक्ताओं को नेट मी. उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी विद्युत विभाग की है, जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि मुख्त विकास अधिकारी व एल डी एम संयुक्त रूप लोनिंग के लिये बैंकों का लक्ष्य निर्धारित करे। उक्त योजना में 14000 का लक्ष्य जनपद को प्राप्त हुआ हैए योजना की नई गाइडलाइन में 03 किलोवाट तक के लोन के लिये आईटीआर की आवश्यकता नही है, पीओ नेडा को सभी वेंडरो के मोबाइल नम्बर सभी ईओ व बीडीओ को उपलब्ध कराने के लिये निर्देशित किया गयाए जिलाधिकारी द्वारा हैंडबिल बाटकर उक्त योजना के प्रचार प्रसार के लिये निर्देशित किया गया व अक्टूबर तक लक्ष्य के 50 प्रतिशत को प्राप्त करने के लिये निर्देशित किया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी, अपर जिलाधिकारी, अधीक्षण अभियंता विद्युत, अपर उप जिलाधिकारी सदर एलडीएम व संबंधित उपस्थित रहे।

सपा प्रतिनिधिमंडल पीड़ितों से मिलने जायेगा आज

फर्रुखाबाद। सगत दिन भोजपुर विधानसभा के ग्राम फतेहुल्लापुर ब्लाक कमालगंज में प्रशासन द्वारा बुलडोजर में लगभग आठ मकान तोड़ दिए गए थे जिसकी जानकारी तथा पीड़ित परिवार से मिलने हेतु प्रतिनिधिमंडल ग्राम फतेहुल्लापुर पहुंचेगा। रिपोर्ट प्रदेश कार्यालय में प्रस्तुत करेगा।

सड़क हादसे में बाइक सवार की मौत, साथी गंभीर

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के ख्वाजा का पुरवा गांव निवासी अजय कुमार का पुत्र बब्लू अपने साथी राजेश 24 वर्ष निवासी अझुआ जनपद कौशांबी के साथ रात लगभग नौ बजे बाइक से थरियांव कस्बा आ रहे थे। जैसे ही ये लोग महिया मंदिर के समीप एनएच-2 पर पहुंचे तभी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दिया जिससे बब्लू की घटनास्थल पर मौत हो गई वहीं राजेश घायल हो गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची सरकारी एंबुलेंस ने घायल को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया।

ट्रेन से गिरकर युवक की मौत

फतेहपुर। खागा कोतवाली क्षेत्र के ग्राम तिलकापुर के समीप गुरूवार को ट्रेन से कानपुर जा रहे 32 वर्षीय युवक की गिरकर मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन हेतु भेजा है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के जसराजपुर गांव निवासी मोहनलाल का पुत्र अवधेश कुमार ट्रेन से कानपुर जा रहा था। बताते हैं कि तिलकापुर के समीप अचानक चलती ट्रेन से गिर गया। जिससे उसकी घटनास्थल पर मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

कुएं में गिरकर अधेड़ की मौत

फतेहपुर। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के ग्राम भगला का पुरवा में गुरूवार की शाम शौचक्रिया को जा रहे 50 वर्षीय अधेड़ कुएं में गिर गया। जिससे उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार भगला का पुरवा गांव निवासी बुद्ध का पुत्र शिव कुमार गुरूवार की शाम सात बजे शौचक्रिया के लिए जा रहा था जब वह घर से कुछ दूर पहुंचा तभी पास में स्थित कुएं में गिर गया। घटनास्थल पहुंची पुलिस ने गांव वालों की मदद से देर रात शव को बाहर निकाल पंचनामा भरते हुए विच्छेदन गृह भेज दिया।

युवक ने फांसी लगाकर दी जान

फतेहपुर। चांदपुर थाना क्षेत्र के भगलापुर गांव निवासी रामकरन का पुत्र बालकुश ने गुरूवार की देर शाम घर के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया। पोस्टमार्टम हाउस में मृतक के पिता रामकरन ने बताया कि उसका पुत्र व बहू अलग रहते हैं। उनको शक है कि उसके पुत्र की हत्या बहू ने की है।

युवक की अचानक मौत, शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा

संडीला (हरदोई)। संदिग्ध परिस्थितियों में एक युवक की मौत हो गयी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। थाना कासिमपुर के अंतर्गत ग्राम असही आजमपुर में 25 वर्षीय कुलदीप पुत्र रामगुलाम गुरुवार की रात खाना खाकर घर में सो रहा था। आधी रात को उसे अचानक उल्टियां होने लगीं। उसके छोटे भाई विपिन ने उसे नींबू पानी पिलाया तथा कुछ देर बाद कुलदीप सो गया। सुबह उसकी माता ने उसे उठाने की कोशिश की लेकिन वह नहीं उठा।

बीज वितरण कैम्प का आयोजन

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में जिला उद्यान अधिकारी बल्देव प्रसाद ने बताया कि जनपद में संचालित राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत एवं राज्य सेक्टर योजनान्तर्गत शासन के निर्देश के अन्तर्गत उद्यान विभाग द्वारा अधिकृत कम्पनियों के द्वारा बीज वितरण कैम्प का आयोजन उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, विभाग द्वारा राजकीय अंलकृत उद्यान आलमचन्द्रपुर कानपुर देहात में जिला उद्यान अधिकारी के सौजन्य से दिनाक 04ण्10ण्2024 को किया गया। जिसमें विभिन्न विकासखण्ड के पंजीकृत कृषकों को बीज वितरण कैम्प के माध्यम से नामित कम्पनियों द्वारा बीण अनुवन्ध किये गये। बीज वितरण कैम्प में नामधारी सीड्स कलश सीड्स वापना सीड्स ट्रॉपिका सीड्स तथा जे0के0एग्रीटिक्स सादि कम्पनियों द्वारा प्रतिभाग किया गयाए जिसमें पंजीकृत कृषको द्वारा अपनी पसन्द की कम्पनी स प्रजाति का चयन किया गया।

दुकानदार को पीटकर नहर में फेंककर मार डालने का आरोप

संवाददाता। रूरा, कानपुर देहात

थाना क्षेत्र के गेंदामऊ गॉव में अपने पिता को पीटकर नहर में फेंकने से उनकी मृत्यु होने का आरोप लगा पुत्र ने दो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया है। पुलिस ने शव को सील कर पोस्टमार्टम कर भेजा है तथा आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा रहा है। आपको बताते चलें कि गुरूवार की रात्रि थाना क्षेत्र के गेंदामऊ गॉव के पास नहर में गदनपुर निवासी होटल सॅचालक प्रेमशॅकर कश्यप उम्र 65 वर्ष का शव मिला था। मृतक के पुत्र बजेश ने बताया कि गुरूवार की रात्रि को करीब 8:30 बजे वह अपने पिता को खाना देकर वापस घर गया था।

उस समय दुकान में विमल व रज्जन निवासी ग्राम गेंदामऊ पिता से बातचीत कर रहे थे। करीब आधे घण्टे बाद गॉव के ही कल्लू पुत्र ओमकार ने सूचना दी कि तुम्हारे पिता को विमल व रज्जन ने मारपीट कर नहर में फेंक दिया है और तुम्हारे पिता नहर में डूब गये है, मेरे पिता के नहर से बाहर न आने की सूचना पर मैं और मेरे परिजन सहित गॉव के अन्य लोग मौके पर पहुॅचे और नहर के भीतर काफी देर खोजबीन की, बहुत ढूढने के बाद पिता जी का शरीर मिला लेकिन तब तक नहर के भीतर उनकी मृत्यु हो चुकी थी। मृतक के पुत्र ने बताया कि विमल व रज्जन ने मेरे पिता के साथ मारपीट कर उनको नहर में फेंक दिया था, जिससे उनकी मौत हो गयी। सूचना पर पहुॅचे एएसपी राजेश पाण्डेय ने जॉच पडताल की है तथा फॉरेसिक टीम ने साक्ष्य एकत्रित किये थे। थानाध्यक्ष जेपी शर्मा ने बताया कि मृतक के पुत्र की शिकायत पर मुकदमा पॅजीकृत कर दोनों आरोपियों को जेल भेजा जा रहा है।

अग्रवाल जयंती समारोह में पुरस्कार पाकर खुश हुए नन्हें, मुन्हे, युवक और युवतियां

पुखरायां, कानपुर देहात। कस्बे के अग्रवाल धर्मशाला में अग्रवाल सभा की ओर से आयोजित महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव के सातवें दिन शुक्रवार को डांडिया नृत्यकला, फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता संपन्न हुई। आलोक कंछल, मनोज गोयल और व्यापार मंडल के अनुभव अग्रवाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। व्यापार मंडल के जिला महामंत्री अनुभव अग्रवाल अग्रवाल ने कहा जयंती समारोह आयोजित होने से ही महापुरूषों को उचित सम्मान मिलता है। अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष उमंग अग्रवाल ने बताया कि अभी तक आयोजित की गईं सभी प्रतियोगिता शुक्रवार को पुरस्कार बांटे गए हैं। जिसमें सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में ग्रुप ए के लक्ष्य कंछन, ग्रुप बी के हृदय गोयल, ग्रुप सी के सक्षम सिंघल को प्रथम पुरस्कार मिला है। हैंडराइटिंग में ग्रुप ए की निराली अग्रवाल, ग्रुप बी के सौर्य मित्तल व ग्रुप सी की प्रान्सी अग्रवाल को प्रथम पुरस्कार मिला। चित्रकला में ग्रुप ए की राघवी, ग्रुप सी की अंशिका को प्रथम, गर्वित को द्वितीय पुरस्कार ग्रुप डी में निराली को प्रथम, लक्ष्य को द्वितीय, ग्रुप ई में प्रियम प्रथम व सक्षम द्वितीय रहे। रंगोली प्रतियोगिता में शगुन गोयल प्रथम, साक्षी अग्रवाल द्वितीय, व छवि गोयल को स्पेशल पुरस्कार दिया गया। फूड स्टाल में आमची मुंबई की अपेक्षा अग्रवाल को प्रथम, रोल ऑन बर्गर ममता अग्रवाल को द्वितीय व हंगरी हट सान्वी व मनोज्ञा गोयल को तृतीय पुरस्कार मिला। हेयर स्टाइल में रूबी अग्रवाल को प्रथम, डांस प्रतियोगिता में ग्रुप ए में आरना सिंघल व आव्या गोयल को प्रथम, राघवी को द्वितीय, ग्रुप बी में अद्रिका गोयल को प्रथम, सानवी गोयल, अथर्व गोयल, इवान गोयल को द्वितीय पुरुस्कार मिला।

जयंती समारोह में डांडिया नृत्य करती युवतियां

मिलेट्स बीज उत्पादन के सम्बन्ध में कृषक उत्पादक संगठनों को दिया गया प्रशिक्षण

संवाददाता। कानपुर देहात

जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में उपनिदेशक कृषि रामबचन राम ने बताया कि कृषि विभाग द्वारा मोटा अनाज ;श्री अन्नद्ध को बढावा देने हेतु संचालित मिलेट्स पुनरोद्धार कार्यक्रम अन्तर्गत जनपद स्तर पर कृषि कल्याण केन्द्र बारा में कृषक उत्पादक संगठनों के अध्यक्ष एवं प्रतिनिधियों के साथ.साथ प्रगतिशील कृषकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर उप कृषि निदेशकए जिला कृषि अधिकारी एवं कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मिलेट्स बीज उत्पादन के सम्बन्ध में प्रशिक्षण एवं नवीनतम कृषि तकनीकी के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की गयी। उक्त के साथ.साथ प्रतिभागियों को श्री अन्न के पोषक महत्वों एवं लाभों के सम्बन्ध में जानकारी का प्रसार करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। उप कृषि निदेशक राम बचन राम द्वारा अवगत कराया गया कि मिलेट्स यथा बाजराए ज्वारए मडुआ;रागीद्धए सावाए कोदोए काकुनए कुटकीए चेनाए कुट्टू एवं रामदाना आदि भारत एवं उ0प्र0 की प्राचीन कृषि और आहार परम्परा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पोषण में इनकी महत्ता को देखते हुए ही श्री अन्न को न्यूट्री सीरियल भी कहा जाता है। ये फसले पोषक तत्वों से भरपूर होती है और कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है। मिलेट्स प्रोटीनए फाइबरए आयरनए कैल्शियमए विभिन्न विटामिन्स और मिनरल का समृद्ध स्रोत है। इनका सेवन हृदय रोगए मधुमेह और मोटापा जैसी बीमारियों के जोखिम को कम करती है। मिलेट्स का पर्यावरण महत्व भी है। यह फसलें सूखा प्रतिरोधी होती है और कम जल में भी उगाई जा सकती हैए जिससे जल संरक्षण में भी मदद मिलती है। इसके अलावा श्री अन्न की खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता कम होती हैए जिससे मृदा की उर्वरता और जैव विविधता बनी रहती है।

जिला कृषि अधिकारी द्वारा श्री अन्न की खेती को बढावा देनेए तथा मिलेट्स को अपने आहार में धान व गेंहू के स्थान पर प्रयोग करने हेतु जागरूक किया गया। उनके द्वारा मिलेट्स से होने वाले स्वास्थ्य लाभों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करते हुए किसानो को अवगत कराया गया कि श्री अन्न में धान व गेंहू की तुलना में फाइबर भी अधिक मात्रा में होने के कारण यह सुपाच्य भी होता है। उनके द्वारा जनपद में मिलेट्स बीज की उपलब्धता एवं निर्धारित मूल्य के साथ.साथ कृषि विभाग द्वारा वितरित किये जाने वाले निशुल्क मिनी किट के सम्बन्ध में अवगत कराया गया।

सांप्रदायिक टिप्पणी पर जांच में प्रभारी निरीक्षक फंसे, कार्रवाई होनी तय

संडीला (हरदोई)। प्रभारी निरीक्षक अतरौली पर अल्प संख्यक समुदाय के एक व्यक्ति पर सांप्रदायिक और अपमानजनक टिप्पढ़ी किए जाने का मामला काफी तूल पकड़ गया है। जांच में उन्हें दोषी पाया गया है हालांकि आरोपी पुलिस अधिकारी आरोपों से इनकार कर रहे हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम महंगवां निवासी इब्राहीम पुत्र शफीक ने 20 जून 2024 को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को प्रेषित शिकायती पत्र में कहा कि ग्राम निवासी राजवर्धन सिंह पुत्र नागेन्द्र सिंह उर्फ कल्लू सिंह ने कोतवाली जाकर शफीक पुत्र सिद्दीक आदि के विरुद्ध अवैध निर्माण कराने का प्रार्थना पत्र दिया था। इसकी जांच के लिए उपनिरीक्षक उमाशंकर यादव को सौंपी गयी। जिसपर शफीक को आने जाने का रास्ता दिला दिया गया। इसके बाद पुन: विवाद होने पर शफीक के पुत्र इब्राहीम को थाने बुलाया गया। इब्राहीम के अनुसार एक थानीय पत्रकार की उपस्थिति में प्रभारी निरीक्षक ने उन्हें गालियां देते हुए कहा कि तुम्हें रास्ता तो दे दिया गया हैए ज्यादा रास्ता चाहिए तो ष्पाकिस्तान बन गया हैए तो जाओ पाकिस्तान में रहोए यहां क्या कर रहे होष्ष् इसी दौरान इब्राहीम ने प्रभारी निरीक्षक से बात चीत की ऑडियो रिकॉर्डिंग कर ली थी और इस ऑडियो को ट्विटर पर डाल दिया था। इस मामले में अल्पसंख्यक आयोग ने पुलिस अधीक्षक हरदोई से सारे मामले की जांच कराकर रिपोर्ट मांगीए जिसपर तत्कालीन सीओ शिल्पा कुमारी को मामले की जांच सौंपी गयी। सीओ ने जांच में प्रभारी निरीक्षक की आवाज़ ऑडियो में होने की पुष्टि की। इस मामले में अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी ने अल्पसंख्यक आयोग को अपने पत्र संख्या ई252752 द्वारा दिनांक 23ण्08ण्2024 को आख्या भेज दी है। उधर प्रभारी निरीक्षक अतरौली पर कड़ी कार्रवाई की तलवार लटक गयी हैए हालांकि कुछ समय पूर्व एक महिला कॉन्स्टेबिल ने उनपर तमाम तरह के आरोप लगाए थे, लेकिन बाद में मामला दब गया। दूसरी ओर प्रभारी निरीक्षक इस सारे मामले से इनकार करते हैं।

झांसी, कानपुर एवं चित्रकूटधाम मण्डल बॉदा की रबी उत्पादकता गोष्ठी के आयोजन

बाँदा। आयुक्त चित्रकूटधाम मण्डल बाल कृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में मयूर भवन सभागार में आगामी 08 अक्टूबर, 2024 को झांसी, कानपुर एवं चित्रकूटधाम मण्डल बॉदा की रबी उत्पादकता गोष्ठी के आयोजन की तैयारी के संबंध में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में आयुक्त ने रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज बॉदा में आयोजित होने वाली रबी गोष्ठी हेतु कृषि विभाग एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों को सभी तैयारियां समय से पूर्ण किये जाने के निर्देश दिये। किसानों के पंजीकरण के लिए अलग.अलग काउन्टर बनाये जाने तथा कृषि एवं एनआरएलएम से संबंधित स्टालों के लिए स्थान चिन्हित कर लगवाये जाने के निर्देश दिये। साफसफाई व्यवस्था एवं मोबाइल ट्वायलेट हेतु अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका बॉदा एवं जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया। ट्रैफिक एवं पार्किंग की व्यवस्था हेतु नगर मजिस्ट्रेट एवं

सीओ ट्रैफिक को समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिये। जल संस्थान द्वारा पानी के टैंकरों तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा एम्बुलेन्स सहित चिकित्सा काउन्टर भी लगाये जाने के निर्देश दिये। विद्युत विभाग के अधिशाषी अभियंता को विद्युत की समुचित व्यवस्था किये जाने तथा अग्निशमन सुरक्षा हेतु अग्निशमन अधिकारी को व्यवस्था करने के निर्देश दिये। कार्यक्रम स्थल पर जनसेट, साउण्ड एवं अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थायें समय से कराये जाने के निर्देश कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक को दिये। रबी उत्पादन गोष्ठी में चित्रकूटधाम मण्डल बॉदा के 300 किसान, हमीरपुर, चित्रकूट एवं महोबा के 100.100 किसान प्रतिभाग करेंगे। रबी गोष्ठी में किसानों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी दिये जाने हेतु तकनीकी सत्र का आयोजन किया जायेगा। क्षेत्रीय भ्रमण के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, खेत.तालाब कार्यक्रम, जल.जीवन मिशन तथा आईएफएस के कार्यों की तैयारी भी रखने के निर्देश सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दिये।

कैदियों को गरिमा के साथ जीने का अधिकार है : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि कैदियों को भी गरिमा के साथ जीने का अधिकार है और कैदियों को इस अधिकार से वंचित रखना उपनिवेशवादी एवं पूर्व-औपनिवेशिक तंत्र की याद दिलाता है। प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे. बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने बृहस्पतिवार को यह टिप्पणी उस वक्त की जब न्यायालय ने जेलों में कैदियों के बीच जाति के आधार पर काम के बंटवारे, अलग अलग बैरक की व्यवस्था और गैर अधिसूचित जनजातियों एवं आदतन अपराधियों को लेकर पूर्वाग्रह पर रोक के संबंध में अपना फैसला सुनाया। शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, केरल, महाराष्ट्र, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश समेत 10 राज्यों की जेल नियमावली में आपत्तिजनक नियमों को असंवैधानिक करार दिया।

प्रधान न्यायाधीश ने पीठ की ओर से 148 पृष्ठों का फैसला लिखते हुए संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता), 15 (भेदभाव का निषेध), 17 (अस्पृश्यता का उन्मूलन), 21 (जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) और 23 (जबरन श्रम के खिलाफ अधिकार) के तहत मौलिक अधिकारों पर चर्चा की। न्यायालय ने अनुच्छेद 21 का जिक्र करते हुए कहा, गरिमा के साथ जीने का अधिकार कैदियों पर भी लागू होता है। कैदियों को सम्मान नहीं देना उपनिवेशवादी और पूर्व-औपनिवेशिक तंत्रों की याद दिलाता है, जहां राष्ट्र के अधीन रहने वालों के साथ अमानवीय व्यवहार तथा उन्हें अपमानित करने के लिए दमनकारी प्रणालियां तैयार की गई थीं।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, संविधान लागू होने से पूर्व के शासन ने जेलों को न केवल कैद रखने के स्थान के रूप में देखा, बल्कि वर्चस्व के साधन के रूप में भी देखा। इस न्यायालय ने संविधान द्वारा लाए गए बदले हुए कानूनी ढांचे पर ध्यान केंद्रित करते हुए माना है कि कैदियों को भी गरिमा के साथ जीने का अधिकार है।

अनुच्छेद 14 के संबंध में न्यायालय ने कहा कि राज्य किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता या भारत के राज्यक्षेत्र में कानूनों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा तथा समानता संवैधानिक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने कहा, अनुच्छेद 14 के तहत न्यायालय द्वारा निर्धारित संवैधानिक मानकों को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। सबसे पहले, अगर इसमें स्पष्ट अंतर है और वांछित उद्देश्य के साथ उचित संबंध है तो संविधान वर्गीकरण की अनुमति देता है। दूसरा, केवल निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए वर्गीकरण परीक्षण को गणितीय सूत्र के रूप में लागू नहीं किया जा सकता है...। इसके बाद फैसले में अनुच्छेद 15 पर बात की गई जो जाति, नस्ल, धर्म, भाषा आदि के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित करता है।

न्यायालय ने कहा, अगर राज्य स्वयं किसी नागरिक के विरुद्ध किसी भी आधार पर भेदभाव करता है, तो यह सर्वोच्च स्तर का भेदभाव है। आखिरकार, राज्य से भेदभाव को रोकने की अपेक्षा की जाती है न कि उसे कायम रखने की। इसलिए हमारा संविधान राज्य को किसी भी नागरिक के विरुद्ध भेदभाव करने से रोकता है। शीर्ष अदालत ने कहा कि भेदभाव निषिद्ध है, क्योंकि इसका मानव जीवन पर कई तरह से प्रभाव पड़ता है और यह किसी व्यक्ति या समूह के प्रति श्रेष्ठता या हीनता, पूर्वाग्रह, अवमानना या घृणा की भावना के कारण उत्पन्न होता है।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, इतिहास में इस तरह की भावनाओं ने कुछ समुदायों के नरसंहार को जन्म दिया। जिस व्यक्ति के साथ भेदभाव किया जाता है, इससे उसके आत्म-सम्मान को भी ठेस पहुंचती है। यह अवसरों के अनुचित हनन और लोगों के एक समूह के खिलाफ निरंतर हिंसा का कारण बन सकता है। समाज के वंचित वर्ग से किसी व्यक्ति का लगातार उपहास उड़ाकर या अपमानित करके भी भेदभाव किया जा सकता है। यह उस व्यक्ति के लिए बहुत पीड़ादायक होता है जो आजीवन उसे प्रभावित कर सकता है।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, भारत के संविधान के लागू होने से पहले बनाए गए भेदभावपूर्ण कानूनों की जांच की जानी चाहिए और उन्हें समाप्त किया जाना चाहिए। न्यायालय ने अनुच्छेद 17 पर कहा कि यह अस्पृश्यता को प्रतिबंधित करता है और किसी भी रूप में इसका प्रचलन निषिद्ध है। अस्पृश्यता की वजह से किसी को भी अयोग्य ठहराना कानून के अनुसार दंडनीय अपराध होगा और इस प्रावधान का संविधान में विशेष स्थान है क्योंकि यह सामाजिक रूप से भेदभाव के चलन को समाप्त करता है। पीठ ने कहा, अनुच्छेद 17 में कहा गया है कि सभी लोग जन्म से समान होते हैं।

अदालत ने मंडोली जेल से स्थानांतरण के खिलाफ ठग सुकेश चंद्रशेखर की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने कई आपराधिक मामलों में अभियोजन का सामना कर रहे कथित ठग सुकेश चंद्रशेखर की याचिका को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, जिसमें जेल अधिकारियों को यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया था कि उसे मंडोली जेल से यहां किसी अन्य जेल में स्थानांतरित न किया जाए। आरोपी ने दलील दी कि वह विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त है और उसे उपचार के लिए सफदरजंग एवं राम मनोहर लोहिया अस्पतालों में ले जाया गया था तथा स्थानांतरण से उसके चिकित्सा उपचार में बाधा उत्पन्न होगी।

उच्च न्यायालय ने माना कि जो उपचार वह करा रहा है, वह उसे अन्य जेल परिसरों में भी आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है। न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा ने कहा, इसलिए, यह देखते हुए कि याचिकाकर्ता को जो उपचार दिया जा रहा है, वह उसे अन्य जेल परिसरों में आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है, इस अदालत को प्रशासनिक कारणों से आवश्यक होने पर याचिकाकर्ता को अन्य जेलों में स्थानांतरित न करने के निर्देश जारी करने की कोई आवश्यकता नहीं लगती है। अदालत ने हालांकि कहा कि यदि चंद्रशेखर को इस जेल से किसी अन्य जेल में स्थानांतरित किया जाता है तो उसे तीन दिन पहले सूचना दी जानी चाहिए।

न्यायालय ने कहा कि चिकित्सा स्थिति रिपोर्ट से स्पष्ट है कि आरोपी को उसकी शारीरिक बीमारियों के कारण सफदरजंग और राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पतालों में ले जाया गया तथा आवश्यकता पड़ने पर उसे उच्चतर केंद्रों में भी ले जाया गया। अदालत ने कहा कि उनकी शारीरिक बीमारियों के लिए उनका इलाज बाहरी अस्पतालों में चल रहा था। साथ ही यह भी कहा गया कि यह दावा किया गया था कि वह चिंता से पीड़ित थे और उनका इलाज मनोचिकित्सक द्वारा किया जा रहा था तथा उनकी वर्तमान स्थिति स्थिर है।

उच्च न्यायालय ने कहा, हालांकि, केंद्रीय कारागार, तिहाड़ में भी मनोरोग उपचार के लिए ऐसी ही सुविधा है। इसलिए, जेल प्रशासन में हस्तक्षेप करने वाले ऐसे निर्देश तब तक नहीं दिए जाने चाहिए जब तक कि जेल प्रशासन की ओर से कोई बाध्यकारी कारण या दुर्भावना न दिखाई दे। चंद्रशेखर ने अपनी याचिका में कहा कि उसे मंडोली जेल से स्थानांतरित न किया जाए क्योंकि वह 2020 से पित्ताशय की पथरी सहित विभिन्न बीमारियों से पीड़ित हैं और उन्हें इलाज के लिए सफदरजंग और आरएमएल अस्पतालों में ले जाया गया था।

ध्वस्तीकरण संबंधी आदेश की अवमानना हुई तो हम ढांचे को बहाल करने के लिए कहेंगे

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि यदि उसने पाया कि गुजरात के अधिकारियों ने संपत्ति के ध्वस्तीकरण संबंधी उसके आदेश की अवमानना की है तो वह उन्हें तोड़े गए ढांचों को फिर से बहाल करने के लिए कहेगा। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ शीर्ष अदालत के 17 सितंबर के आदेश के कथित उल्लंघन के लिए अवमानना कार्यवाही शुरू करने की अपील वाली याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें कहा गया था कि देशभर में अपराध के आरोपियों सहित अन्य लोगों की संपत्तियों का बिना शीर्ष अदालत की अनुमति के ध्वस्तीकरण नहीं किया जाएगा।

याचिकाकर्ता समस्त पाटनी मुस्लिम जमात की ओर से पेश वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े ने कहा कि शीर्ष अदालत के आदेश के बावजूद गुजरात में अधिकारियों ने ढांचों को ध्वस्त कर दिया है। गुजरात के अधिकारियों की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि ढांचे समुद्र से सटे हुए और सोमनाथ मंदिर से लगभग 340 मीटर की दूरी पर थे।

मेहता ने कहा, यह न्यायालय द्वारा निर्धारित अपवाद के अंतर्गत आता है। पिछले महीने अपने आदेश में उच्चतम न्यायालय ने कहा था, हम स्पष्ट करते हैं कि अगर किसी सार्वजनिक स्थान जैसे कि सड़क, फुटपाथ, रेलवे लाइन या नदी अथवा किसी जल निकाय से सटी कोई अनधिकृत संरचना है तो हमारा आदेश लागू नहीं होगा। इसके अलावा ऐसे मामलों में जहां किसी अदालत द्वारा तोड़फोड़ का आदेश दिया गया हो, वहां भी हमारा आदेश लागू नहीं होगा। पीठ ने शुक्रवार को सुनवाई के दौरान कहा, अगर हमें लगता है कि वे हमारे आदेश की अवमानना कर रहे हैं, तो हम न केवल उन्हें जेल भेजेंगे बल्कि हम उनसे यह सब बहाल करने के लिए भी कहेंगे।

पत्रकारों के खिलाफ महज इसलिए मामला दर्ज नहीं किया जाना चाहिए कि उनके लेख आलोचनात्मक हैं : न्यायालय

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि पत्रकारों के खिलाफ केवल इसलिए आपराधिक मामला नहीं दर्ज किया जाना चाहिए क्योंकि उनके लेखन को सरकार की आलोचना के रूप में देखा जाता है। न्यायमूर्ति हृषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी की पीठ ने कहा कि लोकतांत्रिक देशों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान किया जाता है और संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत पत्रकारों के अधिकार संरक्षित हैं। पीठ पत्रकार अभिषेक उपाध्याय द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिन्होंने उत्तर प्रदेश में सामान्य प्रशासन में जाति विशेष की सक्रियता संबंधी एक कथित रिपोर्ट को लेकर अपने खिलाफ दर्ज प्राथमिकी को रद्द करने का अनुरोध किया है।

पीठ ने कहा, केवल इसलिए कि किसी पत्रकार के लेखन को सरकार की आलोचना माना जाता है, पत्रकार के खिलाफ आपराधिक मामला नहीं दर्ज किया जाना चाहिए। इस याचिका पर उत्तर प्रदेश सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगते हुए पीठ ने कहा, इस बीच, संबंधित रिपोर्ट के संबंध में याचिकाकर्ता के खिलाफ कोई दंडात्मक कदम नहीं उठाया जाना चाहिए।

पीठ ने अपने आदेश में कहा कि याचिकाकर्ता एक पत्रकार हैं और उन्होंने राज्य में जिम्मेदार पदों पर तैनात अधिकारियों पर जातिवादी झुकाव वाली एक रिपोर्ट प्रकाशित की। पीठ ने कहा कि इस रिपोर्ट के बाद उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। पीठ ने अपने आदेश में कहा, याचिकाकर्ता के वकील ने प्राथमिकी की सामग्री को पढ़ते हुए कहा कि उक्त प्राथमिकी से कोई अपराध नहीं बनता है। फिर भी याचिकाकर्ता को निशाना बनाया जा रहा है और चूंकि रिपोर्ट एक्स पर पोस्ट की गई थी, इसलिए इसके परिणामस्वरूप कई अन्य प्राथमिकी दर्ज हो सकती हैं।

मामले में अगली सुनवाई चार सप्ताह बाद होगी। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया है कि उसके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज किया जाना राज्य के कानून लागू करने वाले तंत्र का दुरुपयोग करके उसकी आवाज दबाने का स्पष्ट प्रयास है और आगे किसी भी तरह के उत्पीड़न को रोकने के लिए इसे रद्द किया जाना चाहिए। पत्रकार अभिषेक उपाध्याय की याचिका में दावा किया गया है कि जब उन्होंने यादव राज बनाम ठाकुर राज शीर्षक से खबर की तो लखनऊ के हजरतगंज थाने में 20 सितंबर को उनके नाम प्राथमिकी दर्ज की गई।

याचिका में कहा गया है कि प्राथमिकी भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराओं 353 (2) (सार्वजनिक शरारत के लिए बयान), 197 (1) (सी) (राष्ट्रीय एकता के लिए हानिकारक आरोप या कथन प्रकाशित करना), 356 (2) (मानहानि के लिए सजा) और 302 (जानबूझकर किसी व्यक्ति की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले शब्द बोलना) और सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम के प्रावधानों के तहत दर्ज की गई। अधिवक्ता अनूप प्रकाश अवस्थी के माध्यम से दायर याचिका में कहा गया है कि इस रिपोर्ट से, यहां तक कि इसके प्रथमदृष्टया मूल्यांकन से भी, किसी अपराध के होने का खुलासा नहीं होता है। याचिका में कहा गया, याचिकाकर्ता ने इसलिए अदालत का रुख किया है क्योंकि उत्तर प्रदेश पुलिस के आधिकारिक एक्स हैंडल द्वारा कानूनी कार्वाई की धमकी दी गई और याचिकाकर्ता को यह जानकारी नहीं है कि उत्तर प्रदेश या कहीं और इस मुद्दे पर उसके खिलाफ कितनी अन्य प्राथमिकी दर्ज हैं।

ध्वस्तीकरण संबंधी आदेश की अवमानना हुई तो हम ढांचे को बहाल करने के लिए कहेंगेः न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि यदि उसने पाया कि गुजरात के अधिकारियों ने संपत्ति के ध्वस्तीकरण संबंधी उसके हालिया आदेश की अवमानना करने वाला कृत्य किया है तो वह उन्हें तोड़े गए ढांचों को फिर से बहाल करने के लिए कहेगा। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ शीर्ष अदालत के 17 सितंबर के आदेश के कथित उल्लंघन के लिए अवमानना कार्यवाही शुरू करने की अपील वाली याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें कहा गया था कि देशभर में अपराध के आरोपियों सहित अन्य लोगों की संपत्तियों का बिना शीर्ष अदालत की अनुमति के ध्वस्तीकरण नहीं किया जाएगा। पीठ ने गुजरात में सोमनाथ मंदिर के पास ध्वस्तीकरण पर यथास्थिति का आदेश पारित करने से इनकार कर दिया। गुजरात में अधिकारियों ने गिर सोमनाथ जिले में 28 सितंबर को सोमनाथ मंदिर के पास सरकारी भूमि पर अतिक्रमण हटाने के लिए एक ध्वस्तीकरण अभियान चलाया था। प्रशासन ने कहा था कि अभियान के दौरान धार्मिक ढांचों और कंक्रीट के घरों को ध्वस्त कर दिया गया जिससे 60 करोड़ रुपए मूल्य की लगभग 15 हेक्टेयर सरकारी भूमि मुक्त हो गई। याचिकाकर्ता समस्त पाटनी मुस्लिम जमात की ओर से पेश वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े ने कहा कि शीर्ष अदालत के आदेश के बावजूद गुजरात में अधिकारियों ने ढांचों को ध्वस्त कर दिया है। गुजरात के अधिकारियों की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि ढांचे समुद्र से सटे हुए और सोमनाथ मंदिर से लगभग 340 मीटर की दूरी पर थे। मेहता ने कहा, यह न्यायालय द्वारा निर्धारित अपवाद के अंतर्गत आता है। पिछले महीने अपने आदेश में उच्चतम न्यायालय ने कहा था, हम स्पष्ट करते हैं कि अगर किसी सार्वजनिक स्थान जैसे कि सड़क, फुटपाथ, रेलवे लाइन या नदी अथवा किसी जल निकाय से सटी कोई अनधिकृत संरचना है तो हमारा आदेश लागू नहीं होगा। इसके अलावा ऐसे मामलों में जहां किसी अदालत द्वारा तोड़फोड़ का आदेश दिया गया हो, वहां भी हमारा आदेश लागू नहीं होगा। पीठ ने शुक्रवार को सुनवाई के दौरान कहा, अगर हमें लगता है कि वे हमारे आदेश की अवमानना कर रहे हैं, तो हम न केवल उन्हें जेल भेजेंगे बल्कि हम उनसे यह सब बहाल करने के लिए भी कहेंगे। याचिका पर कोई नोटिस जारी किए बिना पीठ ने मेहता से जवाब दाखिल करने के लिए कहा और मामले की अगली सुनवाई के लिए 16 अक्टूबर की तिथि तय की। वरिष्ठ अधिवक्ता हेगड़े ने कहा कि वहां (वह क्षेत्र जहां ध्वस्तीकरण किया गया था) लोगों को जारी किए गए नोटिस में किसी भी तरह के तोड़फोड़ किए जाने की बात नहीं थी, लेकिन 28 सितंबर को ध्वस्तीकरण अभियान चलाया गया। उन्होंने कहा कि 57 एकड़ में फैले क्षेत्र में 45 घर, 10 मस्जिद और पांच दरगाहें शामिल थीं।

न्यायालय ने एमसीडी स्थाई समिति के चुनाव कराने में दिल्ली के उपराज्यपाल की जल्दबाजी पर सवाल उठाए

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की स्थाई समिति के छठे सदस्य के चुनाव के वास्ते कार्यकारी शक्तियों का प्रयोग करने में उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से की गई अत्यधिक जल्दबाजी पर शुक्रवार को सवाल उठाया। न्यायमूर्ति पी. एस. नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आर. महादेवन की पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय से कहा कि वह स्थाई समिति के अध्यक्ष पद का चुनाव तब तक न कराए जब तक वह (न्यायालय) 27 सितंबर को हुए स्थाई समिति चुनाव के खिलाफ महापौर शैली ओबेरॉय की याचिका पर सुनवाई न कर ले। पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता संजय जैन से कहा, यदि आप एमसीडी स्थाई समिति के अध्यक्ष के लिए चुनाव कराते हैं तो हम इसे गंभीरता से लेंगे। पीठ ने कहा कि शुरुआत में वह इस याचिका पर विचार करने की इच्छुक नहीं थी, लेकिन उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना द्वारा दिल्ली नगरपालिका अधिनियम की धारा 487 के तहत अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करने के निर्णय के कारण उसे नोटिस जारी करना पड़ा। पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय से कहा, यदि आप दिल्ली नगर निगम अधिनियम की धारा 487 के तहत कार्यकारी शक्तियों का इस्तेमाल करना शुरू करते हैं तो लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा। आप चुनावी प्रक्रिया में बाधा कैसे डाल सकते हैं। पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय से दो सप्ताह में जवाब मांगा और मामले की सुनवाई शीर्ष अदालत के दशहरा अवकाश के बाद निर्धारित की।

कारागारों में जाति आधारित भेदभव पर प्रतिबंध संबंधी न्यायालय का फैसला स्वागत योग्यः माकपा

नई दिल्ली। माकपा ने कारागारों में जाति आधारित भेदभाव पर प्रतिबंध लगाने संबंधी उच्चतम न्यायालय के फैसले का शुक्रवार को स्वागत किया और राज्यों से इसे लागू करने के लिए कदम उठाने की मांग की। प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ द्वारा दिया गया निर्णय घृणित जाति व्यवस्था के खिलाफ अत्यंत आवश्यक लड़ाई में न्यायपालिका की ओर से किया गया एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। कैदियों को भी सम्मान के साथ जीने का अधिकार है और विभिन्न कारागारों की नियमावालियों और कानूनों में जातिगत पूर्वाग्रह और अलगाव की अनुमति देने वाले प्रावधानों को असंवैधानिक करार दिया। माकपा सभी राज्यों से मांग करती है कि शीर्ष अदालत द्वारा दिए गए सुझावों को तीन महीने के भीतर लागू करने के लिए कदम उठाए ताकि कारागारों में जाति आधारित भेदभाव को समाप्त किया जा सके।

तेलंगानाः नृत्य निर्देशक जानी मास्टर को अंतरिम जमानत मिली

भाषा। हैदराबाद

अपने साथ काम करने वाली एक महिला का कथित तौर पर यौन उत्पीड़न करने को लेकर पिछले महीने गिरफ्तार किए गए नृत्य निर्देशक जानी मास्टर को हैदराबाद की एक अदालत ने अंतरिम जमानत दे दी है। अदालत ने बृहस्पतिवार को जानी मास्टर को छह अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक अंतरिम जमानत दी, जिनका असली नाम शैक जानी बाशा है। अगले हफ्ते दिल्ली में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में शामिल होने के लिए जमानत अर्जी दायर की थी। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा कि उन्हें 10 अक्टूबर को अदालत में पेश होने का निर्देश दिया गया है। जानी मास्टर को 19 सितंबर को साइबराबाद पुलिस ने गोवा में हिरासत में लिया था और हैदरबाद लाई थी तथा शहर की एक अदालत में पेश किया था जिसने उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया था।

महिला ने जानी मास्टर की सहायक नृत्य निर्देशक के रूप में काम किया था। महिला ने पुलिस में दी एक शिकायत में आरोप लगाया था कि जानी मास्टर ने काम के सिलसिले में 2020 में की गई मुंबई की यात्रा के दौरान उसका यौन उत्पीड़न किया था और बाद में भी उसका यौन शोषण किया।

महिला को जानी मास्टर ने इस बारे में किसी को भी बताने पर गंभीर अंजाम भुगतने की धमकी थी। नरसिंगी पुलिस थाने में, 15 सितंबर को भारतीय दंड संहिता की धारा 376(2)(एन), 506, 323 के तहत एक मामला दर्ज किया गया था। महिला के बयान दर्ज कराने के दौरान यह खुलासा हुआ कि कथित घटना के वक्त वह नाबालिग थी। इसलिए, मामले में यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम की धारा भी जोड़ी गई। पीड़िता के बयान के अनुसार, आरोपी ने 2020 से उसके साथ विभिन्न स्थानों-- पीड़िता के घर सहित शूटिंग स्थलों पर कई बार यौन उत्पीड़न किया। साथ ही, आरोपी ने उसके साथ शादी करने के लिए उस पर दबाव भी बनाया।

विनीत गोयल पर प्राथमिकी दर्ज करने संबंधी याचिका पर सोमवार को सुनवाई होगी

कोलकाता। कलकत्ता उच्च न्यायालय आरजीकर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की पीड़िता का कथित तौर पर नाम उजागर करने के लिए कोलकाता के पूर्व पुलिस आयुक्त विनीत गोयल के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की अनुरोध वाली जनहित याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा। नौ अगस्त को आर जी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की चिकित्सक के साथ दुष्कर्म और फिर उसकी हत्या की घटना के समय गोयल कोलकाता पुलिस के आयुक्त थे और अब वह पश्चिम बंगाल पुलिस के विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी) के रूप में तैनात हैं। उच्च न्यायालय के समक्ष एक याचिका दायर की गई जिसमें दावा किया गया कि गोयल ने जारी दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करते हुए पीड़िता का नाम उजागर किया।

अदालत के समक्ष जनहित याचिका पेश करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता महेश जेठमलानी ने कहा कि याचिकाकर्ता ने पीड़िता की पहचान उजागर करने वाले कथित अपराधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने अनुरोध किया है। याचिकाकर्ता कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकील है। जेठमलानी ने मुख्य न्यायाधीश टी एस शिवज्ञानम की अध्यक्षता वाली खंडपीठ को अवगत कराया कि आर जी कर अस्पताल मामले का स्वतः संज्ञान लेकर सुनवाई कर रहे उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि इस मसले पर सुनवाई उच्च न्यायालय कर सकता है।

पीठ में न्यायमूर्ति बिवास पटनायक भी शामिल हैं। पीठ ने कहा कि इस जनहित याचिका को सुनवाई के वास्ते सोमवार के लिए सूचीबद्ध किया गया है। शीर्ष अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने भी पीड़िता की पहचान उजागर नहीं करने के निर्देश दिए थे। राज्य के जूनियर डॉक्टर घटना के तुरंत बाद हड़ताल पर चले गए थे और इस दौरान उन्होंने पीड़िता के लिए न्याय, कार्यस्थल पर सुरक्षा और कोलकाता पुलिस आयुक्त के पद से गोयल को हटाने आदि की मांग भी की थी। उच्च न्यायालय ने इस मामले पर कई जनहित याचिकाओं पर सुनवाई के बाद मामले की जांच कोलकाता पुलिस से लेकर केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को सौंप दी थी। इन जनहित याचिकाओं में पीड़िता के माता-पिता की भी एक याचिका शामिल है, जिन्होंने अपनी बेटी की मौत की निष्पक्ष जांच की मांग की थी।

पेज 1 का शेष

हरियाणा विस ....

ईवीएम सहित कुल 27 हजार 866 ईवीएम (बैलेट यूनिट) का उपयोग होगा। इसके साथ ही 24 हजार 719 कंट्रोल यूनिट तथा 26 हजार 774 वीवीपैट मशीनों का उपयोग किया जाएगा। चुनावों में सुरक्षा की दृष्टि से केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की 225 कंपनियां सुरक्षा की कमान संभालेंगी और फ्लाइंग स्क्वॉड की 500 टीमें तथा 461 स्टेट सर्विलांस टीमें भी तैनात की गई हैं।

मिर्जापुर में...

हो गए। घायलों को तुरंत ट्रॉमा सेंटर (काशी हिंदू विश्वविद्यालय) वाराणसी भेजा गया, जहां उनकी हालत सामान्य बताई जा रही है। उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान भानू प्रताप (25), विकास कुमार (20), अनिल कुमार (35), सूरज कुमार (22), सनोहर (25), राकेश कुमार (25), प्रेम कुमार (40), राहुल कुमार उर्फ टिल्लू (26), नितिन कुमार (22), रोशन कुमार (17) के रूप में हुई है, जबकि आकाश कुमार, जमुनी और अजय सरोज हादसे में घायल हुए हैं। ए सभी वाराणसी जिले के निवासी थे। अभिनंदन ने बताया कि पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर शवगृह भेजा है। इस संबंध में कछवां थाने में मामला दर्ज कर विधिक कार्वाई की जा रही है। उन्होंने बताया कि अधिकारी दुर्घटना के कारणों की गहन जांच कर रहे हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि उत्तर प्रदेश में सड़क दुर्घटना में लोगों की मौत अत्यंत पीड़ादायक है। राष्ट्रपति ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर कहा, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश में सड़क दुर्घटना में कई लोगों की मृत्यु का समाचार अत्यंत पीड़ादायक है। दु:ख की इस घड़ी में, मैं शोकाकुल प्रियजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करती हूं तथा घायल लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं।

प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में हुआ सड़क हादसा अत्यंत पीड़ादायक है। इसमें जान गंवाने वालों के शोकाकुल परिजनों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। उन्होंने कहा, ईश्वर उन्हें इस पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करे। इसके साथ ही मैं सभी घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। राज्य सरकार की देखरेख में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव मदद में जुटा है।

महाराष्ट्र विस...

की स्थिति बनी रही। घटना दोपहर करीब 12.40 बजे हुई। जिरवाल, उनके साथी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) विधायक किरण लहामाटे और भाजपा आदिवासी सांसद हेमंत सवारा उन लोगों में शामिल थे, जिन्होंने तीसरी मंजिल से दूसरी मंजिल पर लगे सुरक्षा जाल पर छलांग लगाई। यह घटना स्थल पर पहले भी आत्महत्या के प्रयासों के जवाब में एहतियात के तौर पर की गई थी। इस विरोध प्रदर्शन में सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन के दो विधायक और एक सांसद शामिल थे, जिसने आदिवासी मुद्दों से निपटने के सरकार के तरीके को लेकर बढ़ते तनाव को उजागर किया।

पश्चिम एशिया ....

के बीच तेजी से बढ़ते हमलों की श्रृंखला में नवीनतम है, जिससे मध्य पूर्व में क्षेत्रव्यापी युद्ध की आशंका है। इजराइल ने कहा कि उसने कई मिसाइलों को रोक दिया, और वाशिंगटन में अधिकारियों ने कहा कि अमेरिकी विध्वंसक जहाजों ने इजराइल की रक्षा में सहायता की। ईरान ने कहा कि उसकी अधिकांश मिसाइलें अपने लक्ष्य पर लगीं। किसी के हताहत होने की तत्काल कोई रिपोर्ट नहीं है।80 वर्षीय खामेनेई ने तेहरान के मुख्य प्रार्थना स्थल मोसल्ला मस्जिद में हजारों लोगों को संबोधित करते हुए 40 मिनट के भाषण में कहा कि लगभग एक साल पहले 7 अक्टूबर, 2023 को दक्षिणी इजरायल पर हमास के नेतृत्व में किया गया हमला फिलिस्तीनी लोगों की एक वैध कार्रवाई थी। उन्होंने कहा कि मंगलवार का मिसाइल हमला अंतरराष्ट्रीय कानून, देश के कानून और इस्लामी मान्यताओं पर आधारित था।

वैश्विक अर्थव्यवस्था ....

इजरायल जवाबी कार्रवाई करता है और संभवतः उसके परमाणु और तेल संयंत्रों पर हमला करेगा। भारत 85 प्रतिशत से अधिक कच्चे तेल के आयात पर निर्भर है, जिसे पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधन में परिवर्तित किया जाता है, और इसकी लगभग आधी गैस की जरूरतें पूरी होती हैं। इनमें से अधिकांश मध्य पूर्व से आते हैं, और अगर इजरायल-ईरान के बीच लंबे समय तक संघर्ष चलता है, तो आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। पीएम मोदी ने कहा, वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए शांति महत्वपूण है।

तिरुपति लड्डू विवाद...

गया था। इससे बड़े पैमाने पर राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है।युवजन श्रमिक रायथू (वाईएसआर) कांग्रेस पार्टी ने आरोप लगाया है कि नायडू ने राजनीतिक लाभ के लिए ए निंदनीय आरोप लगाए और राज्य में सत्तारूढ़ तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) ने अपने दावे के समर्थन में एक प्रयोगशाला रिपोर्ट जारी की। पीठ ने इस मामले में न्यायालय की निगरानी में जांच कराए जाने का अनुरोध करने वाली याचिकाओं सहित कई याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान यह आदेश पारित किया।

पुणे में ...

ले जाने में कामयाबी हासिल की। शुक्रवार सुबह करीब पांच बजे कोंडवा पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई गई। राज्य विधानसभा चुनाव से ठीक पहले हुई इस घटना ने राजनीतिक विवाद का रूप ले लिया है।घटना पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया देते हुए एनसीपी (सपा) सुप्रीमो शरद पवार ने कहा, एक तरफ, हमारे पास भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा घोषित लड़की बहन योजना है, जबकि दूसरी तरफ महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं। एक तरफ, लड़की बहन योजना के माध्यम से महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों के कारण लोगों में काफी गुस्सा है।

ऐतिहासिक कश्मीरी ...

ऑटो रिक्शा व बसों की अवैध पार्किंग के कारण ट्रैफिक जाम की समस्या सबसे ज्यादा रहती है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा आईएसबीटी कश्मीरी गेट, मेट्रो स्टेशन के आसपास भी अतिक्रमण है, जिससे यहां ट्रैफिक जाम रहता है।

वर्मा के मुताबिक अतिक्रमण हट जाए और ऑटो रिक्शा व निजी वाहनों को नियंत्रित कर दिया जाए तो समस्या का समाधान हो जाएगा। परिवहन विभाग के अधिकारियों के मुताबिक दिल्ली सरकार ने नई नीतियां लागू कर अंतरराज्यीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) के आसपास ट्रैफिक जाम कम करने के लिए कदम उठाए हैं। इसके तहत अब निजी और सरकारी अंतरराज्यीय बसों के लिए पार्किंग और बस बे उपयोग शुल्क एक समान होगा, ताकि निजी बसों को सड़क किनारे अवैध रूप से पार्क करने से रोका जा सके, जिससे ट्रैफिक जाम होता है। इसके अलावा बसों को पूर्व निर्धारित दर पर 25 मिनट का निश्चित पार्किंग समय दिया जाएगा।

अगर कोई बस इस आवंटित समय से अधिक खड़ी होगी तो उससे अतिरिक्त शुल्क लिया जाएगा। अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए बिना फास्टैग वाली बसों को टर्मिनल में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। दिल्ली में तीन आईएसबीटी हैं - कश्मीरी गेट, आनंद विहार और सराय काले खां। राज निवास के अधिकारियों ने कहा कि आईएसबीटी के बाहर यातायात की भीड़ अब कम हो गई है, और आईएसबीटी के बाहर यातायात और पैदल यात्रियों की आवाजाही पर कम टर्नअराउंड समय के प्रभाव का पता लगाने के लिए यातायात पुलिस से एक रिपोर्ट भी मांगी गई है। आईएसबीटी कश्मीरी गेट पर, नए आदेश के बाद औसत टर्नअराउंड समय अगस्त में 45 मिनट से घटकर 29 मिनट हो गया है, तब से औसतन 19 मिनट हो गए हैं। अगस्त में टर्मिनल से आने-जाने वाली बसों की संख्या औसतन अगस्त में टर्मिनल से आने-जाने वाली बसों की संख्या औसतन प्रतिदिन 1,373 थी और अब यह 1,644 प्रतिदिन है।विशेष रूप से, केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई) ने कश्मीरी गेट अंतरराज्यीय बस टर्मिनस (आईएसबीटी) के आसपास के क्षेत्र को भीड़भाड़ से मुक्त करने के लिए यातायात डायवर्जन योजना में कई दीर्घकालिक संशोधनों का प्रस्ताव दिया है।

कांग्रेस ने पूरे उत्तर भारत को मादक पदार्थों का केंद्र बनाया था : शाह

भाषा। अहमदाबाद

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली में मादक पदार्थ की जब्ती को लेकर शुक्रवार को कांग्रेस पर हमला बोला और आरोप लगाया कि 2014 से पहले जब वह (कांग्रेस) सत्ता में थी, तो उसने पूरे उत्तर भारत को अवैध मादक पदार्थ व्यापार का केंद्र बना दिया था।पुलिस ने इस सप्ताह की शुरुआत में दिल्ली में मादक पदार्थ सबसे बड़ी खेप की बरामदगी के तहत 560 किलोग्राम कोकीन और 40 किलोग्राम हाइड्रोपोनिक मारिजुआना जब्त किया, जिसकी अनुमानित कीमत लगभग 5,620 करोड़ रुपए है।गांधीनगर जिले के मनसा कस्बे में एक सभा को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि गिरफ्तार आरोपी तुषार गोयल दिल्ली युवा कांग्रेस के आरटीआई प्रकोष्ठ का अध्यक्ष है।

पिछले 10 वर्षों के दौरान की गई जब्तियों के बारे में आंकड़े देते हुए शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 में पदभार संभालने के तुरंत बाद मादक पदार्थ मुक्त भारत अभियान शुरू किया था। शाह ने कहा, दो दिन पहले दिल्ली में 5,600 करोड़ रुपए का मादक द्रव्य बरामद किया गया। जब कांग्रेस 2004 से 2014 के बीच केंद्र की सत्ता में थी, तब देशभर में करीब 1.52 लाख किलोग्राम मादक द्रव्य जब्त किया गया था। लेकिन हमारे मादक पदार्थ विरोधी अभियान की बदौलत हमने 2014 से 2024 तक 10 वर्षों में 5.43 लाख किलोग्राम ड्रग्स जब्त किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के 10 साल के शासन के दौरान 768 करोड़ रुपए के मादक पदार्थ जब्त किए गए, जबकि 2014 से भाजपा शासन के तहत इतने ही वर्षों में 27,600 करोड़ रुपए के मादक द्रव्य जब्त किए गए। शाह ने पूछा, मैं सोच रहा था कि इन सरकारों के कार्यकाल में हुई जब्तियों में इतना अंतर क्यों है। जांच में पता चला कि मुख्य आरोपी तुषार गोयल, जिसे गिरफ्तार किया गया है, दिल्ली कांग्रेस के आरटीआई प्रकोष्ठ का अध्यक्ष है। क्या किसी राजनीतिक दल के लिए मादक पदार्थों का उन्मूलन करना संभव है, यदि उसके अपने कुछ सदस्य मादक पदार्थों के व्यापार में लिप्त हों? शाह ने कहा कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले कांग्रेस ने पूरे उत्तर भारत को, चाहे वह जम्मू-कश्मीर हो, पंजाब हो, हरियाणा हो या दिल्ली हो, मादक पदार्थ के कारोबार का केंद्र बना दिया था। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने इस कारोबार के खिलाफ निर्णायक कदम उठाए हैं। शाह ने कहा कि गुजरात में भी भाजपा सरकार ने सिर्फ तीन साल में 8,500 करोड़ रुपए का मादक पदार्थ जब्त किया है।

शाह ने कहा, जिस पार्टी के सदस्य खुद मादक पदार्थों के व्यापार में लिप्त हों, वह कभी भी किसी राज्य या देश को नशे की बुराई से मुक्त नहीं कर सकती। प्रधानमंत्री के नशा मुक्त भारत के लक्ष्य को हासिल करने में सक्षम एकमात्र पार्टी भाजपा है। वह मनसा में 421 बिस्तरों वाले अस्पताल की आधारशिला रखने के बाद लोगों को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम से पहले शाह ने गांधीनगर नगर निगम की विभिन्न विकास परियोजनाओं की शुरुआत करने के बाद गांधीनगर शहर में लोगों को संबोधित किया।

क्या ड्रग तस्कर के भाजपा नेताओं से संबंध के बारे में बताएंगे गृह मंत्री: कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने राष्ट्रीय राजधानी से 5,600 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य के मादक पदार्थ की जब्ती के मामले मे गृह मंत्री अमित शाह के हमले पर पलटवार करते हुए शुक्रवार को उन पर असत्य बोलने का आरोप लगाया और सवाल किया कि क्या वह ड्रग तस्कर के भाजपा नेताओं से संबंध के बारे मे बताएंगे। पार्टी के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने मादक पदार्थ जब्ती के मामले मे मुख्य आरोपी की भाजपा के कुछ नेताओं के साथ कथित तस्वीरें साझा करते हुए गृह मंत्री पर पलटवार किया। गृह मंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से 5,600 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य के मादक पदार्थ की जब्ती के मामले मे कांग्रेस के एक पूर्व पदाधिकारी की संलिप्तता को लेकर शुक्रवार को उस पर निशाना साधा और कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार जहां युवाओं को खेल, शिक्षा और नवोन्मेष की ओर ले जा रही है, वहीं, प्रमुख विपक्षी दल उन्हे मादक पदार्थ की अंधेरी दुनिया मे ले जाना चाहता है।शाह ने एक्स पर एक पोस्ट मे कहा, एक ओर जहां मोदी सरकार नशामुक्त भारत के लिए कतई न बर्दाश्त करने की नीति अपना रही है, वहीं उत्तर भारत से पकड़ी गई ड्रग्स की 5,600 करोड़ रुपए की खेप के सिलसिले में कांग्रेस के एक प्रमुख व्यक्ति की संलिप्तता बेहद खतरनाक और शर्मनाक है। गृह मंत्री के इस पोस्ट को रीपोस्ट करते हुए खेड़ा ने कहा, क्या वह इस ड्रग तस्कर का भाजपा नेताओं से कनेक्शन बताएंगे? उन्होंने शाह पर असत्य बोलने का आरोप भी लगाया। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कटाक्ष करते हुए कहा कि गृह मंत्री, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से आगे निकलने की कोशिश कर रहे हैं। दिल्ली पुलिस ने हाल मे ही राष्ट्रीय राजधानी से 560 किलोग्राम से अधिक कोकीन और 40 किलोग्राम हाइड्रोपोनिक मारिजुआना जब्त किया था, जिसकी अनुमानित कीमत करीब 5,620 करोड़ रुपए है। दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ ने दक्षिण दिल्ली के महिपालपुर से चार लोगो को पकड़ा था और उनके पास से 602 किलोग्राम मादक पदार्थ की खेप जब्त की थी।

क्विक न्यूज

आईयूएमएल, एसडीपीआई और जमात-ए-इस्लामी कर रहे अल्पसंख्यकों का ध्रुवीकरण : माकपा

तिरुवनंतपुरम। केरल मे सत्तारूढ़ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि राज्य मे कट्टरपंथी विचारधारा के आधार पर अल्पसंख्यकों की गोलबंदी करने के लिए कांग्रेस की सहयोगी इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल), एसडीपीआई और जमात-ए-इस्लामी ने हाथ मिला लिया है। माकपा के राज्य सचिव एम.वी.गोविंदन ने यहां आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि तीन दलो के इस कदम का केरल की राजनीति पर दूरगामी असर होगा। उन्होने आरोप लगाया कि तीनो दल राज्य मे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मजबूत होने के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर रहे है। गोविंदन ने कहा, वे अब अल्पसंख्यकों को कट्टरपंथी मान्यताओं के आधार पर संगठित करने के लिए सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) की विचारधारा को लागू कर रहे हैं। इस कदम के जरिए वे केरल मे भाजपा को पैठ बनाने के लिए आदर्श स्थिति उत्पन्न कर रहे है। उन्होने आरोप लगाया कि आईयूएमएल, एसडीपीआई और जमात-ए-इस्लामी गत संसदीय चुनाव के बाद से सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की दिशा मे काम कर रहे है और वे ए गतिविधियां जारी रखे हुए है।

बिहार में बाढ़ से अबतक 45 लाख लोग प्रभावित, मुजफ्फरपुर के लोग राहत-कार्यों से नाखुश

पटना-मुजफ्फरपुर। बिहार मे बाढ़ की स्थिति शुक्रवार को भी गंभीर बनी रही, हालांकि कई नदियों का जलस्तर कम हो गया। वही मुजफ्फरपुर में बाढ़ से प्रभावित कुछ लोगो ने अपर्याप्त राहत उपायों का आरोप लगाते हुए सड़क जाम कर दी। अधिकारियो ने यह जानकारी दी। आपदा प्रबंधन विभाग (डीएमडी) के अनुसार, बिहार मे पिछले महीन से दो बार आई आपदा के कारण राज्य के कुल 38 मे 30 जिलो के 45 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बाढ़ प्रभावित प्रत्एक परिवार के बैंक खाते मे 7,000 रुपए की वित्तीय सहायता हस्तांतरित करने की प्रक्रिया शुरू की। उन्होने दरभंगा और आसपास के इलाकों मे बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रो का भी निरीक्षण किया। जल संसाधन विभाग (डब्ल्यूआरडी) ने एक बुलेटिन में कहा, बागमती, बूढ़ी गंडक, गंडक, गंगा और कमला बलान सहित अधिकांश नदियो का जलस्तर कम हो गया है, लेकिन अब भी विभिन्न स्थानो पर एं खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। इसमें बताया गया कि डब्ल्यूआरडी अलर्ट पर है और संवेदनशील स्थानों पर बाढ़ के लिए सुरक्षा संबंधित कार्य किए जा रहे है। हालांकि, मुजफ्फरपुर जिले के औराई क्षेत्र मे बाढ़ प्रभावित कुछ लोग रहात कार्यों से खुश नही है। उन्होने सुरक्षाकर्मियो पर पथराव किया, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी राष्ट्रीय राजमार्ग को घंटों जाम रखा और सड़क पर टायर जलाए। मुजफ्फरपुर की पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) विद्या सागा ने संवाददाताओं को बताया, पुलिस ने मौके पर पहुंचकर ग्रामीणो द्वारा जाम किए गए राजमार्ग को खुलवाया।

झारखंड में राकांपा विधायक कमलेश भाजपा में शामिल

रांची। झारखंड मे आगामी विधानसभा चुनाव से पहले, राज्य मे राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के एकमात्र विधायक कमलेश सिंह शुक्रवार को भाजपा मे शामिल हो गए। प्रदेश के हुसैनाबाद से विधायक ने पिछले साल एक नवंबर को हेमंत सोरेन नीत सरकार से समर्थन वापस ले लिया था। उन्होने कहा कि वह पलामू मे पार्टी को मजबूत करेंगे। सिंह का भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की प्रदेश इकाई के प्रमुख बाबूलाल मरांडी ने पार्टी मुख्यालय मे एक समारोह के दौरान भाजपा मे स्वागत किया। मरांडी ने कहा, सिंह के भाजपा में शामिल होने से पार्टी को नई मजबूती और ताकत मिलेगी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा भी कार्यक्रम मे उपस्थित थे। वह झारखंड के लिए भाजपा के चुनाव सह-प्रभारी है। शर्मा ने कहा, झारखंड मे भाजपा के पक्ष मे माहौल बन गया है। यहां बदलाव होगा और इसे कोई नही रोक सकता। मेरा मानना है कि सिंह के शामिल होने से इसे और मजबूती मिलेगी। उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी का एकमात्र उद्देश्य झारखंड मे पूर्ण बहुमत की सरकार बनाना और इसे देश के शीर्ष पांच विकसित राज्यो में से एक बनाना है। वही, सिंह ने कहा, बांग्लादेशी घुसपैठ पर अंकुश नही लगाया जा रहा है, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है और गठबंधन सरकार के मौजूदा शासन मे कानून व्यवस्था की स्थिति खराब हो गई है।

कांग्रेस ने उखरूल हिंसा, पुलिस थाने से हथियार लूटने की घटना की जांच की मांग की

इम्फाल। कांग्रेस की मणिपुर इकाई के अध्यक्ष के. मेघचंद्र ने शुक्रवार को उखरूल हिसा मामले की जांच की मांग की। राज्य के उखरूल कस्बे में दो गुटो के बीच झड़प के दौरान भीड़ ने एक पुलिस थाने पर धावा बोल दिया था और हथियार लूट लिए थे। कस्बे मे स्वच्छता अभियान के तहत एक विवादित भूमि की सफाई को लेकर बुधवार को दो गुटो के बीच हुई गोलीबारी में चार लोगों की मौत हो गई थी और 20 अन्य घायल हो गए थे। मेघचंद्र ने पत्रकारों से कहा, मणिपुर सरकार उपद्रवियों को हथियारो की आपूर्ति करने वाली बन गई है, जैसा कि उखरूल हिसा मे देखा गया, जब भीड़ ने एक और पुलिस थाने में लूटपाट की। उन्होंने पूछा, जब भी हिसा भड़कती है तो पुलिस थानों से सरकारी हथियार क्यों लूटे जाते हैं। हम इसे लूटपाट नही कहेंगे, बल्कि हम इसे हथियारों की आपूर्ति कहेंगे। उन्होने आरोप लगाया कि जिला प्रशासन और गृह विभाग समय रहते हिसा को रोकने मे विफल रहा। मेघचंद्र ने यह भी मांग की कि इस बात की जांच कराई जाए कि उखरूल मे हिसा भड़कने के लिए कौन जिम्मेदार है और क्या इसमें कोई खुफिया विफलता थी।

परंपरा और आधुनिक सुंदरता का संगम दर्शाती हुई बेहतरीन कारीगरी

नई दिल्ली। भारत का सबसे बड़ा आभूषण ब्रांड और टाटा समूह का सदस्य तनिष्क ने त्योहारी सीज़न के अवसर पर अपना सबसे नया मास्टरपीस नवरानी कलेक्शन प्रस्तुत किया है। यह शानदार कलेक्शन आधुनिक रानियों के सम्मान में प्रस्तुत किया गया है। आकर्षक आधुनिकता और क्लासिक शान का सही संतुलन बनाते हुएए यह कलेक्शन उत्सवों की शाही भावना का जश्न मनाता है। राजाओं के दरबारों, शाही महलों और ऐतिहासिक विरासत से प्रेरित, नवरानी कलेक्शन हाथों से बनाए गए आधुनिक प्रकार के पारंपरिक आभूषणों की नयी परिभाषा रचता है। यह कलेक्शन सर्वश्रेष्ठ कुशल कारीगरों की कला को प्रदर्शित करता है, बाथरूम सेटिंग काजर में उच्च चमक वाले कुंदन और मिरर फिनिश ग्लास इनेमल काम और ओम्ब्रे प्रभाव के साथ रंगीन कुंदन का सुंदर उपयोग किया गया है। टाइटन कंपनी लिमिटेड की चीफडिज़ाइन ऑफिसर रेवती कांत ने कहा कि हमें गर्व है कि हमें शाही विरासत से प्रेरित होकर नव.रानी कलेक्शन पेश किया है जो नाजुक शिल्प कौशल को प्रदर्शित करता है। हर आभूषण को बारीकियों पर ध्यान देकर तैयार किया गया है।

एशियन पेंट्स यूट्यूब क्रिएटर्स के साथ की साझेदारी

गुरूग्राम। अग्रणी पेंट और डेकोर ब्रांड एशियन पेंट्सए जो भारत भर में घरों और जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, की ओर से गर्व से पेश है प्रगति के रंग, एक ऐसी कंटेंट सीरीज़ जो एशियन पेंट्स के नियोभारत लेटेक्स पेंटद्वारा शामिल की गई प्रगति की भावना को कैप्चर करती है। यह सीरीज़ यूट्यूब क्रिएटर्स और छोटे शहरों के व्यक्तियों की प्रेरक कहानियों की सराहना करती है और इसमें एक सुनहरे भविष्य की ओर उनकी इस बदलाव यात्रा को दिखाया जा रहा है। श्प्रगति के रंग सिर्फव्यक्तिगत विकास को ही नहीं दिखाती है बल्कि यह ग्रामीण भारत में नियोभारत लेटेक्स पेंट के प्रभाव को भी दिखाती है। एशियन पेंट्स का लक्ष्य इन दूरदर्शी कहानियों की मदद से ग्रामीण भारत के समुदायों की कहानियाँ दिखाकर ग्रामीण ऑडियंस से जुड़ना है और इस बात पर ध्यान दिलाना है कि ये समुदाय देश की प्रगति में कैसे योगदान देते हैं। एशियन पेंट्स के प्रगति के रंग में चार यूट्यूब क्रिएटर्स की प्रेरक कहानियाँ हैं, जो भले ही छोटे शहरों से आते ह, फिर भी अपनी प्रेरणादायक कहानियों और कंटेंट की मदद से सोशल मीडिया पर उनके बड़ी संख्या में फॉलोअर्स हैं। इस सीरीज़ में सोनीपत के एक फिटनेस क्रिएटर और राष्ट्रीय क्रिएटर पुरस्कार विजेता अंकित बैयानपुरिया को दिखाया गया है, जो नियोभारत लेटेक्स पेंट्स के साथ मिलकर एक स्थानीय अखाड़े को फिर से एक नया रूप देकर इसकी दीवारों को युवा पहलवानों के सपनों को दिखाने वाले ग्राफ आर्टवर्क से भर रहे हैं। दूसरे एपिसोड में जामताड़ा के ट्रक ड्राइवर और यूट्यूब स्टार राजेश रवानी को दिखाया गया है जो एक पसंदीदा ढाबे में बदलाव लाते हैं। तीसरे एपिसोड में संतोष जाधव के बारे में बताया गया हैए जिन्हें भारतीय किसान के रूप में जाना जाता है, वे सांगली के एक ऐसे यूट्यूबर हैं जो भारतीय किसानों को आधुनिक पद्धतियों से परिचित कराकर कृषि में क्रांति ला रहे हैं।

अमेज़न का त्यौहारों में ई-कॉमर्स कारोबार बढ़ाने पर जोर

लखनऊ। अमेज़न ने उत्तर प्रदेश और पूरे भारत में विक्रेताओं के लिए 2024 के त्योहारी मौसम को बड़ी सफलता बनाने के लिए विभिन्न किस्म की पहलें और नवोन्मेष किये हैं। इसने विक्रेताओं को अपनी आय बढ़ाने और ग्राहकों को बेहतर मूल्य प्रदान करने में मदद करने के लिए किराने का सामान, फैशन और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी श्रेणियों में बिक्री शुल्क (सेलिंग फीस) में 3 प्रतिशत से 12 प्रतिशत की उल्लेखनीय कटौती की घोषणा की है। इससे विक्रेताओं को दिवाली की खरीदारी की भीड़-भाड़ के लिए अपने संचालन को अनुकूलित करने और त्योहारों के बाद भी व्यवसाय में वृद्धि जारी रखने का अवसर मिलेगा। आगामी त्योहारी मौसम के दौरान उत्तर प्रदेश के एसएमबी के लिए ई-कॉमर्स के जरिये अपने ऑनलाइन व्यवसाय को बढ़ावा देने का एक बड़ा अवसर है। इस साल, राज्य के 200,000 से अधिक विक्रेता अमजन.इन पर अपने उत्पादों को सूचीबद्ध और प्रदर्शित करेंगे और इस तरह भारत के 100 प्रतिशत सेवा योग्य पिन कोड पर उपलब्ध ग्राहकों तक उनकी पहुंच बनेगी। अमेज़न इंडिया में उत्पाद प्रबंधन के निदेशक, विक्रम देशपांडे ने कहा, अमेज़न में, हम उत्तर प्रदेश के एसएमबी को ई-कॉमर्स का लाभ उठाने में मदद कर उन्हें सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हर साल, हम बेहतर उत्पाद लिस्टिंग और सेलेक्शन के जरिये उन्हें त्योहारी मौसम के लिए तैयार करने के लिए विभिन्न किस्म की पहल करते हैं, जो उन्हें अपनी बिक्री बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। हमें विश्वास है कि सेलिंग फीस में कमी और हमारे अन्य समाधान तथा फीचर, विक्रेताओं को त्योहारी मौसम और उसके बाद शानदार सफलता प्राप्त करने में मदद करेंगे।

महिंद्रा पर्यावरण पर देगा विशेष ध्यान

नई दिल्ली। भारत की नंबर 1 इलेक्ट्रिक 3-व्हीलर कंपनी महिंद्रा लास्ट माइल मोबिलिटी लिमिटेड ने महिंद्रा जेडईओ के आधिकारिक लॉन्च की घोषणा की, जो एक क्रांतिकारी नया इलेक्ट्रिक फोर-व्हीलर है। जेडईओ नाम का मतलब है शून्य उत्सर्जन विकल्प, जो इलेक्ट्रिक वाहन के पर्यावरणीय लाभों को दर्शाता है। यह एमएलएमएमएल के मिशन से मेल खाता है- अंतिम मील के परिवहन को विद्युतीकृत करना और ग्राहकों को उनके जीवन में समृद्ध बनाने में मदद करना। दो वेरिएंट में उपलब्ध, महिंद्रा जेडईओ को खास तौर पर शहरी लॉजिस्टिक्स की उभरती मांगों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। एमएलएमएमएल ने महिंद्रा जेडईओ की कीमत बेहद आकर्षक रखी है, जिसकी शुरुआती कीमत 7.52 लाख है। महिंद्रा लास्ट माइल मोबिलिटी की प्रबंध निदेशक और सीईओ सुश्री सुमन मिश्रा ने कहा, महिंद्रा जेडईओ नवीनतम तकनीकों, विश्वसनीय उत्पादों और एकीकृत समाधानों के साथ अंतिम मील इकोसिस्टम को फिर से परिभाषित करने के हमारे सिद्धांतों का एक आदर्श प्रमाण है। हमें विश्वास है कि महिंद्रा वाणिज्यिक 2 टी सेगमेंट में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने में तेजी लाने में मदद करेगा।

सस्पेंस थ्रिलर रेड रूम दर्शकों को मोहेंगे

मुंबई। भारत के सबसे बेहतरीन एंटरटेन्मेंट प्लैटफ़ॉर्म में शुमार हंगामा ने अपने नए सस्पेंस.थ्रिलर रेड रूम् को लॉन्च किया। इस शो के जरिए बॉलीवुड की चर्चित अभिनेत्री डेज़ी शाह अपना ओटीटी डेब्यू करने जा रही हैं। इस बेहद दिलचस्प सीरीज में उनके साथ अमित गौर, अनुज सचदेव, रीना अग्रवाल और रीवा चौधरी भी दिखाई देंगे। इस सीरीज के में हैरतअंगेज रहस्य, मनोवैज्ञानिक उलझन और भावनात्मक नाटकीयता से दर्शकों का सामना होगा। हर नए मोड़ और नई घटना के सामने आने के साथ ही इस सीरीज में दर्शकों की दिलचस्पी हर एपिसोड के साथ बढ़ती जाएगी। रेड रूम सीरीज हंगामा प्लैटफ़ॉर्म के अलावा उसके पार्टनर प्लैटफ़ॉर्म पर भी देखी जा सकेगी ताकि यह ज़्यादा से ज़्यादा दर्शकों तक पहुंच सके। इन पार्टनर प्लैटफ़ॉर्म में टाटा प्ले बिंज हंगामा की प्ले बॉक्स टीवी एनो नेट ब्रॉडबैंड हंगामा मेघबेला का एयर फाइबररेलवायर बीएसएनएल सुपरस्टारए वाचो और एक्टिव फाइबर नेट शामिल हैं।

एयू स्मॉल बैंक का फेस्टिव ऑफर

मुंबई। भारत के सबसे बड़े स्मॉल फाइनेंस बैंक एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक एयू एसएफबी ने इस साल का अपना सबसे बड़ा शॉपिंग फेस्टिवल एयू हार्ट टू कार्ट लॉन्च किया है। 3 अक्टूबर से 3 नवंबर 2024 तक महीनेभर चलने वाला यह फेस्टिव कैंपेन बैंकिंग सेवाओं और शॉपिंग श्रेणियों में विशेष डील प्रदान करता जो मात्र कार्ड.आधारित लाभों से कहीं अधिक हैं। बैंक के कार्यकारी निदेशक और डिप्टी सीईओ उत्तम टिबरेवाल ने कहा कि एयू एसएफबी हमेशा से ही हर टचपॉइंट पर सुखद अनुभव प्रदान कर ग्राहकों के साथ सार्थक संबंध बनाने के लिए समर्पित रहा है। एक सम्पूर्ण बैंक के रूप में हमने सुनिश्चित किया है कि सबके लिए कुछ न कुछ हो चाहे वह खुदरा ग्राहक हों या व्यवसायी। इस कैंपेन सिर्फ बैंक के कार्डधारकों को मिलने वाली छूट से कहीं परे है क्योंकि इसमें ग्राहकों को कई बैंकिंग जरूरतों पर लाभ प्राप्त होंगे जैसे चालू खाते एवं पोस पीओएस से लेकर क्यूआरए लॉकर, टर्म डिपॉजिट और अन्य कई बैंकिंग जरूरतें । इस कैंपेन के जरिये हम अपने ग्राहकों के जीवन को समृद्ध बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि कर रहे हैं। साथ हीए यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि ग्राहकों की वित्तीय यात्रा फायदेमंद और आनंददायक हो।

हरियाणा के लोग प्रधानमंत्री के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए प्रहार करेंगे : राहुल

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की आर्थिक नीतियों को लेकर शुक्रवार को उस पर प्रहार किया और कहा कि हरियाणा के लोग जल्द ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पूंजीवादी नीतियों के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए अगला प्रहार करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि हरियाणा की सत्ता में आने के बाद कांग्रेस रोजगार सृजन पर जोर देगी तथा राज्य को नशामुक्त किया जाएगा जिससे हर परिवार खुशहाल होगा। हरियाणा की सभी 90 सीट के लिए शनिवार को मतदान होगा और मतगणना आठ अक्टूबर को होगी। राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, हाल ही में मैंने गोहाना की स्वादिष्ट जलेबियों और उन्हें अधिक व्यापक रूप से बेचने की संभावना के बारे में बात की थी। भारत में ऐसे ही छोटे उत्पादकों के 5500 समूह हैं, जो उचित सहयोग मिलने पर अपने उत्पादों को दुनिया भर में बेच सकते हैं। उन्हें वित्त, प्रौद्योगिकी, नेटवर्क, ब्रांडिंग और बेहतर आधार प्रदान करने के लिए नीतियों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, इस सहयोग से दुनिया न केवल हमारी मिठाई का आनंद ले सकती है, बल्कि सोपोर के सेब, बल्लारी की जींस, कोल्हापुरी चप्पल, मेघालय के अनानास, बिहार के मखाने, मुरादाबाद के पीतल के बर्तन और बहुत कुछ का आनंद ले सकती है।

भारत हमेशा से हिंदू राष्ट्र रहा है : आरएसएस प्रमुख भागवत

भाषा। कोटा (राजस्थान)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को कहा कि भारत हमेशा से हिंदू राष्ट्र रहा है और अब इसे और अधिक प्रगतिशील, सक्षम और मजबूत इकाई में बदलना होगा। वह राजस्थान के बारां में अपने चार-दिवसीय दौरे के दूसरे दिन एक संवाद सत्र के दौरान एक स्वयंसेवक द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर दे रहे थे। आरएसएस सरसंघचालक ने पुष्टि की कि भारत हमेशा से हिंदू राष्ट्र रहा है और इसे और अधिक उन्नत, सक्षम और मजबूत बनाया जाना चाहिए। समाज को आरएसएस से जोड़ने के तरीके के बारे में उन्होंने कहा कि अजनबियों को परिचितों में, परिचितों को साथियों में और साथियों को स्वयंसेवकों में बदला जाना चाहिए। भागवत ने स्वयंसेवकों के साथ शिव मंदिर परिसर के बाहर पौधारोपण अभियान में भी भाग लिया। इस अवसर पर 51 पौधे लगाए गए और स्वयंसेवकों ने पौधों की देखभाल करने का संकल्प लिया। उन्होंने सुबह बारां में मांगरोल रोड स्थित प्राचीन प्यारेराम मंदिर के दर्शन किए।

रेलवे के निजीकरण क सवाल ही नहीं, किफायती सेवा पर ध्यान : वैष्णव

नासिक। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शुक्रवार को कहा कि रेलवे के निजीकरण का कोई सवाल ही नहीं है और राष्ट्रीय परिवहन सेवा प्रदाता का ध्यान सभी को किफायती सेवा प्रदान करने पर है। रेल मंत्री ने यहां कहा कि इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि लोग 400 रुपए से कम खर्च में 1,000 किलोमीटर तक आराम से यात्रा कर सकें। उन्होंने यहां रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा, अगले पांच वर्षों में रेलवे का पूर्ण कायाकल्प होगा। वंदे भारत, नमो भारत जैसी ट्रेनें, कवच ट्रेन सुरक्षा तंत्र की तैनाती इस बदलाव का नेतृत्व करेंगी।

किसी भी समाज के विकास का आइना है महिला विकास : राष्ट्रपति मुर्मू

भाषा। जयपुर

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि महिलाओं का विकास किसी भी समाज के विकास का आइना है। उन्होंने बच्चों की शिक्षा पर जोर देते हुए शुक्रवार को कहा कि शिक्षा ही विकास की कुंजी है। मुर्मू, ऐतिहासिक मानगढ़ धाम बांसवाड़ा में आदि गौरव सम्मान समारोह को संबोधित कर रही थीं।उन्होंने कहा, आज आदि गौरव सम्मान प्राप्त करने वाले सभी व्यक्तियों और संस्थाओं को मैं बहुत-बहुत बधाई देती हूं। व्यक्तिगत सम्मान प्राप्त करने वाले लोगों में महिलाओं की संख्या अधिक है। यह आदिवासी समाज के लिए, राजस्थान के लिए और पूरे देश के लिए गौरव की बात है। यह मैं इसलिए कह रही हूं कि महिलाओं का विकास, किसी भी समाज के विकास का आईना है। राष्ट्रपति ने कहा कि इस सम्मान समारोह से यह भी सिद्ध हुआ कि जनजाति समुदाय के लोगों में बहुमुखी क्षमता है और उन्होंने अनेक क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया है।

राजनीतिक दलों ने असमिया को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने का स्वागत किया

गुवाहाटी। असमिया सहित चार अन्य भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने के केंद्र सरकार के फैसले का राज्य के सभी राजनीतिक दलों ने स्वागत किया है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शुक्रवार को कहा कि वर्षों से असमिया भाषा को लेकर कई विवाद और आंदोलन हुए हैं। शर्मा ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि हालांकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने असमिया और बंगाली को शास्त्रीय भाषा घोषित करके इस विवाद को हमेशा के लिए खत्म कर दिया। इसके लिए असम के लोग हमेशा मोदी जी के आभारी रहेंगे।

चंद्रबाबू नायडू ने तिरुमला में भगवान वेंकेटश्वर स्वामी को रेशम की पोशाक भेंट की

तिरुपति (आंध्र प्रदेश)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने शुक्रवार को तिरुमला हिल्स स्थित मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी को राज्य सरकार की ओर से पट्टू वस्त्रालू (रेशम की पोशाक) भेंट की। वह नौ दिवसीय सालाना ब्रह्मोत्सव में भाग लेने यहां पहुंचे हैं। नायडू अपनी पत्नी भुवनेश्वरी के साथ शाम में तिरुपति पहुंचे जहां अधिकारियों ने उनका भव्य स्वागत किया। नायडू और उनकी पत्नी ने मंदिर के पुजारियों से वैदिक आशीष और प्रसाद प्राप्त किया। इसके बाद मुख्यमंत्री ने तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) का 2025 का कैलेंडर और डायरी भी जारी की। नायडू ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि ब्रह्मोत्सव में भाग लेने वाले सभी लोगों के लिए यह एक शुभ अवसर होगा। उन्होंने कहा, मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि जब वे मंदिर में आएं तो पवित्रता बनाए रखें। मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि वे टीटीडी की गतिविधियों का समर्थन करें।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज निवेशकों को बना रहा है सशक्त

नई दिल्ली। एचडीएफसी सिक्योरिटीज 2025 में अपनी 25 वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारी कर रही है, यह स्पष्ट है कि कंपनी ने अपनी स्थापना से अब तक एक लंबा सफर तय किया है। एक पारंपरिक पेपर- लीड संगठन से लेकर एक पूर्ण डिजिटल इकोसिस्टम तक की यात्रा एचडीएफसी सिक्योरिटीज की नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता और अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान करने के उसके प्रयास को दर्शाती है। उन्मेष शर्मा, एग्जीक्यूटिव वाईस प्रेसिडेंट, हेड आफ इंस्टीट्यूशनल इक्विटीज, एचडीएफसी सिक्युरिटीज ने आज आयोजित पत्रकार वार्ता में बताया कि डिजिटल संगठन में परिवर्तन ने न केवल एचडीएफसी सिक्योरिटीज को बड़े ग्राहक आधार तक पहुंचने में सक्षम बनाया है, बल्कि तेज और कुशल सेवाओं की भी अनुमति दी है। इन्वेस्टराइट और एचडीएफसी स्काई जैसे एप्लिकेशन की शुरूआत ने ग्राहक अनुभव को और समृद्ध किया है, जिससे निवेश अधिक सुलभ और उपयोगकर्ता के अनुकूल हो गया है।

अग्रिति को फेस ऑफ जूस का खिताब

मुंबई। ब्यूटी इनोवेशन में अग्रणी जूस कॉस्मेटिक्स ने विश ए कलर, वी डिलीवर प्रतियोगिता के शिखर को चिह्नित किया, जो सौंदर्य उद्योग में उत्कृष्टता के एक दशक का जश्न मनाया गया और पूरे भारत से प्रतिभागियों की रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर, यूपी की अग्रिति खुराना को उनके जीतने वाले नेल पॉलिश शेड अग्रितिज़ लाटे के लिए फेस ऑफ जूस के खिताब से नवाजा गया। जूस कॉस्मेटिक्स ने अपने नवीनतम सुपर सेफ उत्पाद संग्रह: सुपर सेफ कलर मैक्स लिपस्टिकऔर प्लेअप लिपक्रेयॉन कलेक्शन का भी अनावरण किया। इस नई उत्पाद लॉन्च के साथ, ब्रांड ने अपनी वेबसाइट को नया रूप देकर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है, जो प्रेस कॉन्फ्रेंस के दिन लाइव हुआ। कई अन्य प्रतिभागियों में से प्रतियोगिता की विजेता अग्रिति खुराना ने अपनी अनोखी कॉफी-प्रेरित नेल पॉलिश शेड और सौंदर्य के प्रति अपनी जुनून से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। आत्म-अभिव्यक्ति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता दूरदर्शी विचारों का जश्न मनाने के जूस कॉस्मेटिक्स के मिशन के साथ प्रति ध्वनित होती है। सुपर सेफ कलर मैक्स लिपस्टिक और प्लेअप लिपक्रेयॉन कलेक्शन ने जूस कॉस्मेटिक्स की सफलता में इजाफा किया। सुपर सेफ कलर मैक्स लिपस्टिक बायो-रेटिनॉल, शियाबटर और विटामिन ई जैसे प्रमुख तत्व शामिल हैं, जो एक जीवंत रंग सुनिश्चित करता है जो होंठों की सुरक्षा और कंडीशनिंग करते हुए नॉन-ट्रांसफर, मॉइस्चराइजिंग और हाइड्रेटिंग है। इसी तरह, प्लेअप लिपक्रेयॉन कलेक्शन एक बहुमुखी ट्रांसफर-प्रूफ क्रेयॉन प्रदान करता है जो लिपलाइनर के रूप में भी काम करता है, जिसमें सहज अनुप्रयोग के लिए समान पौष्टिक तत्व होते हैं। जूस कॉस्मेटिक्स के प्रोजेक्ट लीड अमृत कामरा ने कहा अग्रिति को हमारे नए चेहरे के रूप में पेश करना सम्मान की बात है। उनकी प्रतिभा और आत्मविश्वास जूस कॉस्मेटिक्स की भावना का प्रतीक है। इसके अलावा, हमारा लक्ष्य व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को बढ़ाने वाले उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध रहना है। हम अपने ग्राहकों को नया सुपर सेफ कलेक्शन उपलब्ध कराने के लिए उत्साहित हैं।

भारत को सैन्य प्रौद्योगिकी और उत्पादन दर में चीन की बराबरी करने क जरूरत : वायुसेना प्रमुख

भाषा। नई दिल्ली

वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह ने शुक्रवार को कहा कि वायुसेना का लक्ष्य स्वदेशीकरण कार्यक्रम के तहत 2047 तक अपनी सभी आवश्यकताओं से जुड़े उत्पादन भारत में करना है। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) को आपूर्ति में देरी को पाटने के अपने वादे के अनुसार सालाना 24 तेजस हल्के लड़ाकू विमानों का उत्पादन करना चाहिए।भारतीय वायुसेना दिवस आठ अक्टूबर से पहले एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए एयर चीफ मार्शल ने कहा कि भारत को प्रौद्योगिकी और सैन्य उपकरणों के उत्पादन की गति के मामले में चीन के बराबर पहुंचने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हम अपने पड़ोसी से बहुत पीछे हैं। वायुसेना प्रमुख सिंह ने साथ ही कहा कि भारतीय सेना विभिन्न आयुध प्रणालियों और रक्षा मशीनों को संचालित करने वाले कर्मियों सहित कार्मिकों के मामले में बहुत आगे है। उन्होंने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि जहां तक जवानों का सवाल है, जहां तक मशीन के पीछे काम करने वाले लोगों का सवाल है, तो हम उनसे बहुत आगे हैं।एयर चीफ मार्शल ने कहा, जहां तक प्रौद्योगिकी का सवाल है, हमारी स्थिति उतनी अच्छी नहीं है। हम पिछड़ गए हैं। कुछ समय पहले हम प्रौद्योगिकी में उनसे बेहतर थेअ लेकिन अब हम उसमें पिछड़ गए हैं और हमें उनसे आगे निकलने की जरूरत है। उन्होंने कहा, जहां तक उत्पादन दर का सवाल है, हम काफी पीछे हैं। हमें उस स्तर तक पहुंचने की जरूरत है जो समय के साथ होगा। यह रातोरात नहीं हो सकता। भारत और चीन के बीच पूर्वी लद्दाख गतिरोध में जारी गतिरोध पर वायुसेना प्रमुख ने कहा कि स्थिति वैसी ही है जैसी पिछले एक साल से थी, लेकिन इस दौरान बुनियादी ढांचे का विकास बहुत तेजी से हुआ है। उन्होंने कहा, हम इसके अनुरूप प्रयास कर रहे हैं। हम अपने हवाई पट्टियों का उन्नयन कर रहे हैं। नई हवाई पट्टी बन रही हैं। वायुसेना प्रमुख ने हथियारों और अन्य प्रणालियों में भारत के आत्मनिर्भर बनने के महत्व को रेखांकित किया और कहा कि भविष्य की रक्षा चुनौतियों का सामना करना महत्वपूर्ण है।

इजराइल का बेरूत में भीषण हवाई हमला

सीरिया से मुख्य सड़क संपर्क को काटा

भाषा। बेरूत

इजराइल ने बेरूत के दक्षिणी उपनगरीय इलाकों में रातभर कई चरणों में भीषण हवाई हमले किए तथा लेबनान एवं सीरिया के बीच के मुख्य सड़क संपर्क को काट दिया। इजराइली बमबारी के कारण लेबनान से भाग रहे हजारों लोग जिस सीमावर्ती स्थल से सीरिया में प्रवेश करते हैं वह इसी मार्ग पर स्थित है। रात भर हुए विस्फोटों ने बेरूत के दक्षिणी उपनगरीय इलाकों को हिलाकर रख दिया। हवाई बमबारी के कारण रात में आकाश में धुएं के गुबार और आग की लपटें उठती दिखीं। विस्फोट इतने शक्तिशाली थे कि लेबनान की राजधानी से कई किलोमीटर दूर तक की इमारतें हिल गईं। इजराइली सेना ने फिलहाल यह नहीं बताया है कि उसका लक्ष्य क्या था। हताहतों के बारे में भी अभी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। इजरायली सेना ने शुक्रवार को कहा कि एक दिन पहले बेरूत में एक हमले में हिजबुल्ला के संचार प्रभाग के प्रमुख मोहम्मद राशिद स्केफी की मौत हो गई थी। सेना ने एक बयान में कहा कि स्केफी हिजबुल्ला का एक वरिष्ठ आतंकवादी था जो वर्ष 2000 से संचार इकाई के लिए जिम्मेदार था और संगठन के उच्चाधिकारियों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा था। लेबनान की सरकारी राष्ट्रीय समाचार एजेंसी ने बताया कि बृहस्पतिवार देर रात क्षेत्र में लगातार 10 से अधिक हवाई हमले किए गए। एजेंसी ने बताया कि इजराइली हवाई हमले के कारण व्यस्त मसना बॉर्डर क्रॉसिंग के पास सड़क संपर्क कट गया, जहां से पिछले दो हफ्तों में लेबनान में युद्ध के कारण हजारों लोग भागकर सीरिया में घुस गए हैं। दोनों देशों को जोड़ने वाले सबसे व्यस्त सड़क संपर्क को काटने वाले हवाई हमले के एक दिन पहले एक इजराइली सैन्य प्रवक्ता ने कहा था कि हिजबुल्ला सीमा पार से सैन्य उपकरणों के परिवहन की कोशिश कर रहा है। ऐसा माना जाता है कि हिजबुल्ला को अपने अधिकांश हथियार सीरिया के रास्ते ईरान से प्राप्त हुए हैं। संगठन की सीमा के दोनों ओर मौजूदगी है, एक ऐसा क्षेत्र जहां वह सीरियाई राष्ट्रपति बशर असद की सेना के साथ लड़ रहा है।

इजराइल ने हमला किया, तो उसका जवाब पहले से कहीं अधिक जोरदार तरीके से दिया जाएगा : ईरानी विदेश मंत्री

बेरूत। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने शुक्रवार को चेतावनी दी कि अगर इजराइल उनके देश पर हमला करता है, तो उसका जवाब पहले से कहीं अधिक जोरदार तरीके से दिया जाएगा। अब्बास इस समय लेबनान के अधिकारियों से मुलाकात करने के लिए बेरूत में है। ईरान के इजराइल पर कम से कम 180 मिसाइलें दागने की घटना के बाद वह तीन दिवसीय यात्रा पर लेबनान पहुंचे हैं। हाल के दिनों में पश्चिम-एशिया में एक के बाद एक घटनाएं हो रही है, जिससे क्षेत्र युद्ध के मुहाने पर खड़ा हो गया है। अब्बास ने लेबनान की संसद के अध्यक्ष नबी बेरी से मुलाकात के बाद कहा, अगर इजराइल हमारे खिलाफ कोई कदम उठाता है, तो हमारा जवाब पहले से कहीं अधिक जोरदार होगा।

हैती में गिरोह के हमले में 20 से अधिक लोग मरे, 50 लोग घायल

भाषा। पोर्ट ऑ प्रिंस (हैती)

अफ्रीकी देश हैती के पोंट सोनडे शहर में एक गिरोह के लोगों ने बृहस्पतिवार को तड़के हमला किया जिसमें बच्चों सहित 20 से अधिक लोग मारे गए और 50 लोग घायल हो गए। एक मानवाधिकार संगठन ने यह जानकारी दी (वार्ता, सुलह एवं जागरूकता आयोग की प्रवक्ता बेर्टाइड होरेस ने बताया कि ग्रान ग्रिफ गिरोह के लोगों ने पोंट–सोनडे शहर में हमला किया और घरों और कारों को आग लगा दी जिसमें कम से कम 20 लोग मारे गए और 50 लोग घायल हो गए।उन्होंने रेडियो किस्केया से कहा, बहुत से लोग इलाका छोड़कर भाग गए। सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक वीडियो में लोगों का एक समूह झाड़ियों के बीच से भागता हुआ दिखाई दे रहा है, जिसमें एक महिला की सांस फूल रही थी और वह कह रही है, कहां जाए,एक अन्य वीडियो में गिरोह के लोगों के आने की बात सुनकर बड़ी संख्या में लोग सड़क पर भागते दिखाई दे रहे हैं।हारेस और अन्य लोगों ने निकट के तटीय शहर सेंट–मार्क की पुलिस की आलोचना की और कहा कि उसने पोंट–सोनडे में हमले के दौरान लोगों की मदद करने के वास्ते कोई कदम नहीं उठाया।एक रिपोर्ट के अनुसार, इस गिरोह में लगभग 100 सदस्य हैं और उन पर हत्या, बलात्कार, डकैती और अपहरण जैसे अपराधों का आरोप हैं।

ब्रिटेन ने संघर्ष प्रभावित लेबनान के लिए मानवीय सहायता भेजी

लंदन। ब्रिटेन ने शुक्रवार को कहा कि वह पश्चिम एशिया में जारी संकट के बीच आम लोगों के व्यापक विस्थापन और मृतकों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर लेबनान को मानवीय सहायता के रूप में एक करोड़ ग्रेट ब्रिटेन पाउंड (जीबीपी) की मदद भेज रहा है।ब्रिटेन का विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय (एफसीडीओ) ब्रिटिश नागरिकों से लेबनान छोड़ने की लगातार अपील कर रहा है। साथ ही एफसीडीओ ने हिज्बुल्ला व इजराइल के बीच तत्काल संघर्ष विराम का अनुरोध किया है। सहायता पैकेज विश्वसनीय मानवीय संगठनों के माध्यम से वितरित किया जाएगा, जो लेबनान में लंबे समय से सहायता प्रदान करने का काम कर रहे हैं। ब्रिटेन की विकास राज्य मंत्री एनेलीज डोड्स ने कहा, लेबनान में संघर्ष के दौरान लोगों को जो नुकसान हुआ है। वह सभी को स्पष्ट रूप से पता है। ब्रिटेन से मिलने वाली यह अतिरिक्त धनराशि तेजी से बिगड़ती मानवीय स्थिति को नियंत्रित करने में मदद करेगी और निरंतर हिंसा से विस्थापित लोगों को राहत प्रदान मिलेगी। उन्होंने कहा, यह जीवन रक्षक सहायता महत्वपूर्ण है, लेकिन यह दीर्घकालिक समाधान नहीं है।

फीफा का इजराइल को निलंबित करने से इनकार

ज्यूरिख। विश्व फुटबॉल की सर्वोच्च संस्था फीफा ने गुरुवार को यहां आयोजित अपनी शीर्ष परिषद की बैठक में इजराइली फुटबॉल महासंघ को निलंबित नहीं किया, लेकिन फलस्तीन के अधिकारियों द्वारा लगाए गए कथित भेदभाव के आरोपों की अनुशासनात्मक जांच के आदेश दिए।उसका एक सीनियर पैनल फलस्तीन के क्षेत्र में स्थित इजराइली फुटबॉल टीमों की इजराइली प्रतियोगिताओं में भागीदारी की जांच करेगा।

श्रीलंका ने 50 भारतीय मछुआरों को रिहा किया

कोलंबो। श्रीलंका के जलक्षेत्र में मछली पकड़ने के आरोप में श्रीलंकाई नौसेना द्वारा गिरफ्तार किए गए 50 भारतीय मछुआरों को शुक्रवार को रिहा कर दिया। यह जानकारी यहां स्थित भारतीय मिशन ने दी। दोनों देशों के मछुआरे अनजाने में एक-दूसरे के जलक्षेत्र में प्रवेश करने के कारण अक्सर गिरफ्तार कर लिए जाते है।

पिगमेंटेड लाइनर्स पर जोर

यूके। पूरी दुनिया के लिए नायका कॉस्मेटिक्स ने त्योहारों के लिए स्टारडस्ट कोम आईलाइनर उतारा है। इन अल्ट्रा-पिगमेंटेड लाइनर्स के साथ अपनी खूबसूरत आँखों को एक ड्रामैटिक लुक देने के लिए तैयार हो जाइए। हाई-शाइन, मिरर जैसा फिनिश और होलोग्राफिक क्रोम फॉर्मूला आपकी आँखों को एक शानदार और ग्लैमरस लुक देता है। ये लाइनर आपको वह परफ़ेक्ट पॉप देते हैं, चाहे आप शार्प विंग लगा रहे हों या रंगों का मज़ेदार स्पलैश। इस्तेमाल में आसान ब्रश लगाने को आसान बनाता है। नायका के प्रवक्ता ने कहा, नायका कॉस्मेटिक्स में, हम ऐसे उत्पाद बनाने के लिए समर्पित हैं जो न केवल नवीनतम रुझानों को दर्शाते हैं बल्कि उन्हें सेट भी करते हैं।

जयशंकर ने श्रीलंका के शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात की

आर्थिक संकट से उबरने में सहयोग का दिया आश्वासन

भाषा। कोलंबो

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके से मुलाकात की और दोनों देशों के बीच जारी सहयोग को प्रगाढ़ करने के तरीकों एवं भारत–श्रीलंका संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा की। जयशंकर ने श्रीलंका को आर्थिक संकट से उबरने में भारत के सहयोग जारी रखने के प्रति भी आश्वस्त किया। श्रीलंका के राष्ट्रपति के रूप में दिसानायके के शपथ लेने के पखवाड़े भर के अंदर, जयशंकर एक दिवसीय दौरे पर शुक्रवार सुबह यहां पहुंचे। उन्होंने श्रीलंका की प्रधानमंत्री हरिनी अमरसूर्या और विदेश मंत्री विजिता हेराथ से भी मुलाकात की। दिसानायके के नेतृत्व वाली नेशनल पीपुल्स पावर (एनपीपी) की सरकार के 23 सितंबर को सत्ता में आने के बाद जयशंकर श्रीलंका का दौरा करने वाले पहले विदेशी राजनयिक हैं। जयशंकर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, (श्रीलंका के) राष्ट्रपति अनुरा दिसानायके से आज कोलंबो में मिलकर अच्छा लगा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पोस्ट में कहा, भारत–श्रीलंका संबंधों के लिए उनकी गर्मजोशी भरी भावनाओं और मार्गदर्शन की सराहना की। दोनों देशों और क्षेत्र के लोगों के लाभ के लिए जारी सहयोग को प्रगाढ़ करने और भारत–श्रीलंका संबंधों को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। इसके शीघ्र बाद, दिसानायके ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि चर्चा पर्यटन, ऊर्जा और निवेश में सहयोग बढ़ाने तथा मत्स्य पालन, सुरक्षा और राष्ट्रीय एकता पर सहयोग जारी रखने पर केंद्रित रही। उन्होंने कहा, भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर की श्रीलंका की आधिकारिक यात्रा के दौरान आज उनसे मुलाकात की। श्रीलंका के राष्ट्रपति ने पोस्ट में कहा, डॉ जयशंकर ने श्रीलंका को आर्थिक संकट से उबरने में भारत के सहयोग की बात दोहराई।

चीन के बढ़ते प्रभाव के लिए जिम्मेदार लोग चीनी गाथा की सराहना कर रहे: गोयल

वाशिंगटन। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बृहस्पतिवार को कहा कि पूरी दुनिया जब यह मान रही है कि चीन एक अपारदर्शी अर्थव्यवस्था है तो ऐसे समय मे भी कुछ लोग, जो भारतीय उद्योग में इसके बढ़ते प्रभाव के लिए संभवतः जिम्मेदार हैं, चीनी गाथा की प्रशंसा कर रहे है या उसका बचाव कर रहे हैं। गोयल ने पूर्ववर्ती कांग्रेस नीत सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि यह शर्म की बात है कि भारत ने घटिया और अपारदर्शी कीमत वाले चीनी सामान को भारतीय बाजारों में आने दिया और भारतीय विनिर्माण को नष्ट कर दिया।

युद्ध, अकाल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में अगले हफ्ते से शुरू होगी नोबेल पुरस्कारों की घोषणा

भाषा। स्तावंजर (नॉर्वे)

दुनिया के कई हिस्सों में छिड़े युद्ध, शरणार्थी संकट, अकाल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में अगले हफ्ते से नोबेल पुरस्कारों की घोषणा शुरू हो जाएगी। पुरस्कार के ऐलान के सप्ताह में संयोग से सात अक्टूबर की वह तिथि भी आएगी जो हमास की अगुवाई में इजराइल पर किए गए हमले की बरसी भी है। हमास के हमले के बाद से पूरे पश्चिम एशिया में रक्तपात और युद्ध की शुरुआत हो गई जो करीब सालभर से जारी है। साहित्य और विज्ञान के लिए नोबेल पुरस्कार को छूट दी जा सकती है। लेकिन संघर्ष को समाप्त करने के प्रयासों को मान्यता देने वाला शांति पुरस्कार अगर दिया जाता है तो यह अंतरराष्ट्रीय हिंसा के माहौल में दिया जाएगा। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक डैन स्मिथ ने कहा, मैं दुनिया पर नजर डालता हूं तो बहुत अधिक संघर्ष, शत्रुता और टकराव देखता हूं। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या यह वह वर्ष है जब नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा नहीं की जानी चाहिए। पश्चिम एशिया में जारी घटनाओं के अतिरिक्त स्मिथ ने सूडान में युद्ध और अकाल के खतरे, यूक्रेन में चल रहे संघर्ष और अपने संस्थान की शोध रिपोर्ट का हवाला दिया जिससे पता चलता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्विक सैन्य खर्च सबसे तेज गति से बढ़ रहा है। स्मिथ ने कहा, यह कुछ समूहों को दिया जा सकता है जो साहसपूर्ण प्रयास कर रहे हैं लेकिन हाशिए पर हैं। संभवतः इस साल का नोबेल शांति पुरस्कार रोककर इस तरफ ध्यान आकृष्ट करना ठीक रहेगा। नोबेल पुरस्कार की घोषणा नहीं करना कोई नई बात नहीं है और इसे अब तक 19 बार निलंबित किया जा चुका है।

ताइवान में तूफान क्रैथॉन के शांत होने के बाद यातायात बहाल हुआ

काउशुंग (ताइवान)। ताइवान में तूफान क्रैथॉन के शांत होने के बाद शुक्रवार को कामकाज, कक्षाएं और उड़ानें बहाल हो गईं। तूफान के प्रभाव के कारण ताइवान में मूसलाधार बारिश हुई थी लेकिन आखिरकार यह अब शांत पड़ गया है। उत्तरी तट और पर्वतीय क्षेत्रों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है, जहां शुक्रवार की सुबह दो भूस्खलन हुए। क्रैथॉन की वजह से द्वीपीय देश में अधिकतर जगहों पर जनजीवन तीन दिन तक ठप रहा था, लेकिन शुक्रवार की सुबह यह तूफान कमजोर होकर उष्णकटिबंधीय अवदाब में बदला और वापस समुद्र की ओर चला गया। काउशुंग शहर, पिंगटुंग काउंटी, हुआलिएन काउंटी और न्यू ताइपे के कुछ हिस्सों को छोड़कर स्कूल और कारोबार फिर से खुल गए। दो दिनों से बंद पड़ी घरेलू उड़ानों का परिचालन फिर से शुरू हो गया। क्रैथॉन तूफान के कारण काउशुंग में 126 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं और मूसलाधार बारिश हुई, जिससे पेड़ उखड़ गए और सड़कें जलमग्न हो गईं।

मलेशिया के प्रधानमंत्री विभिन्न विषयों पर अंतरिम नेता यूनुस के साथ चर्चा के लिए बांग्लादेश पहुंचे

ढाका। मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम बांग्लादेश के प्रमुख सलाहकार मुहम्मद यूनुस से मुलाकात करने के लिए शुक्रवार को यहां पहुंचे। यूनुस ने अगस्त में पदभार संभाला था, जब जन-विद्रोह के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना पद छोड़ कर देश से चली गई थी। अधिकारियों और मीडिया की खबरों के अनुसार, अनवर की यात्रा व्यापार एवं निवेश, प्रवासी श्रमिकों और रोहिंग्या शरणार्थी संकट पर केंद्रित होगी। यूनुस ने ढाका के हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर अनवर का स्वागत किया, जहां उन्हें बंदूकों की सलामी दी गई। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के भारत चले जाने के बाद आठ अगस्त को यूनुस के सत्ता संभालने के बाद से यह किसी विदेशी नेता की बांग्लादेश की पहली यात्रा है। यह 11 वर्षों मे किसी मलेशियाई नेता की बांग्लादेश की पहली राजकीय यात्रा भी है। पाकिस्तान से यहां पहुंचे अनवर 58 सदस्ईय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे है। अगले साल, मलेशिया दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संगठन की अध्यक्षता करेगा और बांग्लादेश उस क्षेत्र के साथ अपना व्यापार बढ़ाने के लिए उत्सुक है। बांग्लादेश रोहिंग्या शरणार्थी संकट के समाधान में आसियान को अधिकाधिक रूप से शामिल करने की नीति पर भी काम कर रहा है।

पाकिस्तान ने दिया सशस्त्र बलों के लिए 45 अरब का बजट

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान सरकार ने सशस्त्र बलों के लिए 45 अरब रुपए का अतिरिक्त बजट उपलब्ध कराने का फैसला किया है, ताकि नकदी की कमी से जूझ रहे देश में चीन के वाणिज्यिक हितों की रक्षा करने और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर बाड़ लगाने का प्रबंधन करने की उसकी क्षमता को मजबूत किया जा सके। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की खबर के अनुसार, यह निर्णय बृहस्पतिवार को कैबिनेट की आर्थिक समन्वय समिति (ईसीसी) की बैठक में लिया गया, जिसकी अध्यक्षता वित्त मंत्री मुहम्मद औरंगजेब ने की। अखबार ने कहा कि 45 अरब रुपए में से 35.4 अरब रुपए सेना को और 9.5 अरब रुपए नौसेना को विभिन्न उद्देश्यों के लिए दिए जाएंगे। ईसीसी ने चालू वित्त वर्ष के दौरान रक्षा सेवाओं की पहले से स्वीकृत परियोजनाओं के लिए 45 अरब रुपए के तकनीकी अनुपूरक अनुदान के लिए रक्षा प्रभाग द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव पर विचार किया और उसे मंजूरी दी। जून में बजट की मंजूरी के बाद सशस्त्र बलों के लिए स्वीकृत यह दूसरा बड़ा अनुपूरक अनुदान है। इससे पहले ईसीसी ने ऑपरेशन अज्म–ए–इस्तेहकाम के लिए 60 अरब रुपए दिए थे। ए अनुपूरक अनुदान 2127 अरब रुपए के रक्षा बजट के अतिरिक्त है। आतंकवादी हमलों की बढ़ती संख्या के कारण, चीन ने अपनी सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए आतंकवाद विरोधी सहयोग पर एक समझौते पर हस्ताक्षर करने की मांग की है। चीन ने पाकिस्तान में पहले से काम कर रहे अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक संयुक्त कंपनी की स्थापना का भी प्रस्ताव रखा है।

इमरान खान की पार्टी के विरोध प्रदर्शन से पहले पाकिस्तान में सुरक्षा बढ़ाई गई

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी प्राधिकारियों ने इमरान खान को जेल से रिहा करने का दबाव बनाने के उद्देश्य से पूर्व प्रधानमंत्री की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) द्वारा विरोध प्रदर्शन किए जाने की योजना को विफल करने के लिए देश की राजधानी इस्लामाबाद को शुक्रवार को सील कर दिया।विरोध प्रदर्शन का आह्वान क्रिकेटर से नेता बने 71 वर्षीय खान ने किया था, जो एक वर्ष से अधिक समय से रावलपिंडी की अदियाला जेल में बंद है। उन्होंने अपने समर्थकों से राजधानी के प्रतिष्ठित डी-चौक पर एकत्र होकर विरोध दर्ज कराने को कहा। यह वही जगह है जहां खान ने 2014 में चुनावों में कथित धांधली के खिलाफ 126 दिनों तक धरना किया था। सरकार ने शहर में धारा 144 लागू कर सभी तरह के विरोध प्रदर्शनों एवं सभाओं पर रोक लगा दी और राजधानी के सभी प्रमुख प्रवेश बिंदुओं को अवरुद्ध कर दिया।

क्विक न्यूज

न्यूजीलैंड ने अगर समाचार सामग्री के लिए शुल्क लगाया तो लिंक साझा करना बंद करेंगे : गूगल

वेलिंगटन। गूगल ने शुक्रवार को कहा कि यदि न्यूजीलैंड की सरकार प्रौद्योगिकी कंपनियों को अपने मंच पर प्रदर्शित लेखों के लिए भुगतान को अनिवार्य बनाने वाला कानून पारित करती है, तो वह देश की समाचार सामग्री का अपने मंच पर लिंक साझा करना बंद कर देगी और स्थानीय मीडिया कंपनियों से सहयोग भी रोक देगी। गूगल ने न्यूजीलैंड की समाचार साइट को अपनी सेवा से हटाने का संकल्प शुक्रवार को एक ब्लॉग पोस्ट जारी कर व्यक्त किया। यह उन रणनीतियों की याद दिलाता है, जिसे कंपनी ने तब अपनाया था, जब ऑस्ट्रेलिया और कनाडा हाल के वर्षों में इसी प्रकार के कानून बनाने की तैयारी कर रहे थे।न्यूजीलैंड सरकार ने इस साल जुलाई में हतप्रभ करते हुए घोषणा की थी कि सरकार उस विधेयक पर आगे बढ़ेगी जिसमें प्रौद्योगिकी मंचों पर समाचार सामग्री से उत्पन्न राजस्व को इसे बनाने वाले मीडिया आउटलेट्स के साथ साझा करने के लिए समझौते करना अनिवार्य होगा।

पाकिस्तान : इमरान खान के आह्वान पर इस्लामाबाद में एकत्र हुए प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस का इस्तेमाल

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी अधिकारियों ने जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की रिहाई की मांग को लेकर शुक्रवार को डी-चौक पर एकत्र हुए प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस का इस्तेमाल किया। अधिकारियों ने खान (71) के आह्वान पर आयोजित विरोध प्रदर्शनों को रोकने के लिए इस्लामाबाद और रावलपिंडी के अधिकांश हिस्सों में मोबाइल व इंटरनेट सेवाएं भी निलंबित कर दी। खान एक साल से अधिक समय से रावलपिंडी की अदियाला जेल में बंद है। उन्होंने अपने समर्थकों से राजधानी के इस ऐतिहासिक स्थल पर एकत्र होकर विरोध दर्ज कराने की अपील की थी। यह वही स्थल है जहां खान ने 2014 में चुनावों में कथित धांधली के खिलाफ 126 दिन तक धरना दिया था। डी-चौक पर मीडिया से बात करते हुए इस्लामाबाद के पुलिस महानिरीक्षक सैयद अली नासिर रिजवी ने कहा कि पुलिस ने इस्लामाबाद में प्रवेश के सभी रास्ते बंद कर दिए है और लगभग 30 प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार भी किया है। उन्होंने कहा, जहां भी पुलिस या संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई है, वहां कार्वाई की जा रही है, अब तक 30 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

एसबीआई व सिंगापुर एयरलाइंस के साथ साझेदारी

सिंगापुर। एसबीआई कार्ड ने सिंगापुर की राष्ट्रीय एयरलाइंस सिंगापुर एयरलाइंस लिमिटेड (एसआईए) के साथ आज क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड लॉन्च किया। इस अनूठे यात्रा केंद्रित सह-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड को सुपर-प्रीमियम कार्डधारकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जिसका लाभ ग्राहकों को हवाईयात्रा और जमीन दोनों प्राप्त होगा। एसआईए के इस समूह में सिंगापुर एयरलाइंस, स्कूट एयरलाइन, क्रिसशॉप डॉट कॉम, क्रिस+ लाइफस्टाइल ऐप और पेलेगो शामिल हैं। नए लॉन्च किए गए क्रेडिट कार्ड दो रूपों में उपलब्ध है - क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड और क्रिसफ्लायर कार्ड एपेक्स। इस साझेदारी के साथ, क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड के ग्राहक अपनी यात्रा खर्चों पर कई बड़े पुरस्कार और तमाम तरह के लाभ प्राप्त कर सकेंगे। एसबीआई कार्ड के एमडी और सीईओ श्री अभिजीत चक्रवर्ती ने कहा- आय में वृद्धि, प्रौद्योगिकी की तेजी से प्रगति और डिजिटलीकरण के साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय यात्रा के खर्चों में भी एक नया वर्ग उभर कर सामने आया है। हमें सुपर-प्रीमियम कार्डधारक सेगमेंट में बेहतरीन और शानदार अनुभव प्रदान करने के लिए सिंगापुर एयरलाइंस के साथ साझेदारी करके खुशी हो रही है, जिसके कई लाभ हैं और इस उद्योग में एक नए पैमाने स्थापित करते हैं। इस अवसर पर बोलते हुए, सिंगापुर एयरलाइंस के डिवीजनल वाइस प्रेसिडेंट लॉयल्टी मार्केटिंग ब्रायन कोह ने कहा कि क्रिसफ्लायर की यात्रा एक एयरलाइन लॉयल्टी प्रोग्राम से शुरू होकर एक ट्रेवेल और जीवन शैली - केंद्रित पुरस्कार कार्यक्रम में विकसित हुई है जो हमारे ग्राहकों के लिए पूरे विश्व में खास फायदों का पिटारा खोलता है।

जिंदगी में बेहतरीन ड्रामा और शॉर्ट फिल्मों की गूंज

हालीवुड। जिंदगी डीटीएच लेकर आया है कार्यक्रमों का एक विशेष लाइन-अप। इसमें मशहूर फैमिली शोज़ से लेकर दिलचस्प ड्रामा और हल्की-फुलकी कॉमेडी का पूरा गुलदस्ता है, जिसे हर किसी के मूड और पसंद को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। इस महीने में दर्शकों के लिए कंटेंट की एक बेहद बड़ी लिस्ट पेश की जा रही है, जिसमें क्लासिक और सबसे पसंदीदा शोज़, दिल को भाने वाले बेहतरीन ड्रामा और शॉर्ट फिल्में भी हैं। जिंदगी के पास सबके लिए कुछ ना कुछ है ताकि अक्टूबर महीने में पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए यह एकमात्र जगह बन जाए। महीने की शुरुआत करते हुए जिंदगी डीटीएच अपने साथ लेकर आया है थायस की दिलकश कहानी। फिलहाल इसका पहली बार प्रसारण हर दिन शाम 6 बजे किया जा रहा है। इस इमोशनल ड्रामा में जुनैद खान, हीरा मणि और फराह शाह जैसे कलाकार हैं। इसमें रूबाब की कहानी दिखाई गई है। उसकी तिकड़मबाज मां जेहरा की वजह से अशर के लिए उसके प्यार को कई सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसकी वजह से दिल टूटते हैं और इस शो के मुख्य किरदरों को सभी गलतफहमियों और उलझनों के बीच एक होने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। पहली बार भारतीय दर्शकों के लिए प्रसारित हो रही झूठी अब हर दिन रात 9 बजे देख सकते हैं। इसमें रियल लाइफ जोड़ी इकरा अजीज और यासिर हुसैन, निरमा के इर्द-गिर्द बने एक कॉमेडिक ड्रामा में नजर आ रहे हैं। दरअसल, एक लड़की निरमा अपने सपनों के पीछे भागते हुए कई सारे झूठ के जाल में फंस जाती है। दर्शकों का एक और पसंदीदा शो, सुनो चंदा में इकरा के साथ फरहान सईद अपने सीजन 1 और 2 के साथ वापस लौट रहे हैं।

अमेरिका में दो भारतीय अमेरिकी महिलाएं व्हाइट हाउस फेलो के रूप में नामित

वाशिंगटन। अमेरिका मे दो भारतीय अमेरिकी महिलाओं- बोस्टन से पद्मिनी पिल्लई और न्यूयॉर्क से नलिनी टाटा को बृहस्पतिवार को 2024-2025 के सत्र के लिए व्हाइट हाउस फेलो नामित किया गया। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम के लिए अमेरिका से कुल 15 विशिष्ट प्रतिभाशाली व्यक्तियों का चयन किया गया है। फेलो व्हाइट हाउस (अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय) के वरिष्ठ कर्मचारियों, कैबिनेट मंत्रियों और अन्य शीर्ष प्रशासनिक अधिकारियों के साथ एक साल तक काम करने के बाद एक बेहतर नेता के रूप मे अपने समुदायो की सेवा करते है। व्हाइट हाउस ने एक मीडिया विज्ञप्ति मे कहा कि टाटा को व्हाइट हाउस के कैबिनेट मामलो के कार्यालय मे नियुक्त किया गया है, जबकि पिल्लई को सामाजिक सुरक्षा प्रशासन मे नियुक्त किया गया है। मैसाचुसेट्स के न्यूटन की पिल्लई एक इम्युनो इंजीनियर है जो प्रतिरक्षा विज्ञान मे खोज एवं जैव-सामग्री डिजाइन मे प्रगति के बीच की खाई को पाटने का काम करती है ताकि मानव रोगो के उपचार मे मदद मिल सके। उन्होंने मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) मे एक टीम का नेतृत्व किया जो जानलेवा कैंसर को खत्म करने के लिए नैनोथेरेपी विकसित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी , द अटलांटिक और द न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई मीडिया संगठनो ने पिल्लई के लेख प्रकाशित किए थे जिनमे उन्होंने टीकाकरण, प्रतिरक्षा और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायो पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। पिल्लई ने एल विश्वविद्यालय से इम्यूनोबायोलॉजी मे पीएचडी और रेगिस कॉलेज से बायोकेमिस्ट्री मे स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। टाटा न्यूयॉर्क-प्रेस्बिटेरियन वील कॉर्नेल मेडिकल सेंटर मेमोरियल स्लोन केटरिंग कैंसर सेंटर मे न्यूरोसर्जरी रेजिडेंट है। टाटा ने ब्राउन यूनिवर्सिटी से न्यूरोबायोलॉजी मे बीएससी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से एमफिल, नॉर्थवेस्टर्न फीनबर्ग स्कूल ऑफ मेडिसिन से एमडी और हार्वर्ड केनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट से लोकतंत्र, राजनीति और संस्थाएं विषय मे एमपीपी की डिग्री प्राप्त की है।

ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस क्या होता है, मच्छर जनित घातक बीमारी

सिडनी। अमेरिका में स्वास्थ्य अधिकारी एक दुर्लभ लेकिन संभावित रूप से मच्छर जनित घातक बीमारी के कारण चेतावनी जारी कर रहे हैं और सार्वजनिक पार्कों को बंद किया जा रहा है। इस सप्ताह, अमेरिका के न्यू हैम्पशायर प्रांत के एक व्यक्ति की ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस के कारण अस्पताल में भर्ती होने के बाद मृत्यु हो गई। अमेरिका के अन्य प्रांतों में भी इस बीमारी के मामले सामने आए हैं।लेकिन ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस क्या है? यह कैसे फैलता है? जैसा कि नाम से पता चलता है, क्या घोड़ों का इससे लेना–देना है? और क्या यह ऑस्ट्रेलिया के लिए एक समस्या है? ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस क्या होता है? ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस एक वायरस के कारण होता है जो आमतौर पर केवल अमेरिका के कुछ पूर्वी हिस्सों में पाया जाता है, मध्य अमेरिका से लेकर कनाडा तक। ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस का वायरस तंत्रिका संबंधी रोग, विशेष रूप से इंसेफेलाइटिस (मस्तिष्क की सूजन और सूजन) का कारण बनता है और मच्छर के काटने से मनुष्यों में फैलता है। इस बीमारी के लक्षण गंभीर और संभावित रूप से घातक हो सकते हैं। लेकिन, इस वायरस वाले मच्छर द्वारा काटे गए अधिकतर लोगों में इसके लक्षण नहीं दिखते हैं। जिन लोगों में बीमारी विकसित होती है, उनमें सिरदर्द, गर्दन में अकड़न, भ्रम, दौरे और कोमा जैसे लक्षण शामिल होते हैं। इस बीमारी से पीड़ित गंभीर लक्षण वाले लगभग एक तिहाई रोगियों की मृत्यु हो जाती है तथा जो बच जाते हैं उनमें से कई लोगों को तंत्रिका संबंधी समस्याएं बनी रहती हैं। इस वायरस से केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि घोड़े भी प्रभावित हो सकते हैं और मनुष्यों की तरह संक्रमित मच्छर के काटने से उन्हें भी घातक इंसेफेलाइटिस हो सकता है। इस वायरस की खोज 1831 में अमेरिका के न्यू इंग्लैंड क्षेत्र में घोड़ों में घातक बीमारी के प्रकोप के बाद हुई थी।

जीभ कैंसर कस्टमाइज्ड कीमोथेरेपी से किया ठीक

अमेरिकन ऑन्कोलॉजी इंस्टीट्यूट (एओआई) ने पश्चिम बंगाल के एक 46 वर्षीय मरीज के जीभ के कैंसर का सफल इलाज किया है, जिसे पहले हर तरफ से इंकार मिल चुका था। मरीज इनऑपरेबल जीभ के स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा यानि जीभ के एक दुर्लभ किस्म के कैंसर से जूझ रहा था। इस मरीज के जीभ के दाहिने हिस्से पर एक दर्दनाक लोब्यूलेटेड मास था और काफी समय से तंबाकू चबाने के कारण जीभ के कैंसर से पीड़ित था। जीभ के कैंसर के कारण मरीज को कुछ भी खाने के बाद उसे निगलने और कुछ भी बोलने में मुश्किल पेश आ रही थी। बीते आठ महीनों में बार-बार कैंसर के लक्षण बढ़ रहे थे और पूरी तरह से ठीक नहीं होने वाले अल्सर से काफी परेशानी हो रही थी। उस अल्सर को ठीक करने के पिछले प्रयासों के बावजूद, रोगी की स्थिति लगातार बिगड़ती गई, जिसके लिए एक खास और स्पेशल ट्रीटमेंट एप्रोच की जरूरत थी। मरीज की जांच, कई टेस्टों और बायोप्सी के बाद, जिसमें जीभ के कैंसर की मौजूदगी की पुष्टि हुई, पाया गया कि इस अवस्था में मरीज की सर्जरी नहीं की जा सकती है। उसके बाद, उनका एओआई गुरुग्राम में मेडिकल ऑन्कोलॉजी विभाग में इलाज शुरू किया गया और उनके लिए एक कस्टमाइज्ड कीमोथेरेपी प्रोटोकॉल काफी ध्यान से तैयार किया गया। डोज और शेड्यूलिंग के मामले में रोगी की ज़रूरतों के हिसाब से इस ट्रीटमेंट प्रोसेस को मरीज के लिए पर्सनलाइज्ड तौर पर बनाया गया था। इस टार्गेटेड एप्रोच से उसकी स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ, जिससे वह अब अधिक अच्छे से बोल पाते हैं और खाना भी खा पा रहे हैं। सीटीएसआई-दक्षिण एशिया के सीईओ हरीश त्रिवेदी ने इस मामले पर प्रतिक्रिया देते कहा कि यह सफल उपचार उन डेवलपमेंट्स को सामने लाता है जो हम इनोवेटिव कीमोथेरेपी प्रोटोकॉल के माध्यम से कैंसर केयर में कर रहे हैं। एओआई में हमारी प्रतिबद्धता यह सुनिश्चित करना है कि इस तरह का मॉडर्न इलाज सभी को आसानी से उपलब्ध हो और इलाज प्रभावी हों, खासकर इस तरह के जटिल मामलों वाले रोगियों के लिए।

बादाम के सेवन से होगा पोषण

नवरात्रि के दौरान कई लोग उपवास रखते हैं या शाकाहारी आहार लेते हैं। इसमें बादाम भी शामिल हो जाए, तो आदर्श स्थिति बन जाएगी। बादाम में ग्लूटन नहीं होता है पादपआधारित प्रोटीन अच्छी मात्रा में होता है और 15 जरूरी पोषकतत्व भी होते हैं। बादाम वीगन डाइट लेने वाले लोगों के लिये भी परफेक्ट होती हैं। तरह.तरह के इस्?तेमाल में आ सकने के कारण बादाम नवरात्रि की पारंपरिक मिठाइयों और स्नैक्स का स्वाद बढ़ा देती हैं। स्वाद या त्यौहार के आनंद से समझौता किये बिना बादाम ज्यादा स्वास्थ्यकर विकल्प देती हैं। नवरात्रि के विशेष पकवानों में बादाम डालने से स्?वाद और कुरकुरापन बढ़ जाता है और सेहत को भी कई फायदे मिलते हैं। बादाम एलडीएल और टोटल कोलेस्ट्रॉल लेवल्स को कम करके दिल की सेहत को बेहतर बनाती हैं। जब बादाम को अच्छी तरह से संतुलित आहार में शामिल किया जाता हैए तब वे ब्लड शुगर को मैनेज करने में भी मददगार होती हैं। प्रोटीन और डाइटरी फाइबर समेत 15 जरूरी पोषक.तत्वों से भरपूर बादाम संतुष्टि देती हैं और आपको लंबे समय तक भूख नहीं लगने देती हैं। बादाम वजन को सही रखने में सहायक होती हैं और उन्हें नियमित रूप से खाने पर त्वचा भी ज्यादा स्वस्थ और चमकदार हो जाती है। इसका कारण बादाम में मौजूद विटामिन ई है जोकि एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है। यह विटामिन ऑक्सीडेटिव नुकसान से बचाता है और त्वचा की सेहत का समर्थन करता है। मैक्स हेल्थकेयरए नई दिल्ली में डायटेटिक्स की रीजनल हेड ऋतिका समद्दार ने कहा नवरात्रि के दौरान देश के कई हिस्सों में लोग उपवास रखते हैंए लेकिन कई लोगों को उसका सही तरीका पता नहीं होता है।

कीवियों का उम्दा खेल, सोफी ने दिलाई जीत

● महिला टी20 विश्वकप

भाषा। दुबई

अनुभवी कप्तान सोफी डिवाइन (नाबाद 57 रन) के अर्धशतक और उनकी शानदार रणनीति की बदौलत न्यूजीलैंड महिला टीम ने शुक्रवार को यहां महिला टी20 विश्व कप ग्रुप ए मैच में भारत को 58 रन से हरा दिया। न्यूजीलैंड ने टी20 में भारत के खिलाफ अपनी सबसे बड़ी जीत भी दर्ज कर अपने पिछले 10 मैच के हार के सिलसिले को भी समाप्त किया। भारतीय टीम का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा जो चुनौती पेश किए बिना 19 ओवर में 102 रन पर सिमट गई। न्यूजीलैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला करने के बाद मुश्किल पिच पर डिवाइन के अर्धशतक से चार विकेट पर 160 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। 35 वर्षीय डिवाइन ने इसके बाद अपनी धीमी गेंदबाजों का बेहतरीन इस्तेमाल कर भारतीय टीम को परेशान किया और फिर अपने तेज गेंदबाजों से भारतीय बल्लेबाजों को टिकने नहीं दिया। पिच पर स्ट्रोक खेलना मुश्किल लग रहा था लेकिन डिवाइन ने 36 गेंद की अपनी पारी के दौरान सात चौके जड़े। दीप्ति शर्मा (चार ओवर में बिना विकेट झटके 45 रन) को छोड़कर ज्यादातर भारतीय गेंदबाजों ने पिच का अच्छा इस्तेमाल किया। न्यूजीलैंड के लिए युवा जॉर्जिया प्लिमर ने 34 रन और अनुभवी सूजी बेट्स ने 27 रन का योगदान दिया तथा पावरप्ले में 55 रन जोड़े। वहीं भारतीय टीम ने पहले छह ओवर में शेफाली वर्मा (2), स्मृति मंधाना (12) और कप्तान हरमनप्रीत कौर (15) के विकेट 43 रन पर खो दिए। डिवाइन और ब्रूक हालिडे (12 गेंद में 16 रन) ने महज 4.2 ओवर में 46 रन की साझेदारी निभाई जिससे पिच को देखते हुए न्यूजीलैंड अच्छा स्कोर बनाने में सफल रही। भारत की शुरूआत काफी खराब रही। टीम ने दूसरे ही ओवर में युवा सलामी बल्लेबाज शेफाली का विकेट गंवा दिया जो ईडन कार्सन की गेंद पर उन्हें ही कैच देकर आउट हो गईं।

● भारत को पहले मैच में मिली 58 रन की हार

स्कोरबोर्ड

न्यूजीलैंड पारी : बेट्स का श्रेयंका पाटिल बो अरुंधति 27, प्लिमर का स्मृति बो आशा 34, कर का वस्त्राकर बो रेणुका 13, डिवाइन नाबाद 57, हैलिडे का स्मृति बो रेणुका 16, ग्रीन नाबाद 05, अतिरिक्त : 08, **कुल योग** : 20 ओवर में चार विकेट पर 160 रन, **विकेट पतन** : 1-67, 2-67, 3-99, 4-145, **गेंदबाजी** : वस्त्राकर 1-0-9-0, रेणुका 4-0-27-2, दीप्ति 4-0-45-0, रेड्डी 4-0-28-1, आशा 4-0-22-1 पाटिल 3-0-25-0

भारत पारी : मंधाना का ग्रीन बो कार्सन 12, वर्मा का एवं बो कार्सन 02, हरमनप्रीत पगबाधा बो मेयर 15, रोड्रिग्स का ग्रीन बो तहूहू 13, घोष का डिवाइन बो तहूहू 12, शर्मा का डिवाइन बो तहूहू 13, रेड्डी का बेट्स बो मेयर 01, वस्त्राकर बो कर 08, पाटिल का सब बो मेयर 07, आशा नाबाद 06, रेणुका सिंह का डिवाइन बो मेयर 00, **अतिरिक्त** : 13, **कुल योग** : 19 ओवर में 102 रन पर सभी आउट, **विकेट पतन** : 1-11, 2-28, 3-42, 4-55, 5-70, 6-75, 7-88, 8-90, 9-102, गेंदबाजी : जेस कर 3-0-13-0, ईडन कार्सन 4-0-34-2, रोजमेरी मेयर 4-0-19-4, एमेलिया कर 4-0-19-1, लिया तहूहू 4-0-15-3

दक्षिण अफ्रीका ने वेस्टइंडीज को दस विकेट से हराया

दुबई। दक्षिण अफ्रीका ने आईसीसी महिला टी20 विश्व कप के एकतरफा मैच मे शुक्रवार को वेस्टइंडीज को दस विकेट से हराकर अपने अभियान का शानदार आगाज किया। पहले बल्लेबाजी के लिए भेजे जाने पर वेस्टइंडीज ने छह विकेट पर 118 रन बनाए। स्टीफनी टेलर ने 41 गेंद मे नाबाद 44 रन बनाए। दक्षिण अफ्रीका के लिए बाएं हाथ की स्पिनर नोकुलुलेको एमलाबा ने कैरियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 29 रन देकर चार विकेट लिए जबकि मरियाने काप ने 14 रन देकर दो विकेट चटकाए। जवाब मे दक्षिण अफ्रीका ने 13 गेंद बाकी रहते लक्ष्य हासिल कर लिया। कप्तान लौरा वोल्वार्ट ने 55 गेंद मे 59 रन बनाए जबकि ताजमिन ब्रिट्ज ने 52 गेंद मे 57 रन जोड़े। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजो ने अनुशासित प्रदर्शन करते हुए वेस्टइंडीज के बल्लेबाजो को दबाव मे रखा। काप ने हीली मैथ्यूज (10 रन) को विकेट के पीछे लपकवाकर पहला झटका दिया। कियाना जोसेफ को बाएं हाथ की स्पिनर एमलाबा ने पांचवे ओवर मे बोल्ड किया। वेस्टइंडीज के तीन विकेट 32 रन पर गिर गए थे जब काप ने डिएंड्रा डोटिन (13 रन) को आउट किया। इसके बाद से कैरेबियाई टीम बड़ा स्कोर बनाने में नाकाम रही।

ईरानी कप : मुलानी और कोटियान की फिरकी में फंसा शेष भारत

● मुंबई को बढ़त

लखनऊ। अनुभवी स्पिनर शम्स मुलानी और तनुष कोटियान की शानदार गेंदबाजी के दम पर मुंबई ने शेष भारत के छह विकेट 23 रन के भीतर चटकाकर ईरानी कप मैच के चौथे दिन अहम बढत बना ली। शेष भारत के लिए अभिमन्यु ईश्वरन ने जांबाज पारी खेलते हुए 191 रन बनाए लेकिन दूसरे छोर से ध्रुव जुरेल (93) के अलावा उन्हें कोई सहयोग नहीं मिल सका। मुंबई के पहली पारी के 537 रन के जवाब में शेष भारत ने एक समय चार विकेट पर 393 रन बना लिए थे।जुरेल और ईश्वरन ने पांचवें विकेट के लिए 165 रन जोड़े। इसके बाद हालांकि मुलानी ने दस मिनट के भीतर दोनों बल्लेबाजों को पवेलियन भेजकर मैच का नक्शा पलट दिया। शेष भारत की टीम पहली पारी में 416 रन पर आउट हो गई जिससे मुंबई को 121 रन की अहम बढत मिली। मुंबई ने दूसरी पारी में छह विकेट पर 153 रन बना लिए हैं और उसकी कुल बढत 274 रन की हो गई है। मुलानी ने 40 ओवर में 122 रन देकर और कोटियान ने 27 ओवर में 101 रन देकर तीन तीन विकेट लिए। मुंबई के लिए दूसरी पारी में पृथ्वी साव ने 105 गेंद में 76 रन बनाए, शेष भारत के आफ स्पिनर सारांश जैन ने 18 ओवर में 67 रन देकर चार विकेट लिए। बाएं हाथ के स्पिनर मानव सुतार ने 17 ओवर में 40 रन देकर दो विकेट चटकाए।पहले दिन तीन बल्लेबाजों की ऐशगाह लग रहे विकेट पर चौथे दिन 12 विकेट गिरे जिनमें से 11 स्पिनरों ने लिए।साव ने ऐसी कठिन पिच पर पहले कुछ ओवरों में हमलों का डटकर सामना किया। उन्होंने पहले तीन ओवर में मुकेश कुमार को पांच चौके लगाए जिसके बाद रूतुराज गायकवाड़ ने गेंद स्पिनरों को सौंपी। सारांश और सुतार के आने के बाद मुंबई के विकेट गिरते गए। सुतार ने अजिंक्य रहाणे को और सारांश ने श्रेयस अय्यर को पवेलियन भेजा। साव को सारांश ने बोल्ड किया। साव ने 105 गेंद की अपनी पारी में आठ चौके और एक छक्का लगाया।

त्रिकोणीय टूर्नामेंट रद्द होने के बाद वियतनाम से मैत्री मैच खेलेगा भारत

नई दिल्ली। वियतनाम में त्रिकोणीय टूर्नामेंट रद्द होने के बाद भारतीय पुरूष फुटबॉल टीम 12 अक्टूबर को वियतनाम के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दोस्ताना मैच खेलेगी। लेबनान ने देश में जारी संकट के कारण त्रिकोणीय टूर्नामेंट से नाम वापिस ले लिया। टूर्नामेंट फीफा के अंतरराष्ट्रीय मैच विंडो में सात से 15 अक्टूबर के बीच होना था। भारत को वियतनाम के खिलाफ नौ अक्टूबर को और लेबनान के खिलाफ 12 अक्टूबर को खेलना था।

दीक्षा ने तीन ओवर 76 का कार्ड खेला

शेनजेन। भारतीय महिला गोल्फर दीक्षा डागर ने शुक्रवार को यहां अरामको टीम सीरीज शेनजेन के पहले दौर में तीन ओवर 76 का कार्ड खेला जिससे वह संयुक्त 73वें स्थान पर बनी हुई है। दो बार की एलईटी विजेता दीक्षा ने तीन बर्डी लगाईं और छह बोगी कर बैठी। लेकिन उनकी टीम की साथी गोल्फर मोआ फोल्के (73) ने थोड़ा बेहतर कार्ड खेला जिससे वह संयुक्त 45वें स्थान पर है। बतौर टीम दीक्षा और फोल्के संयुक्त रूप से 13वें स्थान पर है।

मैनचेस्टर यूनाइटेड ने पोर्टो से मैच ड्रॉ कराया

पोर्टो। स्थानापन्न खिलाड़ी हैरी मैगुइरे के दूसरे हाफ के इंजरी टाइम में किए गए गोल की बदौलत मैनचेस्टर यूनाइटेड ने यूरोपा लीग फुटबॉल टूर्नामेंट में पोर्टो के खिलाफ मैच 3-3 से ड्रा खेला। मैनचेस्टर यूनाइटेड एक समय 2-0 से आगे था लेकिन वह इसका फायदा नही उठा पाया। उसे अंतिम 20 मिनट का खेल 10 खिलाड़ियों के साथ खेलना पड़ा क्योंकि ब्रूनो फर्नांडिस को लगातार दूसरे मैच मे रेड कार्ड का सामना करना पड़ा।

कैम्पस ने मैसी को बनाया ब्रांड एंबेसडर

नई दिल्ली। भारत के सबसे बड़े खेल और एथलेटिक फुटवियर ब्रांडों में से एक, कैम्पस एक्टिववियर, ने भारतीय फिल्म अभिनेता विक्रांत मैसी को अपना नया ब्रांड एंबेसडर घोषित किया है। कैम्पस और विक्रांत मैसी के बीच यह साझेदारी स्टाइल, बहुमुखी प्रतिभा और आत्म-अभिव्यक्ति का एक बेहतरीन मिश्रण है–जो अभिनेता और ब्रांड, दोनों की पहचान का प्रतीक है। कैम्पस एक्टिववियर के सीईओ, निखिल अग्रवाल ने इस साझेदारी पर टिप्पणी करते हुए कहा, विक्रांत मैसी का बहुमुखी व्यक्तित्व आज के युवाओं और उभरते कलाकारों के लिए एक प्रेरणा है। उनका सहज आकर्षण और सरलता कैम्पस एक्टिववियर के मूल्यों का प्रतीक हैं।

सुमित नागल विश्व टेंनिस लीग में हिस्सा लेंगे

अबू धाबी। भारत के शीर्ष टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल आगामी विश्व टेनिस लीग (डब्लूटीएल) मे हिस्सा लेंगे, जिसमे दुनिया के नंबर पांच खिलाड़ी दानिल मेदवेदेव, नंबर छह आंद्रे रूबलेव और अमेरिकी ओपन महिला चैम्पियन एरिना सबालेंका जैसे कई वैश्विक सितारे खेलते नजर आएंगे। इसकी घोषणा आयोजकों ने शुक्रवार को की।

'रेवती और नितिन फेनेस्टा ओपन के फाइनल में

नई दिल्ली। तमिलनाडु की गैर वरीय माया रेवती और रेलवे के नितिन कुमार सिन्हा ने शुक्रवार को यहां डीएलटीए परिसर मे उलटफेर भरी जीत से 29वीं फेनेस्टा ओपन राष्ट्रीय टेनिस चैम्पियनशिप मे क्रमशः महिला और पुरूष एकल फाइनल मे प्रवेश किया। रेवती ने महिला एकल वर्ग मे दूसरी वरीय दिल्ली की रिया भाटिया को 6-2, 6-3 से हराकर उलटफेर किया।

क्षेत्ररक्षण कोच दिलीप का ध्यान खिलाड़ियों की लय पर

● भारत के प्रशिक्षण ट्रेनिंग सत्र के दौरान रख रहे नजर

भाषा। ग्वालियर

भारतीय टीम मैदान पर और मैदान के बाहर कई कड़े सत्र के बाद विश्व स्तरीय क्षेत्ररक्षण इकाई में तब्दील हुई है लेकिन शुक्रवार को यहां एमपीसीए स्टेडियम में टीम के क्षेत्ररक्षण कोच टी दिलीप का ध्यान तीव्रता पर नहीं बल्कि लय और प्रवाह पर था।

भारतीय टीम रविवार से यहां बांग्लादेश के खिलाफ शुरू होने वाली तीन मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला की तैयारी में जुटी है।भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा अपलोड किए गए एक वीडियो में दिलीप को यह कहते हुए सुना जा सकता है, जहां आप गेंद फेंक रहे हैं, वहां अपने पैर लाएं। यह इतना ही आसान है। मैं तीव्रता की बात नहीं कर रहा हूं बल्कि आज हमें लय और प्रवाह हासिल करना है। और एक बार जब हम इससे हासिल कर लेंगे तो हम आगे बढ़ेंगे और 15 कैच लेंगे। बीसीसीआई ने ट्वीट किया, ग्वालियर में लय और पूरे जोश के साथ तैयारी। टीम इंडिया ने भारत बनाम बांगलादेश ञ्च20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के पहले मैच से पहले अपना क्षेत्ररक्षण कौशल निखारा। भारतीय खिलाड़ियों ने दिलीप, मुख्य कोच गौतम गंभीर और सहायक कोच रेयान टेन डोशेट की निगरानी में अपने थ्रोइंग कौशल और आउटफील्ड कैचिंग का अभ्यास किया। कप्तान सूर्यकुमार यादव, स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या और अन्य युवा खिलाड़ियों ने कुछ शानदार कैच पकड़े। ग्वालियर में पहले मैच के बाद अगले दो मैच दिल्ली और हैदराबाद में खेले जाएंगे।

ग्वालियर में टी20 मैच के लिए 2500 पुलिसकर्मी तैनात

ग्वालियर। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में रविवार को होने वाले भारत-बांग्लादेश टी20 मैच के लिए 2,500 से अधिक पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया। एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। बांग्लादेश में हिंदुओं पर कथित अत्याचारों के विरोध मे दक्षिणपंथी संगठनों ने रविवार के मैच को रद्द करने की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन किया था। अधिकारी ने कहा कि दोनों टीमें बुधवार से जिन होटलो मे रुकी हुई है, उन्हें कड़ी सुरक्षा के घेरे मे ले लिया गया है। ग्वालियर क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक अरविंद सक्सेना ने पीटीआई को बताया, मैच के दिन दोपहर दो बजे से पुलिसकर्मी सड़कों पर होंगे। मैच खत्म होने के बाद दर्शक जब तक घर नही पहुंच जाते तब तक वे ड्यूटी पर रहेंगे। निषेधाज्ञा लागू होने के बाद निगरानी कड़ी कर दी गई है।

भारत और बांग्लादेश के बीच टी20 मैच से पहले ग्वालियर में निषेधाज्ञा लागू

ग्वालियर। भारत और बांग्लादेश के बीच रविवार को होने वाले पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच से पहले यहां निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है ताकि मैच का सुचारू रूप से आयोजन किया जा सके।अधिकारियों के अनुसार जिला मजिस्ट्रेट ने अपने आदेश में विरोध प्रदर्शन और विशेष रूप से सोशल मीडिया पर भड़काऊ सामग्री के प्रसार पर प्रतिबंध लगा दिया है। यह आदेश सात अक्टूबर तक लागू रहेंगे। हिंदू महासभा ने मैच के दिन (छह अक्टूबर) ग्वालियर बंद का आह्वान किया है। इसके अलावा अन्य संगठनों ने भी विरोध प्रदर्शन की धमकी दी है जिसके मद्देनजर यह फैसला किया गया। हिंदू महासभा ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर किए गए अत्याचारों को लेकर रविवार के मैच को रद्द करने की मांग करते हुए बुधवार को विरोध प्रदर्शन किया था।

शरद कुमार बीसीसीआई भ्रष्टाचार निरोधक ईकाई के नए प्रमुख

नई दिल्ली। चार साल तक आतंकवाद निरोधक संगठन एनआईए के प्रमुख रहे सेवानिवृत आईपीएस अधिकारी शरद कुमार को बीसीसीआई की भ्रष्टाचार निरोधक ईकाई (एसीयू) का नया प्रमुख बनाया गया है। उत्तर प्रदेश के बरेली के रहने वाले 68 वर्ष के कुमार को एक अक्टूबर को एसीयू प्रमुख बनाया गया जो तीन साल तक इस पद पर रहेंगे। बोर्ड के एक सूत्र ने बताया कि 29 सितंबर को बीसीसीआई की सालाना आम बैठक में उनके नाम पर मुहर लगाई गई। वह हरियाणा कैडर के 1979 बैच के आईपीएल अधिकारी हैं और 2013 से 2017 तक राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) के प्रमुख रहे।

हॉकी लीग की सात साल बाद वापसी

पहली बार महिला लीग भी होगी

भाषा। नई दिल्ली

बहुप्रतीक्षित हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) की सात साल बाद 28 दिसंबर से नए स्वरूप में वापसी होगी जिसमें पुरुष और महिला दोनों टीमें भाग लेंगी।पुरुषों की प्रतियोगिता में आठ जबकि महिलाओं की प्रतियोगिता में छह टीमें भाग लेंगी। महिलाओं की स्पर्धा पहली बार आयोजित की जा रही है।लीग का आयोजन 28 दिसंबर से एक फरवरी तक दो स्थानों राउरकेला और रांची में किया जाएगा। पुरुषों की प्रतियोगिता राउरकेला जबकि महिलाओं की प्रतियोगिता रांची में खेली जाएगी। लीग के लिए खिलाड़ियों की नीलामी यहां 13 से 15 अक्टूबर तक होगी। इसके लिए कुल 10 फ्रेंचाइजी मालिक एकत्र होंगे। खिलाड़ियों की नीलामी तीन श्रेणियों दो लाख रुपए, पांच लाख रुपए और 10 लाख रुपए में की जाएगी। हॉकी इंडिया लीग की वापसी देश में हॉकी के इतिहास में ही एक अहम कदम नहीं है बल्कि महिला हॉकी को बढावा देने की दिशा में भी महत्वपूर्ण है। पहली बार महिला लीग शुरू करने से महिला हॉकी खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मंच मिलेगा। पुरूष वर्ग में फ्रेंचाइजी मालिक चेन्नई (चार्ल्स ग्रुप), लखनऊ (याडु ग्रुप), पंजाब (जेएसडब्ल्यू स्पोटर्स), पश्चिम बंगाल (श्राची स्पोटर्स), दिल्ली (महेश भूपति की एसजी स्पोटर्स एंड इंटरटेनमेंट), ओडिशा (वेदांता लिमिटेड), हैदराबाद (रिसोल्यूट स्पोटर्स) और रांची (नवोयम स्पोटर्स वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड) हैं।

बोपन्ना और डोडिग की जोड़ी शंघाई मास्टर्स के दूसरे दौर में

भाषा। शंघाई

भारत के रोहन बोपन्ना और क्रोएशिया के उनके जोड़ीदार इवान डोडिग ने शुक्रवार को यहां पाब्लो कैरेनो बुस्टा और पेड्रो मार्टिनेज पर सीधे सेटों में जीत के साथ एटीपी शंघाई मास्टर्स टेनिस टूर्नामेंट के पुरुष युगल के दूसरे दौर में जगह बनाई। बोपन्ना और डोडिग की पांचवीं वरीयता प्राप्त जोड़ी ने 63 मिनट तक चले शुरुआती दौर के मैच में 6-4, 6-3 से जीत हासिल की। इस तरह से इन दोनों ने जोड़ी बनाने के बाद अपने पहले मैच में ही जीत दर्ज की। बोपन्ना और डोडिग ने पांच ऐस लगाए और आठ ब्रेक प्वाइंट में से तीन को भुनाया। उन्होंने अपने सर्विस गेम में चार बार ब्रेक प्वाइंट के मौके भी बचाए और मैच में केवल एक बार सर्विस गंवाई। सुमित नागल और रामकुमार रामनाथन दोनों के पहले दौर में बाहर होने से भारत की एकल में चुनौती पहले ही समाप्त हो चुकी है। रामकुमार ने क्वालीफाइंग राउंड से मुख्य ड्रॉ में जगह बनाई थी।

क्विक न्यूज

भारत के खिलाफ आक्रामक क्रिकेट खेलेंगे : शंटो

ग्वालियर। बांग्लादेश के कप्तान शंटो नजमुल हुसैन ने शुक्रवार को कहा कि उनकी नए लुक वाली टीम टेस्ट श्रृंखला में मिली हार को भुलाकर भारत के खिलाफ आगामी टी20 श्रृंखला में आक्रामक क्रिकेट खेलेगी। भारत ने टेस्ट श्रृंखला मे बांग्लादेश को 2-0 से शिकस्त दी थी। टी20 श्रृंखला रविवार को यहां नए श्रीमंत माधवराव सिंधिया क्रिकेट स्टेडियम में शुरू होगी। शंटो ने यहां पत्रकारों से कहा, सच कहूं तो हम इस श्रृंखला को जीतना चाहते है। हम आक्रामक क्रिकेट खेलना चाहते है। अगर आप पिछले विश्व कप में हमारे प्रदर्शन को देखें तो हमारे पास सेमीफाइनल मे खेलने का अच्छा मौका था लेकिन हम चूक गए। पर यह एक नई टीम है। इसलिए मुझे उम्मीद है कि सभी खिलाड़ी यहां अच्छा क्रिकेट खेलेंगे। बांग्लादेश के कप्तान ने कहा कि वह टेस्ट श्रृंखला में अपनी टीम के प्रदर्शन के बारे मे नही सोचेंगे। उन्होंने कहा, हम सभी जानते है कि हमने टेस्ट मे अपना सर्वश्रेष्ठ नही दिखाया। हम इस बारे में नही सोच रहे है कि हमने पहले क्या किया है

आईओसी ने आईबीए से जुड़े राष्ट्रीय मुक्केबाजी संघों की मान्यता रद्द करने को कहा

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने अपने सदस्य देशों से निलंबित अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ (आईबीए) से संबंध रखने वाले राष्ट्रीय महासंघो की मान्यता खत्म करने के लिए कहा है जिससे इन दोनो खेल संस्थाओं के बीच चल रहा विवाद और गहरा गया है। आइओसी ने राष्ट्रीय ओलंपिक समितियों (एनओसी) को 30 सितंबर को भेजे गए एक पत्र में दोहराया है कि जो राष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ आईबीए के साथ संबंध समाप्त नही करेंगे, उन्हे 2028 में लॉस एंजिल्स मे होने वाले ओलंपिक खेलो में भाग नही लेने दिया जाएगा। आईओसी ने अपने पत्र में कहा, एनओसी अब उन राष्ट्रीय मुक्केबाजी महासंघो के साथ संबद्ध या संस्थागत संबंध नही बनाए रखेगा जो अभी भी आईबीए से संबद्ध है।

टी 20 जीतने की खुशी को क्रिकेटरों ने साझा किया

मुंबई। भारत जैसे क्रिकेट के प्रति जुनूनी देश में, वर्ल्ड कप जीतने की खुशी की बराबरी शायद कुछ पल ही कर सकता है खास तौर पर जब यह टी20 वर्ल्ड कप हो। इस साल, भारतीय क्रिकेट टीम ने ऐसा ही करके इतिहास में अपना नाम दर्ज करा लिया। नेटफ्लिक्स के द ग्रेट इंडियन कपिल शो के सीजन 2 के एपिसोड में, वर्ल्ड कप चैंपियन ने कई मजेदार और दिल को छू लेने वाले किस्से सुनाए, जिससे दर्शकों को ऐसा लगा कि मानो क्रिकेट टीम खुद ट्रॉफी पकड़े हुए उनके सामने हैं। हंसी, पुरानी यादों और अविस्मरणीय यादों के बीच, यह एपिसोड टी -20 वर्ल्ड कप जीतने की मज़ेदार, अप्रत्याशित यात्रा और इन खिलाड़ियों के अपने परिवारों, फैंस और एक-दूसरे के साथ अविश्वसनीय बॉंड का एक सही मिश्रण था। वर्ल्ड कप चैंपियन को देखें द ग्रेट इंडियन कपिल शो पर रात 8 बजे, सिर्फ़ नेटफ्लिक्स पर देखें! रोहित शर्मा ने मस्ती की शुरुआत की, फिनाले के बाद कैरिबियन में हुए एक अनोखे रोमांच का खुलासा किया। तूफान के कारण बारबाडोस से उनके प्रस्थान में देरी हुई, इसलिए प्रत्येक खिलाड़ी को अपने होटल के कमरे में ट्रॉफी के साथ 15 मिनट बिताने का मौका मिला। रोहित ने हंसते हुए कहा, कोई ट्रॉफी लेकर सोए, तो किसी ने ट्रॉफी के साथ सेल्फी ली, इनमें से सबसे मज़ेदार क्या था? सूर्यकुमार यादव और उनकी पत्नी की एक मजेदार फोटो, जिसमें ट्रॉफी उनके बीच रखी हुई थी, जिसे कपिल शर्मा ने दर्शकों को दिखाने के लिए तैयार की थी।

केएल को इंटर्नशिप अवार्ड्स में शीर्ष रैंकिंग

मुंबई। केएल डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी ने गर्वपूर्वक एडुस्किल्स वर्चुअल इंटर्नशिप रैंकिंग्स 2024 में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन की घोषणा की है। विश्वविद्यालय ने प्रतिष्ठित ऑल इंडिया रैंकिंग्स में स्थान प्राप्त किया है, जिसमें विजयवाड़ा कैंपस ने चौथा और हैदराबाद कैंपस ने सातवां स्थान हासिल किया है। यह सफलता डिजिटल वर्कफोर्स ऑफ टुमॉरो बनाने के मिशन में उनके योगदान और एक उन्नत इंटर्नशिप इकोसिस्टम के निर्माण का परिणाम है।विश्वविद्यालय ने अपनी प्रतिष्ठा को और बढ़ाते हुए एडुस्किल्स सेंटर ऑफ एक्सीलेंस प्रोग्राम में उत्कृष्ट योगदान और बेहतरीन प्रदर्शन के लिए साउथ सेंट्रल ज़ोन की सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी का सम्मान हासिल किया है। ये प्रतिष्ठित पुरस्कार एडुस्किल्स कनेक्ट 2024 के ट्रांसफॉर्म टुगेदर नेक्स्ट जेन स्किल कॉन्क्लेव में नई दिल्ली में प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम को भारत सरकार, नेशनल इंटर्नशिप पोर्टल और ह्यूमन-लाइक अनुवादिनी का समर्थन प्राप्त था। रैंकिंग, 1 दिसंबर 2023 से 30 सितंबर 2024 तक छात्रों द्वारा वर्चुअल इंटर्नशिप कॉहोर्ट्स 7, 8 और 9 की सफल पूर्णता पर आधारित थी।केएल डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. जी.पी.एस. वर्मा को वाइस चांसलर एक्सीलेंस अवार्ड मिला; डॉ. ए. श्रीनाथ, डीन ऑफ स्किल डेवलपमेंट को डीन एक्सीलेंस अवार्ड से नवाजा गया; केएलएच हैदराबाद के प्रिंसिपल डॉ. अकेल्ला रामाकृष्णा को प्रिंसिपल एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया; डॉ. वी. वारा प्रसाद ने बेस्ट सेंटर कोऑर्डिनेटर अवार्ड प्राप्त किया और डॉ. के. श्रीनिवास को बेस्ट ऑथर और मेंटर अवार्ड मिला

उत्कर्ष बैंक ने मैरीकॉम व सुनील छेत्री को बनाय एंबेसडर

मुंबई। बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के अग्रणी प्रदाता उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने आज दिग्गज मुक्केबाज मैरीकॉम और प्रसिद्ध फुटबॉलर्स सुनील छेत्री को अपना ब्रांड एंबेसडर बनाने की घोषणा की। प्रवीण कुमार चेयरमैन उत्कर्ष एसएफबी ने इस अवसर पर कहा कि मैरीकॉम और सुनील छेत्री का हमारे ब्रांड एंबेसडर के रूप में उत्कर्ष एसएफबी परिवार में स्वागत करना सम्मान और सौभाग्य की बात है। इन दोनों ने वैश्विक मान्यता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियों को पार किया हैए जो सुलभ वित्तीय सेवाएं प्रदान कर के वंचित वर्गों के उत्थान के उत्कर्ष एसएफबी के मिशन को दर्शाता है। हम अपने भागीदारों के रूप में उनके साथ अपने विजन और मिशन को प्राप्त करने के लिए तत्पर हैं। गोविंद सिंह एमडी और सीईओए ने कहा कि मैरीकॉम और सुनील छेत्री लचीलापन, अनुशासन और प्रतिबद्धता के समानार्थक हैं , ऐसे गुण जो उत्कर्ष एसएफबी के वित्तीय समावेशनए सशक्तिकरण और विश्वसनीयता के मूल मूल्यों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। बैंक वित्तीय आत्मविश्वास के साथ सशक्त बनाने के लिए समाज के सभी वर्गों की सेवा कर रहा है। यह गठबंधन दर्शाता है कि हम वित्त के माध्यम से दृढ़ संकल्प और सशक्तिकरण की शक्ति में विश्वास करते हैं। यही वह है जो मैरीकॉम और सुनील छेत्री दोनों अपने धैर्य और सफलता के आधार पर लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं। हम उत्कर्ष एसएफबी में समावेशी वित्तीय समाधानों तक पहुँचने के लिए वंचित और कम सुविधा वाले समुदायों को प्रेरित करने के लिए प्रयासरत हैं।

चीमा ने 70 का कार्ड खेला, खिताब के करीब पहुंचे

विशाखापत्तनम। चंडीगढ़ के गोल्फर अंगद चीमा ने शुक्रवार को यहां एक करोड़ पुरस्कार राशि के वाइजेग ओपन के अपना दबदबा जारी रखते हुए तीसरे दौर मे एक अंडर 70 का कार्ड खेला जिससे वह शीर्ष पर बने हुए है। चीमा बीती रात चार शॉट से बढ़त बनाए थे। उन्होने तीसरे दौर मे शानदार कार्ड की मदद से कुल 13 अंडर 200 का स्कोर बना लिया है। अब वह तीन शॉट की बढ़त बनाए है। पटना के अमन (6668-69) ने दो अंडर 69 के कार्ड से से दूसरे स्थान पर बने हुए है।

भारत को जूनियर विश्व निशानेबाजी में एक स्वर्ण

भाषा। लीमा (पेरू)

मुकेश नेलवल्ली, राजवर्धन पाटिल और हरसिमर सिंह रत्था की भारतीय टीम ने आईएसएसएफ विश्व जूनियर निशानेबाजी चैंपियनशिप में पुरुषों की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल की टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता।भारत का यह इस प्रतियोगिता में 11वां स्वर्ण पदक है। वह कुल 16 पदक लेकर पदक तालिका में शीर्ष पर बना हुआ है। भारत ने एक रजत और चार कांस्य पदक जीते हैं। चीन तीन स्वर्ण और एक रजत पदक लेकर दूसरे स्थान पर है।मुकेश का यह प्रतियोगिता में चौथा स्वर्ण पदक है। उन्होंने 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक भी जीता था।मुकेश और राजवर्धन दोनों ने 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल के व्यक्तिगत फाइनल में भी जगह बनाई लेकिन वहां वे अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए। राजवर्धन फाइनल में चौथे जबकि मुकेश पांचवें स्थान पर रहे।पुरुषों की 50 मीटर राइफल प्रोन स्पर्धा में परीक्षित सिंह बराड़ ने 623.0 का स्कोर बनाकर भारतीय खिलाड़ियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। शिवेंद्र बहादुर सिंह 618.4 के स्कोर के साथ 14वें जबकि वेदांत नितिन वाघमारे 613.2 के स्कोर के साथ 24वें स्थान पर रहे।

लवकुश नगर गौरी वारियर्स, पीएमसी, टाइगर क्लब क्वॉटर फाइनल में

लखनऊ। वाल्मीकि विकास सेवा संस्थान के तत्वावधान में डीपी फाउंडेशन द्वारा आयोजित 23वां आदिकवि महर्षि वाल्मीकि टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में लीग मैचों के अंतिम दिन डालीगंज क्रि केट क्लब और एनसीसी ने अपने-अपने मुकाबले जीते। चौक स्टेडियम पर खेले जा रहे टूर्नामेंट में लीग मैचों के बाद लवकुश नगर गौरी वारियर्स, पीएमसी, टाइगर क्लब,एमएमबी सीतापुर, एनएचबीए एनसीसीए रायल स्पोर्टिंग बहराईच व डालीबाग क्लब ने क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। पहले मैच में डालीगंज क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफद मैच अनिल के अर्धशतक से गोण्डा टाइटंस को 52 रन से हराया। डालीगंज क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 4 विकेट पर 144 रन बनाए। जवाब में गोण्डा टाइटंस निर्धारित ओवर में 7 विकेट पर 92 रन ही बना सका। दूसरे मैच में भी गोण्डा टाइटंस को हार मिली। यह मैच एनसीसी ने आठ विकेट से जीता। जवाब में एनसीसी ने 7 ओवर में 2 विकेट पर 111 रन बनाकर मैच जीत लिया। मैन ऑफद मैच एनसीसी के आयुष को वाल्मीकि विकास संस्थान के अध्यक्ष नरेश वाल्मीकिए आयोजन समिति के संरक्षक कमल वाल्मीकि व चौधरी वीर सिंहए कर्मचारी नेता रूपेश वाल्मीकि पिंटू सहित अध्यक्ष वाल्मीकि अंकित घावरी व महामंत्री आशीष घावरी ने पुरस्कार प्रदान किया।

टॉप्स ने कानपुर सुपरस्टार्स के साथ साझेदारी की

कानपुर। भारत के अग्रणी एफएमसीजी ब्रांडों में से एकए टॉप्स के पीछे भारतीय खाद्य उत्पाद कंपनी जीडी फूड्स एमएफजी आई प्राइवेट लिमिटेडयूपी प्रीमियर लीग में कानपुर सुपरस्टार्स पुरुष और महिला क्रिकेट टीमों के साथ अपनी साझेदारी की घोषणा की है। यह साझेदारी उत्तर प्रदेश में जमीनी स्तर पर खेलों को बढ़ावा देने और उभरती प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए टॉप्स की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। कानपुर सुपरस्टार्स का समर्थन करकेए टॉप्स का उद्देश्य क्षेत्र में खिलाड़ियों की प्रतिस्पर्धी भावना और विकास को बढ़ाना है। उत्तर प्रदेश में एक प्रसिद्ध और प्रिय उपभोक्ता ब्रांड के रूप में टॉप्स युवाओं को हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। जीडीण् फूड्स के वाईस चेयरमैन डॉ नितिन सेठ ने इन संगठनों के प्रति उत्साह व्यक्त करते हुए कहाए श्टॉप्स में हम समुदायों को एकजुट करने और व्यक्तियों को प्रेरित करने के लिए खेल की शक्ति में विश्वास करते हैं। इन टीमों का समर्थन करकेए हम युवा एथलीटों को राष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान बनाने और भारत को गौरव दिलाने तथा अगली पीढ़ी के खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने में मदद करने की उम्मीद करते हैं।यूपी प्रीमियर लीग का समापन 14 सितंबर को एक रोमांचक फाइनल के साथ हुआ जबकि उत्तराखंड प्रीमियर लीग और दिल्ली प्रीमियर लीग का फाइनल क्रमशः 22 और 8 सितंबर को हुआ।

2047 तक शीर्ष पांच ओलंपिक पदक जीतने वाले देशों में पहुंचाने का लक्ष्य : मांडविया

ग्वालियर। खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने शुक्रवार को कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि भारत 2047 में जब आजादी के सौ साल पूरे करेगा तो देश को ओलंपिक पदक जीतने वाले शीर्ष पांच देशों में शामिल करना है। उन्होंने यहां लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षण संस्थान के 10वें दीक्षांत समारोह में भाग लेने के बाद पत्रकारों से कहा कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए विश्व स्तरीय कोचों और ट्रेनिंग का पूल तैयार करना होगा। मांडविया ने कहा , मुझे ग्वालियर आने की खुशी है क्योंकि यह दिवंगत राजमाता विजयाराजे सिंधिया की कर्मभूमि रही है। देश खेलों के क्षेत्र में आगे बढ रहा है। भारत जब ओलंपिक 2036 की मेजबानी करेगा तो इसे खेलों में शीर्ष दस देशों में होना चाहिए। उन्होंने कहा , और जब देश आजादी के सौ साल पूरे होने का 2047 में जश्न मनाएगा तो खेलों में शीर्ष पांच देशों में होना चाहिए। इसके लिए देश को विश्व स्तरीय कोचों का पूल और अभ्यास सुविधाएं चाहिए। इसमें एलएनआईपीए ग्वालियर अहम भूमिका निभा सकता है।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।